श्री वीतरागायनमः ।

पं० बनवारीलाल जैन कृत

भविष्यदत्त चरित्र

प्रकाशक-

रघुवीर सिंह जैन-मैनेजर
श्रीवीर जैन साहित्य
कार्यालय हिसार
मु० हिसार (पंजाब)

—— o ——

श्रीवीर सम्वत २४४५

प्रथमावृत्ति १००० मूल्य १)

PUBLISHED BY P. GHASI RAM TRIPATHI,
MANAGER DESHOPKARAK PRESS, LUCKNOW

भूमिका।

यह भविसदत्त चरित्र प्रथम श्रीमान पंडित धनपा (शुद्ध नाम पं० धनपाल मालूम होता है) जी ने संस्कृत में रचा था तदनुसार पंडित बनवारीलाल जी जैन ने इसको विक्रम सम्वत १६६६ में भाषा में छंद बद्ध बनाया जो सर्व भाइयों के हितार्थ छपवा कर प्रकाशित किया जाता है ॥

इस ग्रंथ से केवल इतनाही पता लगता है कि पंडित बनवारीलाल मौजे माखनपुर (खातोली जिला मुजफ्फर नगर) के रहनेवाले थे ॥ इस शास्त्र में प्रायः प्राकृत शब्दों का प्रयोग किया गया है जिससे प्रतीत होता है कि उस समय प्राकृत भाषा का बहुत प्रचार था ॥

इस ग्रंथ को हमने जैसी प्रतिया मिली उनको देख भाल कर उसी रूप छपवाया है अर्थात प्राकृत शब्दों को नहीं बदला है केवल कहीं कहीं जो चौपई नहीं थी या अशुद्ध थी उनको ठीक करके पूरा कर दिया है यदि कहीं अशुद्धी मालूम हों तो कृपा करके हमें सूचना दें ताकि दूसरे अडीशन में शुद्धी करदी जावे ॥

प्रकाशक—

रघुबीर सिंह जैन—मैनेजर

श्रीवीर जैन साहित्य कार्यालय हिसार

मु० हिसार (पंजाब)

Hissar Dist. (Punjab)

(नोटिस)

न्यामतसिंह जैन ग्रंथमाला के प्रथम भाग की निम्न लिखित पुस्तकें तैय्यार हो चुकी हैं परंतु अभी तक वह ही पुस्तकें छपी हैं जिनके सामने मूल्य लिखा गया है। बाकी पुस्तकें छप रही हैं शीघ्र ही छपकर आनेवाली हैं॥

१ भाग।

१ जिनेन्द्र भजन माला	....	
२ जैनभजन रत्नावली	....	।)
३ जैनभजन पुष्पावली		
४ न्यामत संगीत दर्पण		
५ न्यामत नीति		
६ भविसदत्त तिलकासुन्दरी नाटक		
७ जैनभजन मुक्तावली	...	=)
८ राजलभजन एकादशी	...	-)
९ रागान जैन भजन पचीसी	...	=)
१० कलियुगलीला भजनावली	...	=)
११ कुन्तीनाटक	....	=)
१२ चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक	..	॥=)
१३ अनाथ रुदन	....	-)
१४ जैनकालिज भजनावली		
१५ रामचरित्र भजनमंजरी		
१६ राजल वैराग्यमाला		
१७ ईश्वर स्वरूप दर्पण		
१८ जैन भजनशतक	.	।)
१९ थ्येटरीकल जैनभजन मंजरी	...	=)
२० मैनासुन्दरी नाटक	...	१॥)
" " सजिल्द	...	१॥।)

श्रीजिनेन्द्रायनमः ।

जैन छन्दबद्ध चरित्र (शास्त्र)

आवश्यकीय सूचना

(१) यह बात सर्व बुद्धिमानों कर स्वीकार हो चुकी है कि श्रीजैन शास्त्रों की रक्षा इसी प्रकार हो सकती है कि उनको भली प्रकार संशोधन कराकर और पवित्र यंत्र द्वारा छपवाकर प्रकाशित किया जाय।

(२) जैन सिद्धान्त के शास्त्र कर्णानुयोग चर्णानुयोग द्रव्यानुयोग तथा प्रथमानुयोग के पुराणादि वचनिका रूप महान् ग्रन्थ तो कलकत्ता बम्बई आदि स्थानों से अनेक कार्यालयों व संस्थाओं द्वारा प्रकाशित हो रहे हैं ॥ परन्तु जैन कवितारूप साहित्य की ओर किसी ने अभीतक ध्यान नहीं दिया अतएव जैन मतके छन्दबद्ध शास्त्रों की (अर्थात् जैन मतके महान् पुरुषों व धर्म वीरों के छन्दबद्ध चरित्र जो हमारे लिये आदर्शरूप हैं रक्षा करनी भी परम आवश्यकीय है इसलिये हमने विचार किया है कि जो महान् जैन कवियों के रचे हुए छन्दबद्ध रूप शास्त्र इस समय उपलब्ध हैं उनको संशोधित कराके प्रकाशित किया जावे।

(३) अबतक निम्नलिखित ३४ छन्दबद्ध शास्त्र मिले हैं और उनका अनेक प्रतियों से मिलान करके श्रीमान् पूज्य पिता जी बाबू न्यागतसिंह जैन सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड हिसार द्वारा संशोधन कराया गया है ॥ विचार है कि इनको शीघ्रही प्रकाशित कर दिया जावे ॥

→ शास्त्रों के नाम ←

(१) भविसदत्त चरित्र
(२) वरांग चरित्र
(३) धनकुमार चरित्र (पगपगनिधान)
(४) जीवधर चरित्र
(५) प्रद्युम्न चरित्र
(६) सीताचरित्र
(७) सप्तव्यसन चरित्र
(८) भद्रबाहु चरित्र
(९) श्रीपाल चरित्र
(१०) जिनदत्त चरित्र
(११) भक्तामर चरित्र
(१२) श्रेणिक चरित्र
(१३) चेतन चरित्र
(१४) जम्बुस्वामी चरित्र
(१५) महीपाल चरित्र
(१६) चरित्र सार
(१७) यशोधर चरित्र
(१८) चारुदत्त चरित्र
(१९) सुकुमार चरित्र
(२०) शालभद्र चरित्र
(२१) कुमर पुरन्धर चरित्र
(२२) हरिवाहन चरित्र
(२३) सनतकुमार चरित्र
(२४) नलदमयन्ती चरित्र
(२५) जयसेन चरित्र
(२६) विष्णुकुमार चरित्र
(२७) अंजना सुन्दरी चरित्र
(२८) मनोरमा चरित्र
(२९) हरिवंश पुराण
(३०) रामपुराण (पद्मपुराण छंदबद्ध)
(३१) महावीर पुराण
(३२) शान्त पुराण
(३३) पांडव पुराण
(३४) पार्श्व पुराण

(४) इस कार्य की सुफलता के लिये हिसार में "श्री वीर जैन साहित्य कार्यालय" नियत किया गया है जिसके द्वारा सदैव साहित्य के छन्द बद्ध ग्रन्थ (चरित्र व पुराणादि) प्रकाशित हुआ करेंगे ॥

(५) जो महाशय इन ग्रन्थों के चिरस्थाई ग्राहक बनना चाहे वह १) फीस दाखला का भेज कर अपना नाम दर्ज करा सकते हैं ५०० चिरस्थाई ग्राहक होने पर छपाई का काम प्रारम्भ कर दिया जावेगा ॥

(६) प्रत्येक शास्त्र की एक हजार कापी छपाई जावेगी और एक हजार ही इसके चिरस्थाई ग्राहक बनाए जावेंगे ॥ किन्तु प्रथम जो ५०० ग्राहक बनेंगे उनको प्रत्येक ग्रन्थ पोनी (¾) कीमत पर दिये जावेंगे-शेष ५०० ग्राहकों को पूरी कीमत पर शास्त्र दिये जावेंगे ॥

(७) अतएव सर्व भाइयों से निवेदन है कि वे अपना नाम दर्ज कराने में शीघ्रता करें वरना पीछे इस लाभ से वंचित रहना पड़ेगा ॥

(८) जो महाशय अपना नाम दर्ज कराना चाहें वे अपना पूरा पता और १) फीस दाखला मैनेजर कार्यालय के पास भेजदें जिसकी रसीद और रजिस्टर का नम्बर उनके पास भेज दिया जावेगा ॥

(९) प्रत्येक शास्त्र वी० पी० द्वारा भेजे जावेंगे और खर्च डाक ग्राहकों को देना होगा ।

(१०) यदि ५०० ग्राहक मई सन् १९१९ तक पूरे हो गए तो छपाई का काम जून में प्रारम्भ कर दिया जावेगा और प्रथम शास्त्र (भविसदत्त चरित्र) जूलाई सन् १९१९ में सब भाइयों के पास भेज दिया जावेगा—अन्य शास्त्र भी इसी

प्रकार माहवारी छपकर तैय्यार होने पर सब भाइयों के पास पहुँचते रहेंगे।

(११) प्रत्येक शास्त्र का मूल्य लगभग श्लोक संख्यानुसार एक रुपया से पांच रुपया तक होगा ॥

(१२) सविनय यह भी प्रार्थना है कि ऊपर लिखे शास्त्रों के अतिरिक्त यदि और कोई छन्दबंद्ध चरित्र या पुराण किसी श्री जैन मंदिरजी में हो तो सूचित करें ॥

जैन हितैषी—रघुबीर सिंह जैन—मैनेजर श्री वीर जैन साहित्य कार्यालय हिसार—मु० हिसार जि० हिसार-(पंजाब) HISSAR DISTRICT (PUNJAB.)



ॐ

श्रीवीतरागायनम

भविसदत्त चरित्र।

॥ १ ॥ मंगलाचरण

(दोहा)

पंच परम गुरु पयनमों । परम हियेधर भाव ।
भविसदत्त यश विस्तरों । शारद करो पसाव ॥ १ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई

ऋषभ चरणयुग हिरदय धरूं । उपजै ग्यान तिमिर सब हरूं॥
अजित पूजि चित धरूं हुलास। सेवक के हो बुद्धि विगास २॥
संभव स्वामी भवहु निवार । लहूं सिद्धि हूं पाऊँ पार ॥
अभिनंदन सेऊँ जिन चंद । जासें यह चित होय आनंद३॥
सुमतिनाथ सुमति दातार। भव सागर से पाऊँ पार ॥
पद्मप्रभू स्वामी शिर नमों । अष्ट कर्म की पैड़ी दमों ॥४॥
सुपार्श्वनाथ मुझ होय सहाय । भविजनके हो लागूं पाय ॥
चंद्रप्रभु अष्टमउ देउ । पाप पुन्यको जाना भेउं ॥५॥
पुष्पदंत स्वामी मन धरों । जा परसाद कवित्त उच्चरों ॥
शीतल स्वामी सुख दातार । धरा घ्यान जिन चित्त उदार६॥
श्रेयांस नाथ श्री श्री निवास । मुक्ति पुरीका किया सुवास ॥

१-चरण २-हृदय ३-प्रसाद ४-दो ५-अंधेरा ६-खुशी ७-प्रकाश ८-नाश करना ९ भेद

ु पूज्य पूजे शिर नाय । सुरनर होइ शिवालेय जाय ७॥
ल नाथ निरमल गुणवंत । घातिया करमका कीया अंत ॥
ंतनाथ स्वामी मन धार । अनंतानंत तोड़ो संसार ॥८॥
जिनेश्वर चितमें धरूं । उपजै धर्म पाप सब हरूं ॥
तिनाथ सेऊं मन भणी । शांति होय मुझ करमां तणी९॥
नाथ की करहूं सेव । जिम संसार हूया उच्छेव ॥
हनाथ स्वामी सुविशाल । नाठे कर्म किये क्षय काल१०॥
ल्लिनाथ अतुल बल वीर । दले कर्म हुए साहस धीर ॥
नि सुव्रतधरि संयम भार । मुनिजन लोक उतारे पार ११॥
मिनाथ जब संयम लियो । अभय दान सब जीवा दियो ॥
जिनेश्वर जीव उद्धार । राजमती तज उतरे पार १२॥
र्श्वनाथ घोर तप कियो । उपजा ज्ञान कमठ शिर नयो ॥
र्द्धमान जिन शासन चंद । सेवक जनको करहु आनंद१३॥
ान चौवीस नमों धर भाउ । उपजे पुन्य पाप सब जाउ ॥
ण छयालीस भरे अरिहंत । समोशरण दीपै शशिकंत १४॥
मति आदि जे वसुं गुणसार। आप तिरे पर तारण हार ॥
हूं बंदूं सिद्ध सुजान । तीनोंलोक अग्र परवान १५॥
रह विधि चरित्र धरंत । गुण छतीस अंग शोभंत ॥
ाचारज मुझ होहु सहाय । करो कथा लागूं तुम पाय१६॥
यारह अंग जे चित्त उदार । पढ़ै पढ़ावै लोक मझार ॥
ण पचीस धरे शशि कंत । सेवक को देहु बुद्धि बसंत १७॥

१-देवता २ मोक्ष ३-नाश ४-लगे हुवे ५ चन्द्रमा ६-चमक ७-आठ
तीन लोक के शिखर पर ९-मर्यादा सहित ।

पंच-महव्वय-धारण धीर । ज्ञान दृष्टि हुई मति गंभीर ॥
मूल अठाइस गुणे विहाइ । ते साहू के लागू पाइ ॥१८॥

॥ दोहा ॥

पंच परमेष्ठी पयनमो ॥ वंदों सुगुरु महंत ।
जा प्रसाद बहु बुद्धि लहूं ॥ आंखू काव्य महंत १९ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

असि विचार पुराण मइ सुण्यां । जे धन पालहु पंडित भण्यां ॥
गूंथे अर्थ गूढ अति सार । मिलि पंडित जे करैं विचार२०॥
ता कारण हों चौपई बंध । करो कथा अनुसार प्रबंध ॥
बालबोध समझै सब कोय । बहुता पुन्य परापति होइ २१॥
जंबूद्वीप इस भरत मझार । मगधदेश बसै निजसार ॥
राजगृही नगरी अतिभली । मानों स्वर्गलोक ते पली २२ ॥
श्रेणकराय राज तहां करो । जिन चौवीस सेव मन धरो ॥
धर्मवंत नारी है प्रधान । चेलणा देवी नाम सुजान २३ ॥
एक दिवस नरनाथ नरिंदु । कनक सिंहासन बैठा इंदु ॥
वनपालहु आय जणाईसार । स्वामी सुनहु सकल विचार २४॥
शीस निवाय सो विनती करे । षट ऋतुफल ले आगे धरे ॥
विपुल महागिरि आयो इंद । समोसरण प्रभुवीर जिनंद २५॥
सुनत चित्तमन गहगह भया । बहुत पसाउ वनपालहु दिया ॥
सिंहासन को छाड़ो तुरंत । सातपेंड धाया विगसंत २६ ॥
परोक्ष नम्या तिन वीरजिनंद । जै जैकार किया आनंद ॥
आनंद भेरि दई जैकार । सार जणाई नगर मझार २७॥

१-पांच महाव्रत २-है ३-धारण करना ४-साधु ५ प्राप्त करना ६-कष्ट ।

साजे मैंगल अति मयमंत । माते मदहि कपोल वहंत ॥
साजे गयवर शब्द करेहि । पवनवेग भूं पांव न देहि २८॥

॥ दोहा ॥

दर्शन चिंता सहस फल । लक्खा गमन करेहि ।
कोड़ा कोड़ी अनंतफल । जब जिनवर वंदेहि ॥ २९ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

साजे रथ अरु तुरी तुपार । बाजैं घंटा रुण झुणकार ॥
साजे जाण जंपाण तुरंत । रत्न जोति दीपे झलकंत ३०॥
सब सावंत पयाणा दिया । सिंहद्वार आइ ठाढ़ा भया ॥
पटहस्थी आण्यो गजराय । तिस आरूढे श्रेणकराय ३१॥
चौपासह्य अंतेवर मिला । मानो इन्द्र रोरापति चला ॥
चमर गाहणी ढाले चमर । सही विमाण चढे त्यों अमर ३२
पंचशब्द बाजहीं निशान । चला राय ते सयन समान ॥
चलत चलत सो पहुचे तहां । समो शरण स्वामी है जहां ३३॥
दूरहि देख्या मानस्थंभ । गल्या मान छोड्या सबदंभ ॥
तीनकोट देखे झलकंत । कणयमंय रयंण दीपंत ३४ ॥
देखे गोपुर चार सुजान । चार वापिका एक मिलान ॥
बहुत भांति फूली बनराई । सुरनर षग की लाज कराइ ३५
शब्द दुंदुभि बाजे घणे । बारह कोठे आधिक ते भणे ॥
धर्म्म चक्र सो आगे चले । मिथ्या मोह मान दलमले ३६

१-मनुष्य २-हाथी घोड़े आदि ३-चले ४-राजद्वार ५-मुख्य हाथी ६-रनबास ७-इंद्र का हाथी ८-जैसे ९-कपट १०-सोने का ११-रत्न १२-दरवाजा १३-बावड़ी

पुष्प वृष्टि गंधोदक करे । मानव दुख दुर्गति को हरै ॥
भामंडल देख्या जब राई । कोटि भानु शशि खरो दिपाई ३७
अशोक वृक्ष देखा अतिसार । देखत होय शोक परिहार ॥
तीन छत्र भानु छवि धरैं । कोटि दिवाकर उद्योत करैं ३८॥
चौंसठ चमर इन्द्र करैं खड़े । तीन सिंहासन रत्नहि जड़े ॥
चतुराननं देखे अरहंत । जैजैकार सबै जु भणंत ३९॥
नमस्कार कर हर्षा राय । चरण कमल पर शीश धराय ॥
अष्ट प्रकारी पूजा करी । उत्तम मंगल द्रव्य सु खरी ४०॥
फुनि वंद्यौ गौतम प्रधान । करै वीनती राय सुजान ॥
स्वामी यह संसार असार । किम लाभै जिय भवदधि पार ४१
सोई व्रत उपदेशो आज । कटै कर्म होइ शिवपुर राज ॥
बोल्या गौत्तम सुनहु सुजान । श्रुतपंचमी है सुखकी खान ४२
फागुण आषाढ कातिक जब होई । सत्य संयम आराधो सोई ॥
श्रुतपंचमी करैं जो उपासा । सोलह प्रहर धरहि संन्यासा४३
सतअठ वरत जे होइ सुजाण । करै उद्यापन वित्त प्रमाण ॥
फुनि श्रेणक शिर चरणनि धरै । हाथ जोड़िकै विनती करै ४४॥
किन यह व्रत किया मनधार । किन सुख पाया इस संसार ॥
आदि अंत कथा सब करो । मेरे मनका संशय हरो ॥४५॥
तुम स्वामी जिन शासन चंद । मोपै दया करहु सुमुनिंद ॥
बोल्या गौत्तम सुणहु राइ । मन निश्चय कर बैठो ठांइ ४६

---

१ खुशबूदार जल-२-३-सूरज ४ चार मुख ५ नमस्कार ६-संसाररूपी समुद्र ७-तीन घटेका एक पहर ८-आहार पानीका त्याग ९-पदह १०-उग-मण ११-शक्ति ।

॥ दोहा ॥

श्रेणक सुन चित लाय कै । श्रुत पंचमी सार ॥
मन वच काया जो करै । पावै सुख अपार ॥४७

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

जंबूद्वीप इस भरथ मझार ॥ कुरुजंगल वसै देश विथार
गज़पुर नगरी इंद्र विमाण । नववारह योजन परमाण ४८
वणे धवलहर उतंग अवास । वन उपवन वेढ़ा चौपासे
गंगानीर वहे असराल । कींडां करै वृद्ध अरु बाल ४९
वण्या चौहट्टा नगर मझर । सोनी वणज करैं व्यापार
घर २ कामनि मंगल करैं । गीत नाद दोहा उच्चरैं ॥५०
अतिशयरूप चंदपहु भवणं । हेम हीरा मणि जड़ा सुरयणं
भविजीवन नित्य पूज्य कराहिं। करिपूजा शिवलोकहि जाहिं ५
पवनें छत्तीस वसैं सुखवास । इंद्रपुरी सम जानो निवास ।
आँसि हुआ मेघेश्वर राय । चक्कवै सेनापाति सुजाय ॥५२
आदि दान श्रेयांस जुहुआ । देय दान ते शिवपुर गया ।
शांति कुंथ अरहनाथ सुभये । तीनों पदवी भुगत शिवगये ५३

॥ दोहा ॥

गजपुर नगरी अति वसै । पुन्यवंत सु पियार ॥
मोक्षहु मारग नित चलै । वर्णत होइ पसार ॥ ५४ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

राज करे भूपाल नरेश । धर्मवंत गुण भरो अशेष ॥

१-इक्कीस २-चार कोस का एक योजन ३-सुफेद ४-ऊंचे ५-मकान ६-जंगल ७-बाग ८-घेरा हुवा ९ चारों तरफ से १०-आनंद ११-सर्राफ १२-चंद्रप्रभु स्वामी १३-मंदिर १४-रत्न १५-जाति १६-वहां ।

धणवे सेठ बसे सुविशाल । आदर बहुत करे भूपाल ५५॥
हरिवल वणिक वसे तिह ठाम । पुन्यवंत परगट तिस नाम ॥
लच्छीनाम तिस गृहणी तणी । सुखसो विलसे ऋद्धि आपणी ५६
तिस घर कन्या उपनी आय । कमल श्री तिह नाम धराय ॥
रूपवंत गुण लक्षण सार । दिन २ बढे वैस सुकुमार ५७॥
कला ज्ञान बहु जानत भई । योवनरूप सुंदरी थई ॥
एक दिवस धनवै सुविसाल । देखी कन्या अति सुकमाल ५८॥
रूप देख तिस विव्हल भयो । उठ कुमार घरहू तब गयो ॥
पूर्व सम्बध जो मेटे कोय । विधिना लिखी सो निश्चय होइ ५९
सुनकर बात आनंदे लोग । यह कन्या इस बालक योग ॥
महैला एक दई पैठाय । हरि बलसे यों जंपो जाय ६०॥
तुम घर कन्या रूप सुजान । धणवै धनवे राखो मान ॥
सुनी बात आनंद्या राव । बेगाहि कियो निसानै घाव ६१॥
जोसी एक बुला तब लियो । धरा विवाह लगन तिस ठयो ॥
दीने मोतीहार सुतार । हेम हीरामणि जड़े मझार ६२॥
साहण वाहण बहुतक दिया । बहुत भांति कर आदर किया ॥
धणवे सेठ चलो संवास । कमलश्री सों गयो अवास ६३॥
करहि भोग ते नित नित नये । कर्मयोग ये विधिना दिये ॥
परियण माहिं भई परधान । पुरजन लोग करैं सनमान ६४॥
हाव भाव बहु विभ्रम करै । धणवैका मन नितमति हरै ॥
रहै अवास कचन की खान । विलसै परिमल नागर पान ॥६५॥
विंणादामिनि करै सिंगार । नव २ वस्त्र आभर्ण अपार ॥

१-स्त्री २ आयु ३-व्याकुल ४ दासी ५-महल ६-सुगंधी ७-विजली की चमक जैसा।

धणवे कमला करते भोग । विधना दिया जु एह संजोग ६६।
गये घने दिन क्रीडै करंत । काम भोग नाना विलसंत ॥
सुख में बहु दिन बीते जाई । सांसा कछु नहिं चित्त विहाई६७

॥ दोहा ॥

सुंदरि सुख विलसे घने । यौवन गहर गंभीर ॥
ऋतु वसंत वन फल नहीं । मन शंक पैठ गहीर ॥ ६८ ॥

१५ मात्रा चौपाई ॥

एक दिवस सुंदर सुकमाल । ऐसी चिंत करै मन बाल ॥
हम समान परणाई जे नार । पूत युगल खेलैं सुकुमार ६९
निंद परजाय हम बाला तणा । अथिर सुक्ख संसारह तणां ॥
जै फुरै तो जमन परवान । विन प्रसूत नहि पावै मान७०
गर्भ आश नाहिं हमको ठई । कारण कवन ऊपगा दई ॥
निरफल जनम गयो संसार । लेवै सांस दुपेर मन नार ७१
करत चिंत दुर्बल अति भई । सुंदर उठि चैत्याले गई ॥
वंद्या मुनिवर मनि धरि भाव । स्वामी कहो सकल सतभाव७२
हम दिक्षा कब होइ सुजान । काटहि कर्म जाहिं निर्वान ॥
बोल्या मुनिवर पुत्रि सुण सोय । कूख तिहारी नंदन होय ७३॥
अति गरुवा गुण लक्षण सार । बहुत भोग विलसै संसार ॥
सुणे वचन आनंदित भई । नमस्कार करि घर तब गई७४॥
ऐसी जुगति वरस एक गयो । पूत जनम तासु घर भयो ॥
रूपवंत तसु नाम सुजान । भविसदत्त प्रगटो शशि भानु ७५

१-आनद २ चिन्ता ।

॥ श्लोक ॥

चंदनं शीतलं लोके । चंदनं दर्पि चंद्रमा ।
चदन चंद्रमासोर्मध्ये । पुत्रगात्रं सुशीतलं ॥ ७६ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

इरण्या धणवे दान सो देइ । याचक जनको मान करेइ ॥
दिन २ वाढे कुमर विशाल । मानव द्रुतिया चंदनमाल७७॥
क्षणक हंसे क्षण आंल कराय । क्षणमें थणहर पीवे जाय ॥
क्षणमाहि हार तोडै सो धाइ । क्षणमह अचल लागै पाइ७८॥
उरे ऊपर बहु केल करत । देखत मन मोहै जुतुंत ॥
माता संग अंतेवर जाइ ।रावल मांहि अति केल कराइ७९
पवॅर-विलासणि अंकै भरलेइ । चमर गाहिणी शीस चुवेइ ॥
मधुर बचन बोलैं ते नार । देखि विनोद हसै कवार ८०॥
बाललीला अनि सुंदर करै । नरनारी देखत मन हरे ॥
ऐसी जुगति पोढ़ंतणु लियो । विद्या पठण चटशालहु गयो८१

॥ श्लोक ॥

लाडयेत् पंचवर्पाणि । दशवर्पाणि ताडयेत् ।
प्राप्ते तुपोडशे वर्पे । पुत्रं मित्र वदाचरेत् ॥ ८२ ॥

१५ मात्रा चौपाई ॥

पढकै विद्या भया सुजान । बुधिजनका अति राखै मान ॥
माय बाप की सेव कराय । करइ भगति नित लागै पाय८३

१-चद्रमा की कला २-दगा ३-चूची ४ पेट ५ परिवार की स्त्रिया ६-गोद ७ जवानी ।

॥ दोहा ॥

धणवे सेठ विवाह फुनि । कमलश्री घर वास ।
वाललील भवसदत्त की । प्रथम संधि परकास ॥ ८४ ॥

इति श्री धनवै सेठ विवाह कमल श्री घरवास भवसदत्त बाललीला
बनवारी कृत प्रथम अध्याय समाप्तम् ॥



२ द्वितीय अध्याय

॥ दोहा ॥

चंदप्रभु जिन पयनमों, बनवारी शिरनाय।
जिम कमलश्री परिहरी, आप्यो शारद पसाय ॥ ८५ ॥
पूर्वोपार्जित को मिटै, आया कर्म सुदुष्ट ॥
कमलश्री मन ऊतरी, धनवे चित्त न इष्ट ॥ ८६ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

कमलश्री बैठी आवास । आया धनवै किया निवास ॥
रतिमंदिर देखी जब बाल । किंम्ड़ाधनवैचित्तविशाल८७॥
कांता तणी न बात सुहाय । कर्कश वचन कहै उठजाय ॥
देखत दृष्टि हिया कलमले । मानो घीवबैसंदर जले ॥८८॥
बोले बोल तिन परिहँसभरे । दृष्टि न देखै नयनों खरे ॥
उतरा मन आवास न जाइ । बाहरतें सो सैन कराइ ॥८९॥
तब सुंदर बोलै ततखिणी । स्वामी बात पूछै तुम तणी ॥
कवणदोष आयो हम आज । बोलहुबोलकहुकिहकाज९०॥
पूर्व किया तुम अति सम्बंध । यो राचे जो परमलैगंध ॥
अब मेरी पूछो नहिं बात । कवणदोष हम दीनानाथ ९१॥
तब धनवै बोला सुविशाल । भो सुंदर जाहु पिहुशाल ॥
पूर्व कर्म आया तुम तणा । तुम देख्यांहों दांझों घणा ९२
स्वामी तणी बात जब सुनी । मन विलखी अरु झुरैघनी ॥

१ त्यागना २-किसतरह ३ महल ४ नाराज होना ५ आग ६ कोप ७-फैलनेवाली खुशबू ८ पिता का घर ९ नफ़रत।

किमकर राखों हिया सहार। गरुवाजोवन बालकुमार ९३
बिन प्रीतम अहिलौं संसार। धन जोवनसबपियबिनछार-।
हो स्वामी दासी की ठांउँ। रहों तुम्हारे कामकरांउ ॥९४॥
निठुर वचन बोले इम साहु। क्या सुंदरि तु करै अतिगाहु।
तुमतो पिहर जाहु आपणे। दिवस वलावहू कर्मा तणे९५॥

॥ दोहा ॥

हियरा फाटे तन खिसै। नाहीं कोय सहाय ॥
उठत पडत सो तहां चली। जहां पीहर है माय ॥ ९६ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

विनवइ दासी लाछी जाइ। कमल श्री घर आवै माइ।
बोलै लाछि केतेक जन साथ। साहण वाहण केतक आथ९७
देखि अकेली तन अति खीन। झरै नीर हग मनहु मलीन ॥
मैले वस्त्र नाहिं सिगार। बोल न निकसै दुःख अपार ९८॥
कर कपोल दे बैठी धूम। चरण अगूठे खोदै भूम ॥
चिंता लाछी करै असराल। कवण दोष यह आया वाल९९
हरिबल चिंतै हुआ अकाज। निर्मल कुलको लाई लाज ॥
नैनझरै अरु मुख विललाइ। रैन न सोवै अन्न न खाइ १००
धणवै वात सुनी जब आइ। महिलां एक दई पठाइ ॥
माय लाछी सों यौं करि कहो। कमलश्री का दोष न लहो १०१
पूरब कर्म उदै हुआ आइ। मुझ हिरदे यहु पिण न सुहाइ ॥
दोष नाहिं धींया तुम तणों। सुखसों विलसो ऋद्धि आपणो१०२

१-उमडना २-झूठा निरर्थक ३ धूल ४-जगह ५-विताओ ६-बहुत ७-दासी ८-बेटी।

सुनी बात आनंद मन भयो । कमलश्री संभापण कियो ॥
उठि भेटें परियण सत्र लोग । करहिं सेव कमलश्री योग १०३

॥ दोहा ॥

कमलश्री संतोप करि । रही तात घर जाय ॥
धणवै सुख न वीसरै । पिण २ पूछे माय ॥ १०४ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

वाहुड कथा गई सो तहां । धनवै सेठ रहै है जहां ॥
बालक पढण गयो चटशाल । सो पढ़कर आयो तत्काल १०५
घर नहीं देखी माय आपणी । फूफी बहन पूछों तुम तणी ॥
कहा गई माता हम आज । ऐसो कवण उसेथो काज१०६॥
नैन नीर तिन भर कर रही । वोल न निकसै किमकर कही॥
एक सखी वोली सुकमाल । माता समंदी पीहरशाल १०७॥
उठि कुमार गयो सो तहां । नानशाल है आया जहाँ ॥
नानी लॉछि उंछंगो लियो । करैआरता शीश चूंबियो १०८
फुनि बैठा माता के पास । देखी जननी मनहिं उदास ॥
बोला कुमर जु शीश निवाय । विनती एक सुनो मोमाय१०९
माता मत होय उदास । कर्म योगतै यह संसार ॥
पूर्व कर्म उदय भयो आय । को मेटै जो आप कमाय ११०
धर्म शील कुल लज्जा सार । कीजे दृढ़ संजम आचार ॥
दीसै सकल संसार असार । व्रत संजम जिउं पावै पार१११॥
विपय तृप्ति होई नहिं माय । अंतकाल गति खोटी जाय॥

१-सब २-गई ३-पिता के घर ४-भविसदत्त की नानी का नाम लाछी है ५-गोदी ६-उदास ।

जो धनवै उत्तारा मोह। घरहु निसारे उपन्या छोह११२॥
जननी चित्त न होइ उदास। कुछ अंतर आवै तुम पास॥
मान गाल आवै सतभाइ। शीश निवावै लागै पाइ ११३
जैसा कहूं तैसा न करेय। तव जगमें किम मान धरेय॥
पुत्र वात माता जब सुणी। मन आनंद हुआततपणी११४
विनवै लाछि कंथसों कहै। हिरदे अग्नि मंझि परवहे॥
आसि भण्या मैं नाहै सुजान। कन्या दीजे आप समान ११५
वोल्या हरिवल सुनाहि नार। सेठ बड़ा है नगर मझार॥
ना जानै हम ऐसा करै। विरचै सेठ मोह परिहरै ११६॥
घर परियण छंडी सब लाज। सेठ तणा जु दिखाया आज॥
आगम बात न जानै कोइ। विधना लिखीसो निहचै होइ११७

॥ दोहा ॥

कमलश्री पीहर रहे, छंडी निज भरतार।
मन वचकाया दृढ़ भई, कर्महु उदय विचार॥११८॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

वाहुड़ कथा गई सो तहां। धनवै सेठ रहे है जहां॥
वणिवर धनदत्त वसे समान। तिसकै कन्या रूप सुजान११९
धनवै सेठ मांगि सो लेइ। पाणिग्रहण कर तिनहि देइ॥
करहिं भोग ते सुक्ख अपार। कमलश्रीकी छांडी सार १२०॥
हाव भाव बहु विभ्रम करै। कर सिंगार सेठ मन हरै॥
नवे २ करै भोग विलास। जाई मनकी पूजी आस१२१॥
ऐसी जुगति छमच्छर गयो। एक पुत्र तास घर भयो॥

---

१ वीचमें २-इस तरह ३ कहा ४-पति ५-एक वर्ष।

पंडित, जोईसी लिये बुलाय। वधूदत्त तिस नाम धराय१२२
बाल लील ते बहुविध करै। जननी पिता बहुत सुख धरै॥
दिन २ वाढै वैसं कुमार। पढण कुमार गयो चटशाल१२३
पढि विद्या घर आयो सोइ। पुरजन लोग अचभे होइ॥
नगर मांझ सो क्रीडा करै। अन्याई अजुगत बहु करै १२४॥
देखत लोग भाग सो जाही। नरनारी मन माहि डराहीं॥
ऐसी जुगत बहुत दिन गये। सुख पदवी बालक भोगये १२५
एक दिवस नगरी में फिरे। मन वंछित लीला सो करै॥
सखियां बहु मिल बैठी वृंदै। करे काज मन धरै आनंद१२६
इम कहै सखी एक जो कोइ। साह का पूत निर्लट्टहोइ॥
पिता उपार्जित लच्छी जो खाइ।आप उपार्जि सके नहिं जाइ१२७
जब कुमारने सुणी यह बात। चित चमको फिरियो घर जात॥
खटवापाटि परोले ताम। परिजन पूछे कवण ये काम१२८
पिता लच्छि माता सम होइ। सो लक्ष्मी विलसूं नहिं कोय॥
आप उपार्ज लाऊं लछि जवे। खरचूं खाऊं सही है तवे १२९
एक दिवस तातपै गयो। करै वीनती शीस पग थयो॥
कहै पिता हम आयेसु देहु।जीवन जनम सुफलकर लेहु१३०
भराहि बोहथे सायर तीर। वणज करैं हम साहस धीर॥
सुतकी बात सेठ जब सुणी। मन उदास हूआ ततपिणी१३१
कवणबात तुम भणी कुमार। हमघर सम्पति है विस्तार॥
विलसहु लच्छि करहु शुभचंद। मेरे मनको होय अनंद १३२

१-जोतषी २-उम्र ३ समूह ४-नाकारा ५-आसनपाटी ६-आज्ञा ७ जहाज ८-समुद्र।

बोला कुमर सुणहु इक बात । विनती एक करों हों तात ॥
पुत्त जो विलसै पिता भंडार । शोभ न पावे यह संसार १३३
सोमन ऐसी उपजी आइ । उद्यम करों दिसावर जाइ ॥
देखूं नगर देश विवहार । सज्जन दुर्ज्जन को उपकार १३४

॥ प्राकृत गाथा ॥

दीसंत विवह चरीयं । लहिजे सज्जन दुज्जन विसेसो ।
अपा अपुक लीजै । यह कारण हंठिये विदेशो ॥१३५॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

धणवै बात सुनी सुविशाल । मन आनंद हुआ ततकाल ॥
पटेहा बाजा नगर मझार । वाणिक लोक लिये हंकार १३६
चलो बीर तुम साहस करो । ले बाखर तुम बाहेण भरो ॥
करो मंतै जिन लावो बार । सब मिल करो धर्म विवहार१३७
वणिवर लोग एकठा हुआ । गजपुर मांहि कुलाहल भया ॥
सुणी बात भविसदत्त कुमार । वधूदत्त चाल्या व्यापार १३८
कुमर गयो सो जननी पास ।शीस निवाइ तिन विनवै आस॥
माता हमको आयस देहि ।करहिं वणज हम बाखर लेहिं१३९
वधूदत्त वहु बाहण भरे । वाणिवर लोग चले ते खरे ॥
हम भी जाहिं तिनहु सामान । भरहिं बोहथे एक मिलान १४०
दे अशीस तू समंदै माइ । उद्यम करें दिसावर जाइ ॥
सुणकर माता जंपै वयण । कही बात बच्छ तैं कवण १४१
वहुता दुःख सेठ मुझ दिया । मैं तुम देखि सहारा हिया ॥

१ ढोल २-माछु ३-जहाज ४ सलाह ५-खुशहोकर ६-पुत्र ।

पिय वियोग बहुत मुझ दहै। दूजे सुक्ख सरूपा लहै १४२॥
सोतो दुःख मुझ सहा न जाइ। बोले बोल हिया डहकाइ॥
दुष्ट सोतिहै परिहंस भरी। कुसमने बासै बुधिसों बुरी १४३
सुत अपने खोटी माति देइ। लाहे कारण पूंजी लेइ॥
विघन करै परदेस मझार। तब तुमशरणाकवण कुमार १४४
जो मेरी सिख चित्त सुणेहि। बधू साथ नहिंगमन करेहि॥
भविस मायसैं विनती करे। ऐसी चिंत मनमैंनहि धरै १४५
बहुवालोहो गरवी माइ। धनवै कोख ऊपना आइ॥
माइ समझाई भविस कुमार। कछु शकमतकरो विचार १४६
भविसदत्त गयो सो तहां। वधूदत्त है बैठा जहां॥
आवत देखा दूरसे वीर। गरवा भाई साहमधीर १४७॥
उठि भेटा आदर बहु किया। कर प्रणाम भीतर ले गया॥
जीमण तीमण किये मनभाइ। कुंकुम चंदन अंग लगाइ १४८
दोनों वीर बैठे एकांत। हमभी चलैं तुम्हारे साथ॥
भरहिं वोहथे सायर तीर। वणजकरहिहमआतेविस्तीर १४९
भविस कहे सुणही इकबात। हमभी कछु ले चालहिसाथ॥
आनंदे कुमर दोनों मनमाहीं। ठया मंत्र घर अपने जाहीं १५०
वधूदत्त माता पै गया। सब विरतांत कहतसो भया॥
भविसदत्त चाला सामाणि। भरहिं वोहथे एक मिलाणि १५१
कहै सरूपा सुणहु कुमार। यह धनवैघर पुत्त साँवार॥
सोहू जननी दिया निकाल। विलसै भोग रहै ननसाल १५२
आदर बहुत राय इस करै। पुव्वविलासणि के मन हरै॥

१-धनवै सेठ की दूसरी स्त्री २-खोटा विचार ३ ओटा ४-बड़ा ५-केसर ६-मुख्य।

जो घर में यहु आवे धूत । तो हम मान न पावैं पूत १५३
जो मेरि कोख उपन्या होई । सायर मांझ इसही डवांई ॥
ऐसी बुद्धि करै ततपिणी ।जिन न मिलै माताआपणी१५४
सरूपातणां वचन जव सुणा । वधूदत्त ने ऐसा भणा ॥
ऐसो करोंजु देहि गलजाइ । खोज न पावै इसकी माइ१५५
सुतका वचन सरूपा सुणा । मनआनंद हुआ अति घणा ॥
जे मेरि कोख उपन्या सार । करहिं मंत जिनेलावै बार १५६
देइ सीख आनंदी माइ । दही दूब आरता कराइ ॥
समधा कुमर गयो सो कहां ।विडहर वाहन अच्छै जहां१५७

॥ दोहा ॥

दुष्ट सुभाव न वीसरै, जेह मन खोटी बुद्धि ।
निष्ठुर दया न ऊपजै, जै आपै नव निद्धि ॥१५८॥
सज्जन के मन गुण बसै, दुर्ज्जन मनहिं कुवात ।
भला भलाई न छंडई, बुरा कुजात कुजात ॥१५९॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

भविसदत्त गया सो तहां । कमलश्री है पीहर जहां ॥
बहुतभांति सम्बोधी माइ । वाखरुं काढा लोग बुलाइ१६०
कमलश्री बोली ततपिणी । सुनहु कुमार बात हम तणी ॥
इसकी सेवा कीजो घणी । यहु भाई लहूडा तुम तणी १६१
भाई जगमें बहुत पियार । विन भाई अहिला संसार ॥
विहुंडा पुत्र कलत्र सब होइ । भाई पावना दुर्लभ सोइ १६२॥
तू गरवा हूजहि सुजान । इसका बहुत जु राखै मान ॥

१-नहीं २-समुद्र ३ थे ४ धन माल आदि ५-छोटा ६-विछडना ।

जो कछु जुक्त अजुक्त करेइ। तो तू कोप न मनमें धरेइ १६३
धनवे घरमें पुत्त तुम दोइ। वह बाला तू गरवा होइ॥
बहुत सीख दीनी जब माय। सो कीजोकुल लाज रहाय१६४
पर भूमि जाइ साहस तुमकरो। वणजवा दाम धर्म उर धरो॥
चंदपहुप पूजा नित करो। पैंतीसो अक्षर मनधरो १६५॥
तीनकाल सामायक सार। जिनं वीसरियहु बालकुमार॥
तरुणी नार आवे जो पास। उनहिनभूलकरहिविश्वास १६६
दान अदत्ता न लेहि कुमार। यह सीख सुणहु अतिसार॥
पाणीग्रहण करे जो नार। वह सूची जाणहिं संसार १६७
जे पर मोहन है अति घणी। हम समान जानहि कामनी॥
एक सीख सुण मेरी मीत। काछ भाप दिढ़हों जो पीत१६८
एक संदेस मूल सुण वच्छ। होई सुदृढ़ भापू अरु कच्छ॥
पुरुप हिये यह सीख है सार। कहिहोंकछु लोक व्यवहार१६९
पथ न सांझ चलो परदेश। कोमल वचन न भूलहि वेश॥
वहुवादीश्वर मंत्र जु करो। गुरुकी शीख सदा मनधरो१७०
सांझ न जाहि पराये गेह। लच्छी वेढ़ कुपात्र न देह॥
सुंदर सरिसु न कीजे मंतु। सिंह सांप नवि छेडो जतु१७१
ओगुण देख न कहिजे काहु। कीजे मता निरखि चौपासु॥
मूरख सरिस न वहस कराइ। दिवस न पूत वेस घर जाइ१७२
अंथवन रवि न कीजे निंद। नवि विश्वासहि मत्त गयंद॥
राड़ पराई नवि देखिये। नहीं अदोपी को दोखिये१७३

१-नहीं २-दिन छुपे ३ मतवाला हाथी।

॥ १० मात्रा तुक ॥

न खेलिये जूवा । ना टपिये कूवा ।
ना चालिये सांझ । ना रम्मिये बांझ ॥ १७४ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

कोटवाल मसखरा खवास । इनका पूत न करि विश्वास ॥
बांदीगह रणवास भंडार । रापरिहर तरही संसार १७५
कीजे वणिज ऊपजे दाम । करि उपाधि नहिं लीजे काम॥
नदी न्हाण अवघटि हो कीज । दान स्वहाथ सुपात्रहिं दीज १७६
जो धन होइ न खेलिये जुवा । जो बल होय ना टपिये कूवा ॥
जो धर होय तो रमिये बांझ । जेसंग होय तो चलिये सांझ १७७

॥ दोहा ॥

जननि सीख दई घणी । सुणहु पियारे पुत्त ।
तुम बिन घड़ी न जीवती । अब किम रहस्यों सुत्त ॥१७८
कमलश्री दूहाग पुनी । जिम हुवा पीहर वास ।
भविसदत्त वणिजै चला । दुतिये संधि बिगास ॥१८९॥

इति श्री कमलश्री दुहाग पीहरवास भविसदत्त वणज गमन वर्णन धनवारीकृत द्वीतिय अधिकार समाप्तम् ॥ २ ॥



३ तृतीय अधिकार

॥ दोहा ॥

चंदपहुप जिन पयनमों । बनवारी शिरनाय ।
देशाटन, भविसहु किया । आखों शारद पसाय ॥१८१॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

समंद्या कुमर माय समझाय । कुंकुम चंदन तिलक लगाय ॥
दही दूब शिरधरी जु माय । बहुत भांति आरता कराय१८२
चला भविस जु पहुचा तहां । वधूदत्त बैठा था जहां ॥
मिलि बैठे वाणिवर सब लोग । दोनूं भाई हुआ संयोग १८३
बाखर कादा वाणिक बुलाइ । करहल बाहन सांड भराइ ॥
गजपुर मांहि कुलाहल हुआ । वाणिवर लोग पयाणा दिया१८४
उतरा संग कोश दुइ चार । धनवै सेठ पहूंता लार ॥
दोनो भेटे कुमर विशाल । भेटत नैन बहे असरांल १८५
दोनों पूत उठि पगहिं लाग । पिछला दुःख गया सब भाग॥
देइ सीख पुत्तहि जु जोग ।कीजो काज हंसैं नाहिं लोग१८६
कहिपिता सिख सुण दोउ तास। खिण न विलंबो जुवारी पास॥
शील अर्थ कुल घालैंहि हार । अरु परिहैर दासी परनार १८७
दूजी नार गंवार विश्वास । चोरदेश वैरी का वास ॥
विषहैर सरिसैं खेल जो, करे । सुनहु पूत विन आई मेरे १८८

१-सम्बोधा २-आंख ३-पहनना ४ त्यागना ५ साप ६-क्रोधी ।

॥ श्लोक ॥

सूपकारी कविर्वैद्यः । मर्मन्सः शास्त्र पाणिनः ।
धनिनो निर्धनो मूर्खः । आराधेन्न विरोधयेत् ॥१८९॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

वणिक लोग सब लिये बुलाय । दोनों कुमर बांह रोपाय ।
इनकी तुम अति कीजो कान । ये मैं दीन्हे तुम परधान१९०
बहुती सीख सेठ जब दई । गांठ बांध सब बाणिक लई ।
समुद मझार मनहु समझाइ । करहेल बाहण चले लदाइ१९१
देश छोड़ इक देशहि जाहिं । वन पर्वत बहुतेहि लंघाहिं ।
चलत चलत उतरे बरवीर । उतरे जाय महोदध तीर१९२।
बैठे कुमर सो वनहि मझार । मरजिये लोग लिये हंकार ।
आवो वीर तुम साहस करो । बोहिथे लावो वाखर भरो१९३।
काढ दर्व दीना तिन जोग । मरजिये आय पहूंते लोग ।
साहण वाहण लागे करण । वहुते लागे वाखर भरण१९४।
रत्नदीप· समहीको हुए । बातवान उन ठाढे किये ॥
जलदेव्या की पूजा करी । कुंकुम केशर चंदन खरी१९५॥
पेले प्रोहण समुद मझार । पंचशब्द वाजे झणकार ॥
भेरी तूर बहु शंख बजाय । कोतूहल सब वणिक कराय१९६
रतनदीप जाणे की आस । मन आनंद करै सुविलास ॥
चढ़े परोहण समुद गहीर । देख दृष्ट थरहरै शरीर १९७॥
शसिके उदय नीर अति चढै । ऊंची लहर समुद्रहि बढै ॥
मच्छ कच्छ उगलैं बहु जाह । देखत बनिवर खरे झुराय१९८॥

१-समुद्र २ इकट्ठे होकर ३-मल्लाह ४ जहाज ।

मनमैं झुरें करें अति चिंत । जेजेकार सबै जु भणंत ॥
अबकी बेर उतरें जु पार । बहुर न करें समुद व्यापार१९९॥
ऐसी कह कह लहें संजोग । कब मिलिहैं गजपुर के लोग ॥
अति भयानक सायर तीर । कंपै हिया थरहरे शरीर २००॥
मन विस्माद करें अति घणों । पुत्र कलत्र सोर आपणो ॥
पंथीजन नहिं दीसे कोय । देखत पंथ भयानक होय २०१
वन उद्यान दीसे अति घणों । सिंह व्याघ्र अतिही भय घणों॥
मयणागिर देखो विस्तीर । रहे परोहण गहर गंभीर २०२॥
लंगरलोह छोड़ तहां दिये । बीच परोहण ठाढे भये ॥
उतरे वणिवर बैठे तहां । फूल सुगंध वास है जहां२०३॥
ठौर ठौरहि रसोई होय । वर पकवान करैं सब कोय ॥
केई कुंभ भर आनै नीर । केई सींधे निरखै वीर २०४॥
केई तेल हस्त भर लेय । केई मर्दन भूर करेय ॥
ऊन्हा जलकर न्हाये बाल । मन आनंद हुआ तिस काल२०५
हुई रसोई उत्तम सार । सब मिल बैठे कर जिउनार ॥
करि जीमण बैठे वणिवाल । आवै सुगंधवास असराल२०६॥
फूला चंपा मरुवा सार । बळी श्री जूही सु अपार ॥
केवड़ा केतकी फूली घणी । रायवेल चंबेली भणी २०७ ॥
कौतग निमत चलेवणिराय । तोडे फूल वास महकाय ॥
देखे फूल वास अतिसार । खिणक विलव्या भविस कुमार२०८
ईथंतरज्जु कथतर भया । बधूदत्त ने ऐसा किया ॥
झति परोहण चढा कुमार । सगले वणिक लिये हंकार२०९॥

---

१ पर्वतका नाम है २ घडा ३-भोजन का सामान ४ गरम ५ इसके बाद ।

लंगरलोह खैंच तिन लिये । बादवान उठ ठढे भये ॥
डेलेप्रोहण सायर माहिं । भविसदत्त तहं आया नाहिं २१०
बोले वणिवर वधुदत्त सुणो । यह तू काम अजूगत करो ॥
तब पापी उठ बोला सोय । मंत्र न जानै तुममें कोय २११ ॥
वणिवर हाहाकार करेह । करमींडै अरु शीश धुणेह ॥
इथंतर भविसदत्त कुमार । तोडै फूल जु वणह मंझार २१२
पुष्प सुगंध गोद भरलेइ । मनमें आनंद बहुत करेइ ॥
झट कुमार उठ ठाढा हुआ । चौपासहु वन देखत भया २१३
सूना पावै सु देख कुमार । कोइ न दीसै वणह मझार ॥
स्यांइ स्यांइ तहं वण सब करै । देयबोल सो मनमें डरै २१४
मन अचरज हूवा तिस घणा । डाले पुष्प चला ततखिणा ॥
किसहि पवेस शबद नहिं सुणै । पंच परमगुरु मनमें गुणै२१५
चलत चलत सो पहुंचा वीर । छोडे प्रोहण सायर तीर ॥
दूरहूं धुजा देखी फरकंत । हाहाकार किया विसमंत २१६
वहे परोहण दूर जब गये । कुमर दृष्टि अगोचर थये ॥
तब मुर्च्छावंत हुय वरवीर । थकाबोल थरहरा शरीर २१७ ॥
मूंदा हिया न आवै सांस । पड़ा भूमि हूवा जो निरास ॥
गंई शुद्ध विहलंघलु भया । वधूदत्त छोडी तिस गया २१८

॥ दोहा ॥

क्रुमर मही ऊपर पड़ा । नाहीं कोइ सहाय ॥
पूर्व उपार्जा को मिटै । विन भुगते क्यौं जाय २१९ ॥

---

१ हाथ २ मनुष्य ।

१५ मात्रा चौपई ॥

उठा भविस जो बैठा हुआ । वहु पछतावा मनमें किया ॥
हा जननी मुझ कहा समझाय ।वणिज दिसावर पूत न जाय२२०
सीख मायकी कान न सुनी । तो मैं दुख पाया इस वनी ॥
वधूदत्त ने कैसा किया । वनमें छोडि अकेला गया २२१
हा पछतावा जननी करै । सुनै बात वह निश्चय मरै ॥
गजपुर लोग अचंभा होय । भूल्या भविस कहैं सबकोय२२२
धनवै सेठ मनमें पछताय । पुत्र वियोग सहा नहिं जाय ॥
वधूदत्त ने कीया अकाज । निर्मल कुलको लाई लाज २२३
नानी लाछी धरै है पियार । क्यों जीवेगी हुइ निरधार ॥
ऐसा कहकर मन पछताय । तब हिरदा राखे समझाय २२४
रेरे जीव क्यों-कायर होय । विधना लिखा सो निश्चय होय ॥
ऋषभनाथ आदि जिन ईश । तीनोंलोक निवावें शीस२२५
कर्म अंतरा उदै जु कराय । छहमास विनाहार फिराय ॥
भर्थचक्रवै हुआ बलवंड । निज भुजा जीते छहपंड २२६ ॥
मल्लजुद्ध करि मद तिस हरा । बाहूबली उठाय तिस धरा ॥
मेघेश्वर सेनापति जाण । ताका बल को सकै वखाण २२७
तांते आय दुःख तिस दियो । पुव्व विरोध संभाल जु लियो ॥
सबमें कर्म बड़ा परधान । दोष न किसही देहि वखान २२८
जै एकंदी[1] पद तैं लहा । कवण कुटंब साथ तैं गहा ॥
वपु[2] छोडकै परभव जाय । तेरे साथ न कोई थाय २२९ ॥
दीसै सकल संसार असार । धन जोबन अरु कुल साधार ॥

---

१ एक इन्द्री जीव २-शरीर।

जैसा ओसबूंद सामान । ऐसा जीवहु जीवण जान २३०
परभव जाय अकेला होय । मात पिता नहिं साथी कोय ॥
घणीवार नर पदतैं लहो । घणीवार यहु दुख तैं सहो २३१

॥ दोहा ॥

भविसदत्त बधूदत्त फुनि । जिम चाले परदेश ॥
वन उद्यानहु छांडिया । तृतिये संधि विशेष ॥ २३२

इतिश्री भविसदत्त बधूदत्त परदेश गमन वर्णन भविसदत्त वन छोडा
वनवारी कृत त्रितीये अधिकार संपूर्णम् ॥ ३ ॥



४ चतुर्थ अधिकार

॥ दोहा ॥

चंदपहुप जिन पयनमों, बनवारी शिरनाय ।
भविसदत्त जिम छांडिया, आखों शारद पसाय॥२३३॥

१५ मात्रा चौपाई ॥

समझा चित्त उठि ठाढ़ो भयो। वनमें कुमर पयाणो दियो॥
देखा वन अति गहर गंभीर। तिसका कोई न पावै तीर२३४
भरमें चित्त भयावण होय। तहां मानुष दीसै नहिं कोय॥
गजहस्ती के जूह फिरंत। माते मद जु कपोलबहंत २३५
गाजहि सिंह खरे असराल। मानों गरजै भादों काल॥
शारदूल बहु क्रीड़ा करें। क्रूरदृष्टि ते बनमें धरें २३६॥
थंभ्या सूर्य जब रजनी भई। दृष्टि न पसरै चिंता थई॥
अंजनागिरि जैसा अंधियार। ऐसा देखा वनहिमझार २३७॥
हाथोंहाथ न दीसे कोय। वनमें कुमर भयाणक होय॥
कुहकें मोर पपीहा घणें। गैंडे शूकर गाजें वणें २३८॥
मिरगी मिरग खरे जु फिराहिं। बोलै जंबू खरेहिं डराहिं॥
चितवै कुमर डरै मनमाहीं। मरणा आया इसवनमाहीं२३९
शिला फासु एक देखी वीर। तिसपर बैठा मनकर धीर॥
ठया समायक मनमें भाय। सांसा मनका दूर कराय २४०॥
ध्यानधारके गवांई रात। पुन्यजोग हुवा परभात॥

१-गीदड़ २ सुन्दर।

उठा कुमर सो साहस करै। वनमें कौतुक देखत फिरै २४१
जूंनीवाट इक देखी वीर। कंपा हिया थरहरा शरीर॥
इस जूनै पंथ कवन है गया। मनुष इहां दीसै नहिं दया २४२
मन सहार धाया बरवीर। आगे देखी गुफा गहीर॥
गुफा देखि जो कंपा कुमार। पाछै अहुंट कियाहै विचार २४३
कै यह गुफा दानों की होय। कै यहं वासै राक्षस कोय॥
गुफा माहिं पैठा निरधार। कछु सोच नहिं करै विचार २४४
मरणा आया वनही मझार। गुफा माहिं चालो निरधार॥
जगमें सदा न जीवै कोय। होणा होइ सो अवही होय २४५
इस संजोग जो मरणा होय। जीव न राखै सरणा कोय॥
काल लब्धि विन मरै नहिं कोय। विनखूटी नहिंमारैकोय २४६
पंचपरम गुरु हिरदै सार। गुफा मांझि पैठा पगधार॥
पैठ गुफा में संक नहिंकरी। अतिअंधियारिभयावणिखरी २४७
निकल गुफा देखै वरवीर। नगर एक बसै विस्तीर॥
देखत नैन सुहावण होइ। मानो स्वर्गलोक है कोइ २४८

॥ वस्तु छंद ॥

पुन्य बड़ा संसार। पुन्यहि सेवहिं सुर असुर॥
पुन्यहि होय मुरार। पुन्यहि सुरपद पाइये २४९
पुन्यहि चक्कवै पद लहै। पुन्यहि पावै सिद्ध॥
पुन्य पुरुष जहां संचरै। तहां तहां पावै रिद्धि २५०

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

देखै नगर कुमर जु विशाल। मन आनंद हुआ तिहं काल॥

१-पगदंडी २-हटकर ३-दीप ४-चक्री।

ऊंचा कोट धवल आवास । बन उपबन वेढो चौपास २५१
दीसें मंदिर मोती जड़े । मानों अमर विमाणहि खड़े ॥
चित्रशाल दीसे बहु भाय । हेम कलश ते खरे दिपाय २५२
जाल झरोखे देखे घणे । मोती वंदर वालहि वणे ॥
मठ विहार दीसै चौपास । भरे सरोवर कमल विगास २५३
ठौर ठौर वायच्छ विदेहि । उज्जल नीर झलोर लेहि ॥
गोपुर चार अनूपम खरे । चित्र विचित्र अनूपम खरे २५४
गो महिषी होदें पड़खोंहिं । कोइन फेरै सालि पराहिं ॥
देखी शालि खरी सुवास । नाहीं कोई भुगते तास २५५ ॥
देखि कुमर जु, अचंभा हुआ । नगर माहिं पयाणा दिया ॥
सूना नगर देख वर वीर । देखत कंपा साहस धीर २५६ ॥
हाट बजाजी पसरी खरी । पाट पटंबर चीरहु भरी ॥
हाट जौहरी देखी जाय । मोती माणक खरे दिपाय २५७
एक ज्योति सूरज की सार । दूजे रतन जड़े सो हार ॥
देख हाट भरम्या जु कुमार । जगमग जोति गहरहै अपार२५८
हाट सराफी पसरी घणी । सुवँन दर्सावी खरी अति वणी ॥
पैडि तुलाइ खडी सिंगार । कहां गये सो विलसण हार २५९॥
ठौर ठौर पसरी अति हाट । देखा मनुप न किसही वाट ॥
अचरज देखि हुआ मनमाहिं। सूना नगर पडा बन माहिं२६०॥
सुपना रयण जो देखे कोय । ऐसा परगट देखा सोय ॥
ठौर ठौर सो भरे भंडार । कहां गये यो विलसण हार२६१॥

१-काग २ दर्वाजा ३-भैंस ४ फिरे ५ सोर्दै ६-धान ७-सोना ८-आभूपन ९-झारी ।

भमैं कुमार ढूंढै चौपास । सूना नगर हुआ जु उदास ॥
पाके आंब विजौरी घणे । दाख सदाफल केले वणे २६२॥
फलें रूंख भू लागे आय । कोइ न दीसे विलसै खाय ॥
क्षुधावंत नगर में फिरै । दान अदत्ता हाथ नहिं धरै२६३॥
पौलि पौलि में धुजा फरकंत । रंग विरंगी वाय वहंत ॥
भ्रमतो भ्रमतो नगर विशाल । चंदपहुप देख्या चैत्याल २६४॥
त्रिपर दक्षिणा देहु कुमार । जैजैकार किया है जुहार ॥
मंजंन पैस बांय में किया । चैत्यालेहु पयाणा दिया २६५॥
नमस्कार कीना भोवाल । मन आनंद हुआ तिहंकाल ॥
पूजा करी जु मनके भाय । संसा कछु ना चित्त रहाय२६६॥
करि पूजा बैठा वरवीर । शयन करै सो साहस धीर ॥
नींद आइ विहलंघण गया । अवरें एक कथंतर भया २६७॥

॥ दोहा ॥

भविसदत्त बनखंड फिरि । पैसा तिलैय मझार ।
चंदपहुप जिन नमसिया । चतुर्थ संधि विचार ॥२६८॥

इतिश्री भविसदत्त वन भ्रमण तिलकपुर पाटन गमन चदपहुप
वदन वर्णनो चतुर्थ अधिकार संपूर्णम ॥४॥

१-स्नान करना २-वावड़ी ३-तिलकपुर पाटन ।



५ पञ्चम अधिकार

॥ दोहा ॥

चंदपहुप जिनपय नमो । बनवारी शिरनाय ।
भविसदत्त नगरे रहा । आखूं शार्द पसाय ॥२६९॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

पुव्व विदेह जसोधर स्वाम । तिसको उपजा केवल ज्ञान ॥
अच्युत स्वर्ग का इंद्र सु गयो । नमस्कार कर ठाढा भयो२७०॥
पूछे अच्युत स्वर्ग सुरइंद । विनती एक करोंहूं मुनिंद ॥
आसी।मित्र मुझ जीव पराण ।वणिवर कुल धनमित्त सुजाण२७१
किस गति गयो कहो सतभाय। मेरे मनका सांसा जाय ॥
बोले स्वामि सुणहु सुरईस । जंबूद्वीप भरंत सुदीस २७२॥
हथनापुर नगरी सु विशाल । राज करै है नरिंद भूपाल ॥
धनवे सेठ वसे सु पियार । धर्म पुन्य की जाणे सार२७३॥
कमलश्री तिस गेहणि तणी । पुन्यवंत ।निवसै भामिणी ॥
तिसकी कूख भया पर वाण ।भविसदत्त तुझ मित्त सुजाण२७४
पुव्वे करम उदै भयो आय । कमलश्री तिस चित न सुहाय॥
नानशाल पीहर घर रहै ।मन विसमाद वहु दुख सहै२७५॥
वणिवर धनमित्त वसै समान। ताकी कन्या रूप सुजान ॥
धनवै सेठ मांगि सो लई ।पाणि गहणकर तिनको दई२७६॥
तिसकी कोख उपन्या आय । वधूदत्त तिस नाम धराय ॥

१-भरतक्षेत्र २ स्त्री ।

दोनों वीर चले व्यापार । भरे परोहण समुद मझार२७७॥
चलत चलत मयणागिर गये । रहे परोहण उतरत भये ॥
वधूदत्त भाई मतिमंद । हांके पोहण चढो तुरंत ॥२७८॥
भविसदत्त तहिं आंया नाहिं । गये परोहण रहो वन माहिं ॥
फिरत फिरत सो वनहिं मझार । गुफा एक देखी अंधियार २७९
पैठ गुफा बाहिर सो गया । तिलक पुर पट्टण सो लहा ॥
सूना देख नगर वरवीर । कंपा हिया थरहरे शरीर २८०
चंदपहुप भवने फुनि गया । करि पूजा वो विहारी रहा ॥
मुनिवर वचन सुणे सुर इंद । मन अहिलास हुआ आनंद२८१
फुनि सुरवै पूछा मुनिराय । विनती एक करों शिरनाय ॥
अब किम होसी कहो सुजान । मेरे मनका संसा भान२८२
बोल्या स्वामि सुणहु सुरराय । आखों बात सुनों मनलाय ॥
कन्या इक उस नगर मझार । पंचम घरिहै राइ दुवार२८३ ॥
बहु सम्बन्धी भविस कुमार । विलसै सुक्ख लहै अतिसार ॥
सुनी बात अच्युत सुरराय । नमस्कार कर चालो धाय२८४
क्षणमें बिमान पहूंच्या तहां । तिलकपुर पाटण है जहां ॥
चंदपहुप चैत्याले जाय । देखो वीर तहां सैन कराय२८५ ॥
नींद जगाउं पाप मुझ होय । पंकति लिखी गया सुरलोय ॥
पूर्व दिशा चैत्याले वसै । पंचमघर सो कन्या अछे२८६ ॥
बहु सम्बन्धी भविस कुमार । विलसहि नगर सु लच्छि अपार ॥
लिखी पंकति देव उठि गया । माणभद्र सों जंपत भया२८७
यहतो मित्त मुझ जीव पिराण । तूइस कीजे कुटंब मिलाण ॥

१ अन्न जल रहित ।

तेरि बांह सौंप्या बनराई । मिलै कुटंब जु अपने जाई २८८
जागि कुमर उठि बैठा हुआ । मन चितै क्या कीजे दया ॥
देखी पंकति लिखी तुरंत । मन विसमाद किया विगसंत२८९

॥ दोहा ॥

विपत बराबर सुख नहीं । जो थोरे दिन होय ॥
भला बुरा बैरी हितू । चीन्ह परै सब कोय ॥ २९० ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

इस पयेसं माणस नहिं कोय । पंकति लिखी कवन ये होय ॥
मुझ विनास करण एहु तकै । चैत्याले में मार न सकै २९१
यह उपाय कीना सतभाय । निकसैं मनुष हणो इस आय ॥
तब साहस कीया वर वीर । होणा हो सो होइ शरीर २९२
बिन आई मरणा नाहिं होय । विन अपराध न मारै कोय ॥
मनधीरा करि देख्यो सोय । बिन उद्यम पावै नहिं कोय२९३

॥ श्लोक ॥

उद्यमं साहसं धैर्य । बलं बुद्धिः पराक्रमम् ॥
विद्यते षड्मी यस्य । तस्य देवोपि शक्यते ॥ २९४ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

महामंत्र पढ ठाढा हुआ । नगर माहिं पयाणा दिया ॥
पूर्वद्रिशा पंचम घर जहां । चित्रशाल बहु देखी तहां २९५
फटिकशिला लागी शासि भायै । दर्पण जिम सब भूमि दिपाय
सिंहद्वार पैसा वर वीर । देखी सुंदर रूप गहीर ॥२९६॥
वणय सिंहासन बैठी नार । दर्पण देखि करै सिंगार ॥

१-पहिचाना जाते हैं २ स्थान ३ सूरज ।

कुंकुम केशर मांग भरेय । नैन सलाई कज्जल देय॥२९७॥
रतन जडित सो पहिरे हार । पायें नेवर रुण झुणकार ॥
कस्तूरी परमल लावै अंग । हेम जडित शोभै जु पिलंग२९८
हंसतूल की सेज्या दलै । देखै नर सुरपति मन टलै ॥
जब सुंदरि देख्या जु कुमार । लज्जावंत भई वरनार २९९॥
मुख नीचा करि बैठी घूम । चरण अंगूठे खोदै भूम ॥
भविसदत्त बोला सुकुमार ।भो सुंदरि को अच्छहि नार३००॥
किह कारण जु अकेली रहै । विन सज्जन ये दुःख क्यों सहै ॥
किह कारण नहिं दीसै राज ।सूना नगर हुआ किह काज३०१
भरी लाज नहिं बोली नार । फुनि पूछे भविसदत्त कुमार ॥
यह चाल तुम कुलकी होय । जे घर आवै सज्जन कोय ३०२॥
भावादर तिनका नहिं करो । उच्च मान तुम उनका हरो ॥
सुणे वचन मन कड़ैखी नार । हमरे कुलकी करी विचार३०३॥

॥ दोहा ॥

जहं संपइ तहं पाहुणो । जहं सावण तहं मेह ।
जहं सासू तहं सासरो । जहं जोवन तहं नेह ॥३०४॥
वस्त्र विभौ विद्या वचन । वपु सुंदर आकार ।
माल जहां तहां मानिये । जहं होइ पंच वकार॥३०५॥
आव नहीं आदर नहीं । अरु नैनों नहीं नेह ।
मालव जहां न जाइये । कंचन बरसे मेह॥३०६॥

१-क्या २-बोली ३-धन व आदर ४-शरीर ५ वस्त्र-विभव-विद्या-वचन वपु यह पांच वकार हैं ।

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

सुंदरि उठ कीना सनमान । कणय सिंहासन दीना आन ॥
हिम भिंगार सलिल भर लिया।लेदा तोन कुमर को दिया३०७॥
षटरस भोजन सुंदरि करे । थाल कचौले आगे धरै ॥
भविसदत्त जीमें सुकुमार ।मन आनंद हुआ सु अपार३०८॥
भर परिमल कस्तूरि कंचोल । हेम थाल आणे तंबोल ॥
वस्त्राभरण जु उत्तम सार । आगे आन धरे जु अपार ३०९॥
लावै परिमल अंग शरीर । मुख तंबोल करे वखीर ॥
हेम रत्नमई पिलंग दिपाय । हंसतुल पर सोया जाय ३१०॥

॥ दोहा ॥

नवसंत साजे कामिनी । रोमां चिहिय न समाय ॥
हाव भाव बिभ्रम भरी । बैठी मूंढे जाय ॥ ३११ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

बैठी सुंदर जंपैं सार । मधुर बचन आलापै नार ॥
जिम वियोग मुझ उपनाआय । आख्योंकुमरसुनोचितलाय३१२
ओसि जसोहण राजा होय । तिलक पुरी को विलसै सोय ॥
मुझ पितु सेठ भवदत्त विशाल । आदर बहुत करे भोपाल ३१३
मयणरेह माता मुझ तणी । विलसै सुक्ख काम रति घणी ॥
तिसउर उपनी बहन हम दोय । जेठी नागश्री सो होय ३१४
सो परणाई राज कुमार । भोग भोगवै सुक्ख अपार ॥
भवीसाण मुझ नाम सुजान । दुखभाजन मैं हुइ परवान३१५
असनवेग दानों सुर राय । पूरब वेर संभाला जाय ॥

१-पानी २-कटोरा ३ अगूठी ४-कहै ५ महा ६ पैदा हुई ७-भविसानरूपी

लेय विवाण लोग भरलिया । सायर तीर इकट्ठा किया ३१६॥
पापी दैत्य चढ़ा हंकार । ले डोबे सो समुद मंझार ॥
हों दुखियारी राखी भवन । ना जानों यह कारण कवन३१७
तिह कारण यहां अकेली रहूं । घना दुक्ख बिन सज्जन लहूं ॥
तू स्वामी दीसे बलवंत । मुझ दासी ले चलो तुरंत ॥३१८॥
दानों आवे नगर मझार । तुमहि विनाश करै अपहार ॥
भो सुंदर मेरी मति लेय । अन्यह नगर पयाणा देय ३१९
मैनंदाह रोमंची वाल । मधुर बचन बोलै सुकमाल ॥
जो मनभावे सो तुम करो । दुसह वियोग हम दासी हरो३२०
भविसदत्त बोला सुकुमार । भो सुंदरि तू हिया सहार ॥
तुम बाला कायर मति होय । विधना लिखा सो निश्चय होय३२१
ज्यो कुल लाज रहै तुम तणे । त्यों तुम चिंत करो आपणे ॥
दान अदत्ता हाथ न लेउं । गुरु के वचनहु हिरदें धरेउं३२२॥
मुझ वियोग भाई लघु दिया । सायर तीर छोड़ हम गया ॥
तो आया इस नगर मझार । तू सुंदर देखी वरनार ३२३॥
मति झुरहि परियण संभाल । ले भिंगार बदन सु पखाल ॥
सुंदर मेरी सीख सुनेय । पूरब दुःख जलांजलि देय३२४॥
भविसदत्त संबोधी वाल । तबही भया जो संध्याकाल ॥
आवण वार दानों की हुई । बैठा कुमार मन चिंत मन थई३२५
आवत दानों देख्या वार । मन सहार लीया हंकार ॥
भादों मेह जिम बरसै आय । प्रलैकाल जु पवन बहाय ३२६॥
अग्नि फुलिंगें चढें अकास । घड़हराट हूआ चौपास ॥

१-कामपीड़ा २-सहा न जाय ।

देखत कुमर भयावण भया । महामंत्र तिन आगे किया३२७॥
बायें हाथ कमंडल लिया । दहिणे हाथ खड्ग सो दिया ॥
दानों साम्हों भया कुमार । मनमें चिंता नाहिं विचार३२८॥
हाक्यो दानों वचन पचार । चढा धनुष कीया टंकार ॥
जब गरजा दानों बलवंत । घण पर्वत डोले कांपंत ३२९॥
भविसदत्त लीये हथियार । दानो समही चालो कुमार ॥
असनवेग चिंता मन करी । ऐसा पुरुष न इसही पुरी ३३०॥
मैं सब घाले समुद मझार ।किनहि न हाथ किया हथियार ॥
रोष न उपजै दया मन होय । ना जाणे यहु कारण कोय३३१॥
अवधि ज्ञान देखे जु विचार । ये आया भविसदत्त कुमार ॥
भो कुमर क्यों इकला होय । तुमरे संग न दीसै कोय ३३२॥
भो बालक तू चीन्हैं मोय । हू तो जाणु भविसदत्त सोय ॥
पूरब जन्महु तपसी हुआ । कौसंवी नगरी में जुआ ३३३
बीजोयर दुख दीना जान । तैं मेरा कीया सनमान ॥
नगरलोक निंदा मुझ करी । तैं सेवा मेरी मन धरी ३३४
बीजोयर उपनों यहा आय । स्यों परियण तैं राज कराय ॥
पूर्व विरोध चित्त मैं धरा । स्यो परियणवीजौरा हरा३३५
सबे लोग में किया संहार । लेडोवे ये समुद मझार ॥
यह कन्या राखी तुझ जोग ।विलसो कुमर करो तुमभोग३३६
बहु सनमान असुरने किया । तब कुमार आनंदा हिया ॥
मायामई जो मंडप किया । कनक थंभ रोपी विचधरा३३७
पाणिगहण सुंदरि का किया । तिलकपुर पाटण सो दिया ॥

१-ढाल ।

देकर नगर असुर उठिजाइ । भविसदत्त तहं भोग कराइ३३८
भविसण रूपा आनंदी नार । विलसै भोग करै सिंगार ॥
हाव भाव बहु विभ्रम करे । भविसदत्तका मननितहैरे३३९
चंदपहुप चैत्याले जाय । भाव जुगत तैं पूज कराय ॥
रतनमई सोभै आवास । विल्सैपरिमलभोगविलास३४०
पुरुष नारि क्रीड़ा बहु करैं । कछु चिंत नाहिं मनमें धरैं ॥
ऐसी जुगत बहुत दिन गये । सुख संपति दोनों भोगये ३४१

॥ दोहा ॥

जिम सुर पंकति लिख गयो । साहस करा कुमार ॥
भविसण रूपा परिणई । पंचम संधि विचार ३४२

इतिश्री भविसदत्त जिन भवन सोवन-देवता पंकति लिखन-कुमार साहस करन-भवसाणरूपा विवाह वर्णन बनवारीकृत पंचम अधिकार संपूर्णम् ॥५॥



६ षष्टम अधिकार

॥ दोहा ॥

चंदपहुप जिन पय नमों। बनवारी शिर नाय ॥
कमलश्री व्रत जिम लहा। आखूं सार्द पसाय ॥३४३॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

बाहुड़ कथा गई सो तहां। कमलश्री है गजपुर जहां ॥
पुत्र वियोग शोक बहु करै। अंसु जलोली नैनों भरै ३४४
उड़ा वायंस मग देखै सोय। दिवस एक छमंच्छर होय ॥
बहु दिन ऐसा उपजे आय। भविसहु देखूं नैन भराय ३४५
एकहि दुःख सेठ मुझ दिया। सौति सरूपा सुख सब लिया॥
दूजे भविस प्रदेश मझार। हों किम राखों हियासहार३४६
कवण पाप मैं पूरब किया। दारुण दुखमुझ बिधना दिया॥
अंसु जलौली स्वांस भराय। तब माता राखै समझाय३४७
गजपुरमें सब लोग बसंत। मन संदेह धरै बहुभंत ॥
किसहि वीर किसही भरतार। गये प्रदेश न आई सार३४८
मनमें चित नारि अति धरै। पथीजन कहुं पूछत फिरै ॥
विनवै नारि पूछे कुशलात। कोइ न जाणे तिनकी बात३४९
कमलश्री गई सो तहां। सुनिया नामि अजियां जहा॥
नमस्कार सुंदर जब किया। धर्मवृद्धि अजियाने दिया३५०
अति विसमादी बैठी जाय। अंसु जलोली स्वांस भराय ॥

१-इच्छा २ एक वर्ष ३ अर्जिका।

अजिया बोली कमला सुनो । अतिविसमादनचितमेंधरो३५१
दीसै सकल संसार असार । धनजोवन जु पुत्र परिवार ॥
पिण संयोग मिलै वहु आय । पिणइकमाहिविहुड़सनजाय३५२
किसका पुत्र किसहि घरवास । किसका स्वामी किसकादास॥
जैसा सुपना रयण विहाय । ऐसा जगमें जीवनमाय३५३॥
संकट जीव पड़े जो आय । बिना पुन्य को होइ सहाय ॥
जिम वियोग तू वहुता करै । तिम तिमदुर्गतिकीथितधरै३५४
मन अपना राखो समझाय । विछुड़ा पुत्र मिलेगा आय ॥
अरु भर्तार करै सनमान । सब नारिनिमें होयप्रधान३५५
शुकलपंचमी वरत करेय । जीवनफल संसारहिं लेय ॥
कमलश्री बोली जु सुजान । किसविधकीजेवर्तविधान३५६
तब अजिया बोली सुविचार । मनधर भाव सुनहि वरनार॥
कातिक फागुण साढ़ जु होय । श्रुत पंचमी आराधे सोय१५७
तीजं राति मांडे सन्यास । ठाउ आहार चौथि विलास ॥
सोलै प्रहर जिम होइ सन्यास । पंचमवरत कहो हुल्लास ३५८
छट्ठहि करै ठाउ आहार । विषय संग करै परिहार ॥
अष्ट प्रकारी पूजा करै । छांड़ै पाप पुन्य मन धरै ३५९॥
ब्रह्मचर्य पालै मनलाय । सुनै बखाण विहांणे जाय ॥
चऊ मासमें इक इकवार । पंच वरष जु करै इकसार३६०॥
सत अठ व्रत पूरे जब होय । वित्त समान उद्यापन सोय ॥
करे उद्यापन शक्ति सुभाय । पंचविंव परतिष्टै आय ३६१ ॥
पंच चमर घंटा पंच लेय । पंच चंदोवे उत्तम देय ॥

१-तीन २ व्रत ३-धर्म स्थान ।

पंच कलश पंचै भिंगार। घंटा बाजै रुण झुणकार ३६२॥
पोथी पंच लिखाय जु देय। चार संघ की विनय करेय॥
जे उजवण की शक्ति न होय। दूना व्रत करे ते सोय ३६३॥
पंचमी व्रत अजिया ने दिया। सुंदरि हाथ जोड़ के लिया॥
अजिया कमलश्री गई तहां। अतिशय मुनिवरज्ञानी जहां३६४
नमस्कार दोनो ने किया। धर्म वृद्धि स्वामी ने दिया॥
अजिया बोली सुनहु मुनिंद। तुम स्वामी जिन शासनचंद३६५
हरिबल सुता दुःख अति भरी। करम जोग धनवै परिहरी॥
एक पुत्र सु उस उर भया। मरि बाखर देशांतर गया३६६॥
सो कब आवे कहो सतभाय। इसके मनका संसा जाय॥
जंपै मुनि अवधी मन धरै। इसका पुत बहु क्रीडा करै३६७॥
आनंद सो परनाई नार। विलसै भोग सुक्ख संसार॥
बहुत लाभ ले आवे सोय। गजपुर को स्वामी वह होय३६८॥
तुमहि सेठ धरै सनमान। राणी नाउ प्रगटै शशि भान॥
कमलश्री सब बातें सुणी। जैसी मुनिवर अतिशय भणी३६९
करि आनंद गई सो तहां। माता अछै पीहरिहै जहां॥
चितमें भया बहुत उल्हास। वाणी सुनि मुनीश्वर पास३७०॥

॥ दोहा ॥

कमलश्री हरषित भई। मुनिवर वच मन आन।
निश्चै तिन धीरज किया। स्वामी कहा प्रमान॥३७१॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

झूरै है वधूदत्त की माय। विलखा धनवै कछु न सुहाय॥

१-झारी।

दोनों पुत्र परदेशहिं गये । शुद्ध न पाई कहां वे रहे ३७२॥
पंथीजन आवे नाहिं कोय । लहों शुद्ध निहचै मन होय ॥
नैन जलौली नारी फिरें । घर घर चिंत बहुत मन धरें३७३
सखी सवासण मिलकर जांहिं। पंथ मांहि ते बैठ रहांहिं ॥
स्वांरथ वाही आवे कोय ।पांय लाग कर विनवै सोय३७४॥
अखै न कोई उनकी सार । नारी दुख तें करै अपार ॥
मनमें चिंता बहुती करैं । फाटै हिया बहुत तन झुरै३७५॥
फाटे प्रोहण सुमुद मंझार । हांके चोर किया हथियार ॥
उतरे पार समंदर गए । लाहे निमित्त देशांतर गये३७६
ऐसी कह कह मन पछताय । गरवा शोक हिये जु धराय ॥
सैन न सावे अन नहिं खाहिं।विलखी नारि रहै मनमाहिं३७७॥

॥ दोहा ॥

नैन जलौली तिय भरै । मन न सुहावे कोय ।
जिस दिन विछुड़े सुत मिलै । वह दिन कैसा होय॥३७८॥

१५ मात्रा चौपाई ॥

वाहुड़ कथा गई सो तहां । भविसदत्त सु अच्छे जहां ॥
एक दिवस पूछै सो नार । विनती एक करूंहूं सुरार३७९॥
काल बहुत सुख भोगत गया । पूछ न सकि संसा मन भया ॥
मेरे मन चिंता अति घणी । कवण पिता माता तुम तणी३८०
कवण देशमें उपने तेह । कहो विस्तार जाय संदेह ॥
सुणि वात भविसदत्त कुमार । नैनों नीर भरो सु अपार ३८१॥
परियण सांभैल भयो उदास। अंसु जलौली लेय उस्सास ॥

१-गाड़ीवाला २-महान ३ याद करके ।

जन्मभूमि की चिंता करै । कमलश्री का दुख मन धरै३८२॥

प्राकृत

जननी जन्म भूमिं । पच्छा निंदि साहु गोट्ठि ।
चित्तारो हिय पुड कंति । देस विदेस गयांहि ॥३८३॥

१५ मात्रा चौपाई ॥

किम होसी माता हम तणी । दुर्जन लोग हंसैं अति घणी ॥
पुत्र वियोग दुहेला होय । किम सहारै जननी सोय३८४॥
एक दुःख धनवै उस दिया । दूजे हों परदेशहि रहा ॥
ऐसा कह कह मन पछताय । मो वियोग क्यों जीवै माय३८५
नैनों नीर वहै असराल । मानों बरसै भादों काल ॥
बडे बडे भर लेहि उसास । विहंलंघल हुइ बैठ उदास३८६
बैठी सुंदर बिनवै सोय । भो स्वामी किम कायर होय ॥
मन साहस तुम अपने करो । ले भिंगार सलिलं मुख धरो३८७
स्वामी सकल कहो संभास । किह कारण तुम भये उदास ॥
तबसो भविस जु बोला सुजान । भोसुंदर सब सुपन कहान३८८
हम विरतांत कथांतर होय । मनधर भाव सुनों तुम सोय ॥
जन्म भूमि कुरु जंगल देश । गजपुर नगरी बसै अशेस३८९
राय भूपाल राज तहां करै । धनवै सेठ पिता हम रहै ॥
कमलश्री सासू तुम तणी । लाछी कोख उत्पन्नी भणी३९०
पूरब कर्म उदे भयो आय । रूठा तात सो चित न सुहाय ॥
माय हमारी रहै पितु साल । विरचै धनवै चित विकराल३९१
धनवै अवर विवाह किया । एक जु पुत्र तास उर थया ॥

१-व्याकुल २ पानी ।

वधूदत्त नाऊ तू जान । भरे परोहण एक मिलान ३९२
चलत चलत मयणागिर गये । रहे परोहण उतरत भये ॥
तोड़ फूल ते वण फल खाहिं । झोली भर वणिवर ले जाहिं३९३
सगले वणिवर चढे जब आय । वधूदत्त ने मंत्र कराय ॥
वादवान उठि ठाढे किये । पोहण हांक समुद में लिये३९४
जबहों आया समुदे तीर । बोहंथे पडे गहर गंभीर ॥
भ्रमता भ्रमता वनह मझार । गुफा एक दीठी अंधियार ३९५
पैठि गुफा बाहर जब गया । तिलकपुर पट्टन देखत भया ॥
शून्य नगर जब देखा आय । कंपैतन हिरदा भरमाय ३९६
फिरत फिरत चैत्याले गया । करि पूजा सामइक ठया ॥
चंदपहुप का शरणा जान । सहज नींद आई परवाण ३९७
गई नींद जब बैठा हुआ । देखी पंकति को लिख गया ॥
पूर्व दिशा चैत्याले जाय । पंचम घर इक सुंदरि थाय ३९८
बहु सनबंधी तुमहि कुमार । भोगै जु अपार ॥
देखि पंकाति लिखी तुरंत ३९९ ॥
मन सहार दिया ॥
पंचम म ना। ४००
तैं मेरा
असनवेग
पूर्व जनम
तू उछगी
सब पट्टण

१ नाम २

आदि अंत जो उपजत भई। सबहि कथा सुंदर सों कही४०३
कथा पास सुना जु विचार। मन अहलादी राज कुमार॥
ऐसा स्वामी करो जु उपाइ। ज्यों हम मिलहिं कुटंबै जाइ४०४
लाछि तिहारी होवे सार। जो देखैं अपना परिवार॥
पिय विन जिम जोवन हो छार। ऐसा सुख इस नगर मंझार४०५
कवण सुक्ख कवण यह भोग। जो नहिं देखहि सज्जन लोग॥
ले लाछी हम साहस करें। ले सायर तट इकठा धरें ४०६
बांधे आवें समुद मझार। चढी पगेहण उतरें पार॥
दोनों मंत्र किया एकांत। रतनपुंज काढ़े मलकांत ४०७
हीरा पन्ना मोती लाल। हेम कचोले उज्जल थाल॥
रतन जड़े सिंहासन लिये। मोती चंदरवालहि दिये ४०८
पीणा दामण दक्षिण चीर। कस्तूरी परमल सु गहीर॥
नाग मुद्रिका रतनन जड़ी। सोभित लई वीणा पावड़ी४०९
दर्पण कलश चमर भिंगार। रत्न जड़ित मेले सिंगार॥
कटिसूत्र लीये इकसार। नेवर लीये रुण झुणकार ४१०
जेजे वस्तु लई इकसार। कहांलग वर्णूं होय पसार॥
हेम पिलंग ऊपर ले धरे। सायर तीर एकठे करे ४११॥
मंडपलता तले ले धरी। कोई न देखे नैनों हरी॥
चंदपहुप बोले जयकार। दोनो पहुंचे वणह मझार४१२

॥ दोहा ॥

ज्यों सुररमणी सुर रमे, यों सुनील वरवीर।
हंसतूल की सेजपै, बैठे युगल सुधीर ४१३॥

---

१ जहाज—

१५ मात्रा चौपाई ॥

इस अंतर वधुदत्त कुमार । चले वोहिथे समुद मझार ॥
चलत चलत दीपांतर गया । खोयावित निर्धन सोभया४१४
वधूदत्त फिरत सो भया । वोहथे छूटे वाखर गया ॥
वहे वोहथे सायर माहिं । झूरैं वणिवर खरे डराहिं४१५
वहत वहत सो आये कहां । मयणागिरि पर्वतहै जहां ॥
वोहथे लागे सायर तीर । पांसै वणिवर उतरे वीर ४१६॥
वसतर हीनं वित्त सो नाहिं । वनफल खाण गयें वनमाहिं ।
झाड़ झाड़ ते वणिवर फिरैं । वनफल तोड़ पेट सो भरैं४१७
भवसणरूवा देखै वीर । मनमें भ्रांति भई विस्तीर ॥
भवसदत्त सों विनवै नार । एक अचंभावणहि मझार४१८
झाड़ि झाड़ कवण ये फिरैं । देखत स्वामी मोमन डरै ॥
भविसदत्त बोला जु सुजान । स्वारथवाही आये जान ४१९
मन अपने शंका नहिं करो । पंच परमपद हिरदे धरो ॥
वणिवर वनफल खाहिं अपार । दूरह्व दृष्टि पड़ी को नार ४२०
सुर देव्या ये बैठी कोय । मनमें देख अचंभे होय ॥
वणिवर एक गया सो कहां । वधूदत्त बैठाथा जहां ४२१
एक अचंभा वनहि मझार । चलो कुमर देखैं निरधार ॥
सुर रमणी देखी गुण भरी । क्रीड़ा करैं देवसुर खरी ४२२
भो कुमार तुमचलो तुरंत । कौतुक देखो मन हरषंत ॥
वधूदत्त गया सो तहां । देखै कौतुक वणिवर जहां४२३
दूरही क्रीड़ा देखत भया । मन अचरज बहुता तिनकिया

१-पाचसौं २-मुसाफिर ।

भविसदत्त सु पिछाणा वीर । सेज्या से उठ साहस धीर ४२४
भेटा वीर उछंगो लिया । कर सन्मान शीस चूंविया ॥
दोनो बैठे पिलंग विछाय । पूछै खेम कुशल सतभाय४२५
भविसदत्त बोला सु कुमार । कहो वणिज क्या कीनोसार ॥
किमकर काल गम्या परदेश । किमकरबाढ़ीलच्छिअसेस ४२६
केतक विढति आण्या वित्त । कहो कुमर आनंदे चित्त ॥
नैनो नीर बहै असराल । छाया स्याम हुई तिहंकाल४२७
नीचा मुखकर बैठा सोय । लज्जावंत न ऊपर होय ॥
बधूदत्त बोला जु कुमार । हों पापी मतिमंद अपार ४२८
हारि लाज मैं कुलकी घणी । तो मैं तू छोड़्या इस वणी ॥
तुम शरणाई आया वीर । जो मनरुचैसो करहुशरीर४२९

॥ दोहा ॥

माल जुकरतब कीजिये, सो तड जाणै आप ।
साधन चौरन काहलो, पापी शंकै पाप ४३०॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

यह दुरमति मुझ उपनी आय । क्षमा करहि तू गरवा माय ॥
भविसदत्त बोला वर वीर । जी न शंका तु साहस धीर४३१

॥ दोहा ॥

मांलन गुण छांनो रहै, निंदउ मिलि मतिमंद ।
लेइ कुंडइ करि छोंये, छिप्यो रहै किमचद४३२॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

वणिवर लोग बुला तब लिया । आदर मान भविसनै किया ॥

१-धन २-छुपा ३-निन्दा करना ४ ढके ।

चंदन चौंकी दई विछाय । मरदन तेल किये मनलाय४३३
ऊन्हों पाणी मज्जन किया । करि मंजन भीतर लेगया ॥
पट्रस भोजन कीये अपार । जीमैं वणिवर हियासहार४३४
नव नव वस्त्र जु दीने आन । पहिराये बनिवर रख मान ॥
कुंकुम केशर तिलक भराय । कस्तूरी कर्पूरित राय ॥४३५॥
वांह पकड़ भीतर लेगया । सभी भंडार दिखावत भया ॥
मिलि वणिवर ते विनती करैं । हम स्वामी अपराधै डरैं ४३६
तेरे गुण जे अखहि कुमार । ऊरण होय न इह संसार ॥
जैसा तुम उपकार सु किया । ऐसा तुझको विधना दिया४३७

॥ श्लोक ॥

श्लोकार्द्धेन प्रवक्ष्यामि । यदुक्तं ग्रंथ कोटिभिः ॥
परोपकारः पुण्याय । पापाय परपीडनम् ४३८

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

बोला भविसदत्त सूजान । भो वधुदत्त बोलहि परवान ॥
जो तैं छोड़ा वनह मझार । तोहमलच्छि लहिहैअपार४३९
लेहु लच्छि तुम विलसो वीर । भरे वोहथे सायर तीर ॥
तुम परसाद ऊणी सोय । मन अपने शंका न करोय४४०
भविसदत्त एकांतहिं गया । लता मंडै तल बैठत भया ॥
भविसणरूवा वुलाय जु लई । भविसदत्त नें ऐसी कही ४४१
भो सुंदरि तुमकरो विचार । जो सायर तैं उतरें पार ॥
वाखर काद जु आगे धरै । लिखलिख चीठी उनमेंकरै४४२
आनंद कुमर उमाहा भया । वोहथे मांहि पयाणा दिया ॥

---

१ गरम २ कहें ३ पूरे ४-मडप-

चंदन चौंकी लई मगाय। मांझं वोहथे दई विछाय ४४३
भविसणरूवा बैठी आय। पचशब्द बाजे झिणकाय॥
वणिवर लोग उमाहा हुआ। जन्मभूमि सुमरतसोभया४४४
कोई आखै मन धर भंत। अजों दूर कुरुजंगल मित॥
हमहि भरोसा नाहिं कुमार। वधूदत्त उतारै जु पार ४४५॥
कोई कहै कुशल घर जाहि। इम पापीका मुख न दिखाहिं।
जो अब कपट करै इसवार। तो हमशरणकौन आधार४४६
अपनी अपनी बुद्धिसो करैं। वधूदत्त पापी सों डरे॥
धन यह भविसदत्त सुकुमार। जो हमशरण हुआ संसार४४७
बैठे वणिवर अस्तुति करे। जो अखे सो अंत न धरे॥
जल देव्या की पूजा करी। कुंकुम केशर चंदन खरी ४४८

॥ दोहा ॥

भविसदत्त जिम फिर चला, आया सायर तीर।
पुन वधुदत्त समानिया, छट्ठी संधि गहीर ४४९॥

इतिश्री कमलश्री स्रुतपंचमीग्रहण भविसदत्त वधूदत्त समागम मोहणचलन वर्णन वनवारीकृत षष्टम अधिकार सपूर्णम्॥६॥

१-वीच-



७ सप्तम अधिकार

॥ दोहा ॥

चंदपहुप जिन पय नमों, बनवारी शिरनाय ।
भविसदत्त जिम छंडिया, शारद करो पसाय ४५०

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

वादवान उठ ठाढे भये । लंगर लोह खैचकर लये ।
सुंदरि अंग उमांही माहिं । निजकुटंब हममिलसी जाहिं ४५१

॥ दोहा ॥

सबतैं मिलन अनूप है, मिल बिछरो जिन कोय ॥
सम्मन बिछरन फिर मिलन, को जानै कब होय ४५२
बिछुरे मिले अधिक सुख, जो बल मऊ सिभाय ॥
पलटा प्रेमका हे सखी,मिले तो बिछुरे काय ४५३

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

कर पसार जो देखे बाल । नाग मुद्रिका भूली शाल ॥
सुंदरि वचन सुनेहि कुमार । अति चला नाहि लाई वार४५४॥
वधूदत्त खोटी मति करी । पापी मनमें ऐसी धरी ॥
हांके पोहण समुद मझार । गहरे शब्द चले विस्तार४५५॥
वणिवर शीस धुणे जो रिसाय। कवण बुद्धि तुझ उपनी आय ॥
उसने भला जु हमपै किया । जीवदान सब साथैं दिया४५६॥
ऐसी बुध तुझ उपनी आय । भविसदत्त को छांडे जाय ॥
दसों आंगुली मुखमें धरैं । हाहाकार सब वणिवर करैं४५७

१ खुशी

वधूदत्त बोला जो रिसाय । तुम मन दया ऊपनी आय ॥
जो यह कुशल नगर में जाय । रावल सगले देय बंधाय४५८॥
तुम वणिवर साथे हम लिये । बाखर काढि तुमको बहु दिये ॥
जो मन मेरे उपनै सार । सो तुम मानों अंको कार४५९॥

॥ दोहा ॥

विषंहर दूध जो प्याइये । विष उगलैगा आय ।
बार बार चंदन घसो । अधिक वास कराय ॥४६०॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

यहु सर्प उह चंदन सार । दोऊ भ्रातका करो विचार ॥
सुनो वीर पछतावा कोय ।विधना लिखा सो निश्चै होय४६१

॥ श्लोक ॥

असत्यं सर्वदा त्याज्यं । दुष्ट वाक्यं च सर्वदा ।
परनिंदा न कर्तव्या । अन्येनापि च सर्वदा ॥४६२॥

कहा न लागै पापी सोय । हांके प्रोहण जलमें सोय ॥
इथंतर भविसदत्त कुमार । नागमुद्रि ले आया सार४६३॥
दूरहि धुजा देखि वरवीर । पोहण जाहि चले गंभीर ॥
कंपै कुमर थरहरै शरीर । विलख वदन हूवा जु अधीर४६४
मन पछताव घना सो करै । जननी वचन चित्त उर धरै ॥
हा माता शिख मुझको दई । कहा न लागा ऐसी भई४६५॥
पहिली वार छोड़ जब गया । सुंदरि देख सहारा हिया ॥
ना जानूं अबकै क्या करै ।प्राण लेय की बुधि मन धरै४६६॥
वधूदत्त गजपुर में जाय । वरै बधावा सरूपा थाय ॥

१-सांप ।

करै उमंग माय मुझ तणा । देखै नाहिं कुमर आपणा४६७॥
विलखी करै जु दुःख अपार । निहचै मरै न लावै बार ॥
दोई मन आनंद जु होय ।गया मन्त्रिस जु कहैं सब कोय४६८
निष्ठुर वचन सरूपा कहै । ते सब कमलश्री मन सहै ॥
गजपुर लोग हरप मन माय । विछुरे लोग कुटंव मिलाय४६९॥
मुझ वियोग दुख बहुता करै। किम जननी तू सहारा करै ॥
ऐसी कह कर मन पछताय । बड़े स्वांस सो वीर भराय४७०॥
पोहण दूर सरोवर गये । कुंवरै दृष्टि अगोचर थये ॥
नाग मुद्रिका देखै सोय । हिरदे सेती लावै सोय ४७१॥
मुदरी देख हिया गह भरै । काम वाण शल हिरदे दहै ॥
वनमें पैठा गुफा मझार । तिलपुर पट्टन गया कुमार४७२
रति मंदिर देखै वरवीर । देखत कंपा हिया शरीर ॥
तू सुंदरि इस मंदिर रही ।सूने अवास छोड मुझ गई४७३॥

॥ गाथा प्राकृत ॥

गाया नव सत्ता ससि वयनी । हर हार अहारणा नैनी ।
समुद्र सु तरशु गमनी । सा सुंदर कच्छहे माई ४७४॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

चिंतामणि हम करतैं गया । अव किम लाभै खोवत भया ॥
तुमसी नारि नहीं संसार । अव किम लाभै दूजी वार४७५॥
भमता भमता गया सो तहां । चंद्रप्रभू चैत्यालय जहां ॥
पैठ चैत्याले पूजा करी । करपूजाजिनंविनतीकरी ॥४७६॥

१-हाथ २ भगवान ।

॥ संस्कृत श्लोक ॥

संयमां द्विविधांलोके । कथितो मुनि पुंगवैः
पालनीयं पुनश्चित्ते । भव्य जीवेन सर्वदा ॥ ४७७ ॥
वाह्याभ्यंतरतश्चापि । मनो वाकाय शुद्धिभिः
सुचित्तेन सदा भाव्येम् । पापभीतैः सुश्रावकैः ॥४७८॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

अबहूं शरण तुम्हारी देव । सम हिमरण हो विनउं सेव ।
ठ्या समाइक भविस कुमार । विषैसंग कीना परिहार॥४७९॥

संस्कृत श्लोक

जिने भक्तिर्जिनेभक्तिर्जिनेभक्तिः सदास्तुमे ॥
सम्यक मेव संसार वारणं मोक्ष कारणं ॥४८०॥
श्रुते भक्तिः श्रुते भक्तिः श्रुते भक्ति सदास्तुमे ॥
सुबुद्धिरेव संसार वारणं मोक्ष कारणं ॥४८१॥
गुरो भक्तिर्गुरोभक्तिर्गुरुभक्तिः सदास्तुमे ॥
चरित्र्य मेव संसार वारणं मोक्ष कारण ॥ ४८२ ॥

॥ दोहा ॥

चित सहार साहस किया, पाया दुःख अपार ।
जिन चैत्याले में रहा, अस्तुति करै कुमार ॥४८३॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

वाहुड़ कथा गई सो तहां । भविसणरूवा व्याकुल जहां ॥
नाहैं नाह जंपै विललंतु । कारणकरैसोरुदनवहंतु॥४८४॥

१-समाधिमरण २-पति ॥

॥ दोहा ॥

तां सजन तां नेह जग । जा आगे नयणाह ॥
भला भलाई वीसरे । आडा थयां वणाह ॥४९४॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

कवण मत्त मुझ उपजी आय । नाग मुद्रि को दियो पठाय ॥
नाथ विचक्षण कहां तू गया । असनवेग का मर्दन किया४९५
जिनही हनो जसोहर राव । सब पट्टण मान्या भड़ भाव ॥
सोवल भुज तैं जीता जाय । हों तो दासी लई विवाह४९६॥
कमलश्री किम जीवै माय । जिस दुख उपजा ऐसा आय ॥
मन अपने में साहस करो । एक जु वार तास को मिलो ४९७
मैले भेप रहै सो नार । नाह नाह विनवै मनधार ॥
शय्या ऊपर शैन न करै । अन्न न खाय भूमि पर रहै॥४९८॥
बधूदत्त उठ आया तहां । सती शिरोमणि बैठी जहां ॥
पापी निष्ठुर बोलै बैन । काठिन वचन जो हिरदा दहन ४९९
भो सुंदरि चित होहि उदार । काम भोग विलसो संसार ॥
सब कुटंब में करूं परधान । गजपुर लोग करैं सनमान५००
पट्टबंध तुझ सुंदरि देव । विनय भक्ति तुम बहुत करेव ॥
सब परपंच मैं तुझलग किया । भोगाभोगकर निहचल भया५०१
ऐसी बात जब सुंदरि सुनी । तासें नेत्र विलख वपु भई ॥
हों जानों मुझ देवर होय । तुझसा क्रूर और नाहिं कोय ५०२
जो संसार भला है कोय । ऐसी बुद्ध न उपजै कोय ॥
परनारी सों नरकैं जाय । नर्क बंध तें दुःख सहाय ५०३

---

१ पति ।

लोह थंभ जब लागे अंग॥ जल वल जाय जु होय पतंग॥
वैतरणी संरिता अति बुरी। वहै रुधिर पीवै अति खरी५०४
ले डोवैं सो तिसही मझार। जलचर खाय करें सो छार॥
ताडन भेदन बहु दुख सहै। सागर बंध नरक में रहै ५०५
जब सुंदर ए बातें कही। पापी मानैं एको नहीं॥
अन्याई मन तरस न होय। निष्ठुर वचन कहै नित सोय५०६
मेरे वस जु पड़ी है आय। कदे न छोडूं जो शिर जाय॥
सुनि सुंदरि जु अचभे रही। कौन बात इन पापी कही ५०७

॥ दोहा ॥

क्रोधी पापी सानिया। फिरै जु आरत माहिं॥
लगी चोट समझै नहीं। सो तो मूढ कहाहिं॥५०८॥

१५ मात्रा चौपाई॥

यहु दीसे जोधा बुंरियार। हों किम राखूं शील भंडार॥
सति शिरोमणि चिंता जान। जिन शासन देव्या परवान५०९
जल देव्या आई सो चार। डालैं प्रोहण जलहिं मझार॥
चक्रश्वरी जिम चाक फिराय। वधूदत्त मुख स्याही लाय५१०॥
हाहाकार सब वाणिवर किया। कुल खोया यह पापी भया॥
सुंदरि शरणे गये जु तुरंत। राखो राखो येही भणंत ५११॥
पाइ लागि कर विनवै सेव। बोलत सुंदरि राखै देव॥
ऐसी करि देव्या उठ गई। शील रतन सो राखत भई५१२॥
चलत चलत प्रोहण सो गये। बीलावल तैल लागत भये॥
बाखर प्रोहण काढा आय। करहल वाहण लिये भराय५१३॥

पापी वचन फिर निष्ठुर कहै । भो सुंदरि किम विलखी रहै ॥
भोजन पान करो सिंगार । विलसो भोग सुराज अपार५१४॥
सुंदरि भूमि पड़ी सो रहै । नैन न खोलै बैन न कहै ॥
मनमे वसै जु भविस कुमार । और पुरुष सो नाहीं सार५१५॥

॥ दोहा ॥

जिम वधुदत्त नै छोडिया । वनमें भविस कुमार ।
सुंदर मोहण ले चला । सप्तम संधि विचार ॥५१६॥

इतिश्री भविसदत्त वन रहा मोहण सुदरि वधूदत्त लावन वर्णन वनवारीकृत
सप्तम अधिकार सपूर्णम् ॥ ७ ॥



८ अष्टम अधिकार

॥ दोहा ॥

चंद पहुप जिन पय नमों । बनवारी शिरनाय ॥
जिम वधुदत गजपुर गया । शारद करो पसाय ५१७॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

गजपुर लोग झुरहिं ते घना । पुत्र कलत्र सोरे आपना ॥
बहु संदेह ते मनमें धरें । पंथीजन को पूछत फिरें ५१८॥

॥ दोहा ॥

पुत्र मोह मोहा घना । मात पिता विललाय ।
दुःख हमारो देख कै । क्यों न पुत्र तू आय ॥५१९॥

१५ मात्रा चौपाई ॥

जिस दिन के सुत निकले जाय। सुध न पाई पारी न आय ॥
बांई आंख सरूपा फुरे । वांयस आय अलाप जु करे५२०॥
वधूदत्त घर आवे मोह । सोनें चूंच मंढाऊं तोह ॥
पंथी आय जणावे सार । वधूदत्त आवै सु कुमार ५२१॥
आए वणिक कुशल सब कोय। साहण वाहण बहुतकि होय ॥
सुनी बात पंथी पै आय । साम्हा लोक चला सो धाय५२२॥
नगर माहिं कोलाहल हुआ । सगला लोग मिलन सो गया॥
कूवे भरण गई जे नार । कुंभहु छोड़ चली पनहार५२३॥
कोई यक भोजन करती बाल । भोजन छोड चली तत्काल ॥

१-कन्या २-घडा ।

कोई सोवत नींदमें चली । केइ यक वस्तर पहरत भली५२४॥
धाई सुंदर गई सो तहां । सब वणिवर मिल आए जहां॥
केई अंको भर २ लेय । सीस चूंवना केई करेय ५२५॥
मिलतें गह भरि आये नैन । पूछे कुशल २ सब क्षेम ॥
ठौर ठौर मिलावे भये । ठौर २ सब बैठत थये ५२६॥
नगरी माहिं बधावा गया । वधूदत्त सो आवत भया ॥
धनवे सेठ मिला सो जाय । पूछी कुशल क्षेम गललाय५२७॥
फुनि जननी के लागा पांय । तबही माता कंठ लगाय ॥
आनंदे सब नगर मझार । घर घर गावैं मंगल चार५२८॥
घर घर तोरण वंदर वाल । घर २ शोभा पचलि द्वार ॥
नगर उछांड़ि वहु शोभा धरे । वधूदत्त की अस्तुति करे५२९॥
धनवे पुत्र खरे जु सुजान । अतुल लच्छि लाया परवान॥
धन्य सु कुल जहां तू अवतरा। धन्य सरूपा जिन उर धरा५३०॥
सब परिवार करे सनमान । कुल साधारन हुआ परवान ॥
वधूदत्त जिन मंदिर गया ।सब परियण आनंदित भया ५३१॥
आरता लेइ सरूपा गई । वहू पास सो ठाढी भई ॥
ताडे नेत्र जु पैरिहंस भरी । देख सरूपा मनमें डरी ५३२
देखी सासु नमी नाहिं सोय । मन पछतावा सरूपा होय ॥
धीरे बैठ सरूपा कहै । भो सुंदरि क्यों विलखी रहै५३३
लेकर सैलिल वदन पखाल । भोजन पान करो तू वाल ॥
हूंसासू सुंदर तुम तणी । हमसो वात कहो आपणी ५३४
अर्ध दरव विलसों संसार । चीरपटोले भरे जु वुसार ॥
मिलै सवांसण सेवा करे । हाथ जोडके विनती धरे ५३५

१-गोदी २ उत्सव ३-क्रोध ४ पानी ५-स्नान ६-अंतर ७-स्त्री समूह ।

कणय सिंहासन बैठो जाय। राजकरो तुम मनके भाय ॥
जितनी बात सरूपा करी। सुंदरि मनमें एक न धरी ५३६
दिष्ट न देखै बोलै नाहिं। सब चरित देखै मनमाहिं॥
तबही सरूपा ठाढी भई। बिलख बदन व्है सुतपै गई ५३७
भो सुंदर जो सुनही कुमार। कवन देश उपनी ये नार॥
बोल न बोलै रहै रिसाय। ताड़ै नैंन हिया जु डराय॥५३८॥
वधूदत्त बोला सु कुमार। जननी बात सुनो तुम सार॥
रतनद्वीप ये उपनी आय। बोल न समझे रहै रिसाय ५३९
माय बाप छोडा परिवार। तातैं बिलखी रहै ये नार॥
ज्यों ज्यों मन रंजै इस तणा। त्यों त्यों तुमसों बोलै घणा५४०
रति मंदिर बैठाली जाय। कामनि बहुत पहुंची आय॥
कहैं सखी सुंदरि जु सुनेय। माय बाप नाहिं चित्त धरेय५४१
ये अवास सुसरा तुम तणां। गजपुर राज करै तुम घणां॥
उठि बैठहि तू कर सिंगार। वधूदत्त पाया भरतार॥५४२॥
यह बात जब सुंदर सुनी। नेत्र जु ताडे बिलखी घनी॥
सखी सहेली उठि घर गई। ठौर ठौर मुख जोडत भई॥५४३॥
वधूदत्त ने आणी नार। रूपवंत सुंदर सुकुमार॥
बोल न बोलै रहै रिसाय। सेज न सोवै अन्न न खाय ५४४
वधूदत्त का नाम जो लेय। करै छोह अरु नैन भरेय॥
ना जानै यह कारण कौन। ऐसी नार न देखी भौंन॥५४५॥
और सहेली आई घनी। निज निज सेव करैं आपनी॥
केइ दर्पण हाथे लेय। केइ परमल घस कर देंय ५४६
केइ तंबोल समर्प्पे जाय। केइ सेज बिछावै आय॥

१-किसी घर २-देना।

केइ मरदन अंग करेय। नैन सलाई कज्जल देय ५४७
फूल गूंद ले आवै माल। केइ मिरदंग बजावहि ताल॥
राग सों वीणा कोई करैं। गीतनाद दोहा उचरैं ५४८॥

॥ गाथा प्राकृत ॥

वाला अवासपती करिगह वेण गाइयं गीईं॥
उगवण दीठा चंदो धरिमूकै कवणचजेणं ५४९॥
पिय विछुन निसिसमो अलवकर वेण॥
ससिवीहणि म्रिगथकीयो तांधरी मुके तेण ५५०

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

देख नैन नहिं उपजै भाव। मानों सुंदर लागे घाव॥
देख सखी जु अचंभा करैं। मनमें सोच बहुत ते धरैं५५१

॥ दोहा ॥

सुंदर निज मन पिय बसै, अवर न कछु सुहाय॥
भविसदत्त मनमें जपै, घड़ी समंछर जाय ५५२॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

गंढ परियण विन जैसे राय। सो योवन पिय विन है जाय॥
जैसी पूजा देव विन करी। तैसी नाथ हीन सुंदरी ५५३॥
जैसे बासर[1] दिनकर[2] हीन। मूरख सभा जिसो परवीन[3]॥
जिसो कवित्त कंठ विन गाय। केशहीन सुंदर तहिंठाय[4] ५५४

१-दिन २-सूरज ३-चतुर ४-वैसीही।

वांझ कुटंब जिसो आवास। दीवाहीन जिसो घरवास॥
हंस विहूणी हंसनी जिसी। साईंतो विन दीसउ तिसी५५५
आंसूं हियडे पडहि निवार। जानों टूटे मोती हार॥
कुच ऊपर जल ऐसा परै। जिम शिव लिंगहि गाडू ढले५५६
सरूपा महिलों लईहे वुलाय। कमलश्री घर दई ज़ु पठाय॥
कनक कचोली केशर भरी। महिलावधावालेयगइ सरी५५७
कमलश्री थी पीहर जहां। महिला जाय पहूंती तहां॥
महिला जंपे शीस निवाय। धरै वधावा लागी पाय ५५८
वधूदत्त घर आया वीर। अतुल लच्छि लाया गंभीर॥
रतनद्वीप की आणी नार। ठ्याविवाह वधुदत्त कुमार ५५९
कमलश्री पूछे सव वात। भविसतनी पूछै कुशलात॥
महिला वोली शीश निवाय। भविसदत्त नहिं आया माय५६०
कोइ न कहै ज़ु उसकी सार। हम पूछे सगले वणिवार॥
सुनी वात महिला पै आय। कमलश्री ज़ु उठी रिसाय ५६१
इस वधावे पड़ो वज्रांग। तेरी जिह्वा लागो आग॥
कमलश्री उठि नगर में गई। घर २ वणिवर पूछत भई ५६२
सुतका दुःख वहुत मन करै। भूषण सिंगार सभी परिहरै॥
डरती किसि न पूछै वात। क्या जानै कैसी कुशलात ५६३
शंकित वणिवर वात न कहैं। नैननीर तिन भर २ रहैं॥
सुंदरि मन उपजा संदेह। उलटी वात कछु दीसे येह५६४
कमलश्री तव गई ज़ु तहां। वधूदत्त वैठा था जहां॥
दूरहु आवत देखी माय। शीसनिवाय कुटिलसंभाय५६५

१-गड़वा तथा-घड़ा २-दासी ३-पत्थर की आग।

कमलश्री पूछै करि धीर। भविसदत्त कहां छोड़ा वीर ॥
एक बात तू जंपै सार। कहां छोड़ामुझप्राणअधार५६६
मनमें कपट बहुतही बसै। कबही रोवै कबही हंसै ॥
नैना भरकर बोलत भया। भविसदत्त दिसावर रहा ५६७
थोड़े दिनमें आवै सोय। मन विसमाद करो मति कोय॥
रोवै ऊंचे लेइ उस्वास। कमलश्री सो करै संमास ५६८
जे सुंदर देखै मुख जोय। इनही बातहुं कुशल न होय ॥
लेय उस्वांस करै यह बात। काहेंकी पूछो कुशलात ५६९
हिरदे अगनी पजी आय। हाहाकार करै विललाय ॥
घर अपने आये सब कोय। मुझ आधार न आयासोय५७०
कवन पाप मैं पूरब किया। भविसदत्त विछोहा दिया।
एक दुःख मुझ नाथ जु दिया। सौतिसरूपासुखसबलिया ५७१
दारुण दुःख दिया भरतार। देख भविस मैं हिया सहार॥
मैं पापण नहिं किया विचार। समुंदा कुमर गयाव्यापार५७२
चित्त में लोभ लाछिका किया। बालापूत प्रदेशैं गया ॥
भविसदत्त मिलहि तु आय।मुझहिअनाथकरहिमतजाय५७३
हों दुखहारी जनम की माय। एको आश नहिं पूजी आय॥
लागी अगन चरण तें आय। कब पहुंचेगी सरकोजाय५७४
मुझ अपजस हूआ संसार। किम जाऊं छंडी निरधार॥
नैनों नीर वहै असराल। मानों बरसै भादों काल ५७५
तन फाटै लोपैंण दउ झरैं। मनकी चिंता कोइ न हरैं॥
हाहाकार करै विललाय। झूरैं केन्दै कछु न सुहाय ५७६

---

१ समुद्र २-पूरी ३-आंख ४-सुनकी लेना।

एकपूत मुझ उपना कूख। मैं संसार किया संतोख॥
कंतहु दुःख विसर सब गया। भविसजु देखसहारा हिया५७७
अबनहिं पूत नहीं भरतार। सौति साल हिरदेमें सार।
ऐसी कहकह मन पछताय। तबमाताळाछी समझाय५७८
भो पुत्री क्यों कायर होय। विधना लिखासो निहचै सोय॥
चित अपना तू करले उदार। आयमिलेगाभविसकुमार५७९
धनवै सेठ बात जब सुनी। कमलश्री मन झुरवै घनी॥
बधूदत्त लीया जु बुलाय। पूछे बात कहो सतभाय ५८०
भविसदत्त साथ तुम गया। कहो सांच जु कहां वो रहा॥
बिलखी कमलश्री बिललाय। सांच बात तुम जंपो आय५८१
बधूदत्त बोला सु विचार। भविसरहा परदेश मझार॥
लाछि हमारी देख न सकै। कमलश्री मनपरिहंस बढ़ै ५८२
जानहिं नाहिं कहां वह गया। देश दिशावर भ्रमता भया॥
धनवै बोला सुनहु कुमार। गुप्त बात नाहिं राखै सार ५८३॥
तब बधूदत्त बोला रिसाय। देख लाछि हम-लोग रिसाय॥
भविसाणरूव बात जब सुनी।मन बिलखी उकतानी घनी५८४
करि परिहंस उठ ठाढी भई। चित में शंक बहुत तिस गई॥
लाजै काज विनाशै भाय।खोटा मन जु ठया उन आय५८५
इसकी बांह पकरि ले जाउं। रावल सब विरतांत सुनाउं॥
सती शिरोमणि चिंतै सोय।धीरज करतें क्या क्या होय५८६॥
अतिहि उतावलि लाज न रहै। सती शिरोमणि सुण इम कहै॥
गाढा मन कर सुनो सब भाय। देखो क्या क्या करै उपाय५८७।

[1] काठा २-इमद।

हम मरणा आया इस बार । जो नहिं आवै मम भरतार ॥
सुंदरि मनमें चिंतय जान । तो हम दीक्षा होइ प्रमान५८८॥
कमलश्री गई सो तहां । सुविया नामी अजिया जहां ॥
मिल दोनों मुनिवर पै गई । नमस्कार कर बैठत भई ५८९॥
अजिया बोली सुनहि मुनिंद। विनती एक करूं जिनचंद ॥
कमलश्री दुखहारी खरी । धनवै सेठ नाथ परिहरी ५९०॥
भविसदत्त इक पुत्र कुमार । गया प्रदेश न आई सार ॥
उन समान मनुप जे गये ।कुशल क्षेम घर आवत भये५९१॥
पुत्र न आया कारण कवन । कहो बात तारन त्रिभुवन ॥
बोला मुनिवर अतिशय वान।अवधि ज्ञानपर जुंज्या जान५९२
भविसदत्त परदेश वसाय । मास एकमें मिलसी आय ॥
शुक्ल वैशाख पंचमी होय ।भविसदत्त आवै घर सोय५९३॥
सुनि बात उच्छव मन भया । चित विसमाद दूर सब गया ॥
जे नहिं आवे भविस कुमार । तो हम दीक्षा होसी अहार५९४

॥ दोहा ॥

कमलश्री निहचै करी । शुभ बुद्धि मन आन ॥
एक मास सुत ना मिलै । तो संजम लूं जान ॥५९५॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

धनवे सेठ जु किया उपाय । वधूदत्त को लिया बुलाय ॥
रतन पदारथ मोती लाल । स्वर्ण कचोले उज्जल थाल ५९६
सिंह द्वार भेटन सो गया । हाथ जोड कै ठाढा भया ॥
पूछी खेम सकल कुशलात । देश २ की पूछी बात ५९७

धनवै सेठ उठि ठाढा सेव। विनती एक करौं हौं देव॥
कंया दिपांतर लावत भया। वधूदत्त का व्याह जु ठया५९८
एक मास की अज्ञा होय। हमहि बुलावै राय न कोय॥
राय भौपाल अज्ञा सु दई। गांठ बांध कर दोनों लई५९९
बाप पूत दोनों घर गये। परियण माहिं अनंदित भये॥
बहुड सरूपा बहुपै गई। हाव भाव सो करती भई६००
मेरा सुंदरि कहा सुनेहि। धन जोबन का लाहा लेहि॥
चित उदार सुंदरि तू होय। रिद्धि सवासणि दीसे तोय६०१
मात पिता दुख देहि बहाय। लाहा जोबन लीजे आय॥
जिम २ सीख सरूपा कहै। त्यों त्यों सुंदरि हिरदा दहै६०२
वधूदत्त सों लागी कहन। अरे पूत ये सुंदरि कवन॥
जितनी कहूं हूं मैं समझाय। मुख नहिं बोलै खरी रिसाय६०३
तो कुमार बोला सुन माय। रतनदीप की उपनी आय॥
बिछुड़ा वंश पीहर इस तणा। इसके हिरदै दुख है घणा६०४
बोल तिहारा समझे नाहिं। किम बोलै जु विराणी छांहिं॥
पाणि ग्रहण सुंदरि का करै। तो तुम सेती उतर धरै॥६०५॥
उसै देश की ऐसी चाल। बोलै नाहिं कुमारी बाल॥
काण बहुत उस देश में धरै। पाणि ग्रहण विन बोल न धरै६०६
भवसणरूप वात जब सुनी। सुंदर मनह रिसाणी घनी॥
हिरदे चिंत करै जु अपार। देखों क्या धों करै करतार६०७
कमलश्री पै एक वर जाऊं। सब बिरतांत कहूं समझाऊं॥
मनमें अपने धीरज धरों। देखों बिधना क्या २ करों६०८

१-फायदा २-दूसरा ३-देश ४-क्रोध।

॥ दोहा ॥

जैसी जगमें मैं दुखी । ऐसी दुखी न कोय ॥
जो भरता नहिं आवई । तब हम दिक्षा होय ॥६०९॥
वधूदत्त मिल आइया । गजपुर नगर मझार ॥
कमलश्री मुनि पूछिया । अष्टम संधि विचार ॥६१०॥

इतिश्री वधूदत्त आगमन गजपुर कमलश्री मुनि पूछन भवसाण
रूवा धीरज करण वर्णन बनवारी कृत अष्टम अधिकार
संपूर्णम् ॥ ८ ॥



९ नवम अधिकार

॥ दोहा ॥

चंदप्रहुप जिन पय नमों । बनवारी शिरनाय ।
भविसदत्त गजपुर गयो । शारद करों पसाय ॥६११॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

वाहुड कथा गई सो तहां । भविसदत्त चैत्याले जहां ॥
कर समायक ध्यान सु धरे । पंच परमगुरु चित में धरे६१२॥

॥ दोहा ॥

ध्यान धरे भगवंत का । तज पंद्रह परमाद ॥
धीरज धर मनमें घना । जाहिं सकल विषवाद॥६१३॥

१५ मात्रा चौपाई ॥

अच्युत स्वर्ग इन्द्र सुर लोय । मानभद्र तिस सेवक होय ॥
क्रीडं विनोद सुरांगणि करे । मनमें चिंत कुमरकी धरै६१४॥
आसि मित्र मुझ वणिवर होय। तिलकपुर पाटन निवसे सोय ॥
जो देखों हों नैन भराय । तव हिरदा मेरा जु सिराय६१५॥
मानभद्र आया जु तुरंत । चैत्याले चाला विगसंत ॥
बेठा नमस्कार कर जाय । भविसदत्त को अंक भराय६१६॥
दयावंत व्है विनवे सोय । पूछै खेम कुशल सुरलोय ॥
सुनी वात भविसदत्त कुमार । मनको विभ्रम हूवा अपार६१७॥
मनमें चिंत करत सो भया । सुरह सामही जोवंत थया ॥

१-चार कषाय-चार विकथा-पाच इद्री एक निद्रा एक स्नेह २-सामने ३-देखता भया ।

अंग विभुत तिसु देखे सोय। मनुप नहीं ये सुरवर कोय६१८॥
असनवेग दानों कै होय। तिलपुर पाटन निवसे सोय॥
को जानै माया मई करै। एकहि रूप बहुत यहु धरै६१९॥
बोला मानभद्र सुरलोय। चीन्ह कुमरहूं अच्छो कोय॥
मैं संपै दरसाई आय। पंकति लिखी मैं मित्र सहाय६२०॥
सोवत नींद जगाया नाहिं। पंकति लिखी गया सुरमाहिं॥
भला करण आया हूं मित। जो मन रुचै सो कहो तुरंत६२१॥
चढ विमान असंख्य धन लेय। गजपुर मांहिं पयाणा देय॥
मिलै कुटंब तू अपने जाय। सांसा मनका दूर करांय६२२॥
सुन वचन आनंदा हिया। नमस्कार कर ठाढा भया॥
रचा विमाण इंद्रसुर लोय। मंदिर आगे ठाढा होय ६२३॥
पंच शब्द बाजे झणकार। चारों तरफ बने चौद्वार॥
चारों छज्जे एक मिलान। मोती वंदर वाल सुजान६२४॥
जाल झरोखें अतिहीं सरूप। ऊपर छत्री बनी है अनूप॥
रुण झुणकार किंकणी करै। मानो कोट दिवाकर धरै६२५॥
देखि विमाण सु भविस कुमार। मन आनंद हुवा जु अपार॥
शुभ जु कर्म उदै हुआ आय। संसा मनका दूर कराय ६२६॥
अर्थ दरव सो लिया भंडार। मोती माणक नवसर हार॥
सीहि पटोले दक्षिण चीर। कस्तूरि परिमल वास गहीर६२७॥
रतनमई पीलंग अपार। हंसतूल की सेज्या सार॥
जगमग जोति सिंहासन करै। शशि सूरजकी जोति जु हरै६२८॥
थाल कचौले लिये भिंगार। नेवर पांव के रुण झुणकार॥

१:पहिचानों।

नाग मुद्रिका रतनों जड़ी । चमर छत्र बीड़ा पावड़ी ६२९॥
जेजे वस्त्र लेइ सवसार । जो वरनों तो होय पसार ॥
भर विमान तिन मनके भाय। मानभद्र तव पहुंचा आय६३०॥
चंदपहुप चैत्याले गया । करि पूजा आनंदा हिया ॥
भविसदत्त लीना जु चढाय । क्षणहि विमाण अकाशै जाय६३१
कमलश्री घर कारण करै । सुतका आगम मनमें धरै ॥
पूरी अवधि तीस दिन गये । मानो काल संमंछर भये ६३२
सब सहनानी पहुची आय । पूत न आया चिंता थाय ॥
सुवेय कमल दोऊ घर मांह । रैन सवाई सोई नाहिं ॥६३३॥
क्षण बाहर क्षण भीतर जाय । क्षणहि किवाड उघाड़ै आय ॥
कमलश्री जो सखीसां भणो । सहियां एक बात जो सुणो६३४
स्वामी कथित अवधि भइ आन । अब एक बात कहूं सु वखान
जो पुत आवैनहि हमआज । तोहूंकाल्ह करूं निज काज६३५
आज न आवे भविस कुमार । तो हम दीक्षा माहि अहार ॥
ऐसी कह हिय गहभर आय । झट विमाण जु पहूंचा आय६३६

॥ दोहा ॥

को को करता हे सखी । सज्जन आया भड़क ॥
आंधि चलियां कांग गल । आधी गई तड़क ॥ ६३७ ॥

१५ मात्रा चौपाई ॥

कमलश्री उठि ठाढी भई । द्युति विमाण सों देखत भई ॥
भेटा कुमर अनंदी माय । चूंवै शीस अरु अंक भराय ॥६३८॥
वाखर उतार सो भीतर लिया । मानभद्र संभाषण किया ॥

१ वर्ष २-नाम आर्जिका ३ सखी ।

परतीहार जणाई सार । धनवै पुत्र सो खड़ा दरबार ६५०
झट बरवीर बुलाय सु लिया । मान आदर सों आसन दिया ॥
लेय भेट आनंदा राय । पूछे क्षेम कुशल सत भाय ६५१
आदर बहुत राय ने किया । कस्तूरि कुंकुम बीरा दिया ॥
जोहि रुचै सो कहो कुमार । मन आनंद धरी जु अपार६५२
भविसदत्त सेवा मन धरी । हाथ जोड कै बिनती करी ॥
एक संबंध तुम नगर मझार । हो मध्यस्थ तुम करो विचार६५३
सांचा होय तो सांचा करो । झूठे ही को दंड जु धरो ॥
हर्ष राय सो बोलत भया । जो मांगो सो तुमको दिया६५४
भविसदत्त उठ ठाढा हुआ । हाथ जोडि कै बिनवत भया ॥
जब मैं आऊं सिंह जु द्वार । रोके नहीं मुझको प्रतिहार६५५
जब ही राजा गह गह हुआ । परतीहार बुलाय सु लिया ॥
यह धनवै घर पुत्र प्रधान । इनका वह तुम राखो मान ६५६
जब आवे मुझ पास कुमार । सभा मांझ तुम लेहु हकार ॥
नमस्कार कर घर तब गयो । नानशाल सो बैठत भयो ६५७
हरिबल सेठ अंक भर लेइ । नैन जलोली शीश चुवेइ ॥
क्षेम कुशल घर आया वीर । मन आनंद हुआ विस्तीर ६५८
महला सरूपा देय पठाय । कमलश्री कूं लेहि बुलाय ॥
बहुको तेल चढावै आज । मंगलचार करैं शुभ साज ६५९
शीश निवाय महला ने कही । कमलश्री उठि ठाढी भई ॥
कमलश्री सो पहुंची तहां । भविसदत्त सो बैठा तहां ६६०
भो बुधवंता सुनो कुमार । बधूदत्त नें आनी नार ॥

१-दर्वान २-पान ।

मन सहार पयाणा दिया । पंचमघर जाइ ठाढा भय
कन्या देखी रूप सुजान । मेरा उन बहु राखा मान ६
दीनों भोजन मनके भाय । हंसतूलपै सोया जा
असनवेग आया सुरराय । नगरलोक जिन मारा जाय
हाक्यो दानों जीत्या सोय । बहु सनबंधी पूरब होय
कन्या रतन ब्याह तिनदिया ।तिलकपुरपाटण सो वै किया६
बहु दिन कीये भोग बिलास । रति मंदिर रहते आवास
अर्थ दरब मैं वहां से लिया । सागर तीर एकठा किया६
बधुदत्त तहं आवत भया । छूटाय प्रोहण बाखर गया
वित्तहीन वस्त्र सो नाहिं । बनमें पैठे बनफलखाहिं ६

॥ सोरठा ॥

वनमें दुखित फिरांह । तहां सहाई को नहीं ॥
हमहु मिले बनमांह । चिंतावंत महा दुखी॥६८५

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

तहां मैं वीर पिछाणा जाय । झट उछंग लिया उरलाय
भोजन पान किये बहुभाय । कुंकुम चंदन अंग लगाय ६
बाखर काढ परोहण भरे । वादवान उठ ठाढे करे
तब सुंदरि बोली सतभाय । नागमुद्रिका भूली आय ६८
सुनैं बचन हौं ठाढा भया । नागमुद्रिका लेन जु गया
हांके प्रोहण बधु जु कुमार । हमतौ छोड़े बनह मझार ६८
तबहौं उठ चैत्याले गया । मानभद्र सो आवत भया
पूर्वजनम सनबंधी जान । झट बिमाण चढाया आन५८

सुनीबात मन विलखी भई । अंसुजलोली बोलत थई ६९०
कर कपोल दे बैठीनार । बोले बैन हिया जु सहार ॥
चलत सीख मैं दीनी जान । गमन जोग नाहि सामान६९१
हा बनमें तू अकेला भम्या । रैन सवाई क्यों कर गम्या ॥
गिरिकंदर क्यों पैठा वीर । सूने नगर किम भम्याविस्तीर६९२
दानों कीया नगर संहार । तासों किम कीया हथियार ॥
हा पापी दुखदिया उनधूत । नवे जनम मैं पाया पूत ६९३
वधूदत्त मुझ सज्जन होय । पूतभीख मुझ दीनी सोय ॥
वारूंवार शीस चुंवेय । वारवार सो अंक भरेय ६९४
नगर लोक सुख मानें सोय । खल परपंच न जानें कोय ॥
ऐसी कहकह मन पछताय । तब भविसदत्तराखिसमझाय६९५

॥ दोहा ॥

जो आया सो भोगया । पछताये किम होय ॥
मंत्र जु ऐसा कीजिये । आगे भला जु होय ॥६९६॥

॥ श्लोक ॥

गतं शोक न कर्तव्य । आगम गेह न भापितं ॥
वर्तमानं च वर्तते । ते पंडिता जगत् प्रियाः ६९७

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

जननी मेरा कहा सुनेहि । गये दुःख जलांजलि देहि ॥
अब हम वेठि करैं जु उपाय । ज्यों सब जाने गजपुर राय६९८॥
पहर पटोले दक्षिण चीर । मन आनद करे विस्तीर ॥
नागमुद्रिका कर माहिं लेहु । वहु पासे जु पयाण देहु ६९९॥
दीपांतर की वस्तु जो सार । वस्त्राभरण भरे जु सुसार ॥

मन सहार पयाणा दिया। पंचमघर जाइ ठाढा भया॥
कन्या देखी रूप सुजान। मेरा उन बहु राखा मान ६८०
दीनों भोजन मनके भाय। हंसतूलपै सोया जाय॥
असनवेग आया सुराय। नगरलोक जिन मारा जाय॥
हाक्यो दानों जीत्या सोय। बहु सनबंधी पूरब होय॥
कन्या रतन ब्याह तिनदिया।तिलकपुरपाटण सो वै किया६८२
बहु दिन कीये भोग बिलास। रति मंदिर रहते आवास॥
अर्थ दरब मैं वहां से लिया। सागर तीर एकठा किया६८३
बधूदत्त तहं आवत भया। लूटाय प्रोहण बाखर गया॥
वित्तहीन वस्त्र सो नाहिं। वनमें पैठे वनफलखाहिं ६८४

॥ सोरठा ॥

वनमें दुखित फिरांह। तहां सहाई को नहीं॥
हमहु मिले वनमांह। चिंतावंत महा दुखी॥६८५

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

तहां मैं वीर पिछाणा जाय। झट उछंग लिया उरलाय॥
भोजन पान किये बहुभाय। कुंकुम चंदन अंग लगाय ६८६
बाखर काढ परोहण भरे। वादवान उठ ठाढे करे॥
तब सुंदरि बोली सतभाय। नागमुद्रिका भूली आय ६८७
सुनें बचन हों ठाढा भया। नागमुद्रिका लेन जु गया॥
हांके प्रोहण बधु जु कुमार। हमतो छोड़े वनह मझार ६८८
तवहां उठ चैत्याले गया। मानभद्र सो आवत भया॥
पूर्वजनम सनबंधी जान। झट बिमाण चढाया आन ६८९
बहु सनमान किया उन मोहि। जननी चरण मैं देखे तोहि॥

चलत २ सोतन घर गई । दाई इसु सो सामिल भई ७१०॥
धनवै आवत देखी नार । कामवाण वेधा जु कुमार ॥
पुत्र लिला मन कड़खी आया।जब लावन्यसों देखी जाय७११॥
मन अभिलाष बहुत सो किया। चंदन चौंकी बैठण दिया ॥
ताडे नेत्र चलत सो भई । सोती पास चलत सो गई७१२॥
हाव भाव सरूपा किया । कणय सिंहासन बैठन दिया ॥
बैठ सरूपा लागी कहन । अचरज एक सुनोतुम वहन७१३॥
आयो है वधुदत्त कुमार । रतनदीप की आणी नार ॥
ठया विवाह रहे दिन चार । पंच शब्द वाजे झणकार ७१४॥
सैन न सोवै अन्न नहिं खांय । माय बाप दुख करके आय ॥
जोहि सखी समझावैं आय । बोलत बोल रहै जु रिसाय७१५॥
ना जानै यह कारन कवन । मैले भेप रहै निज भवन ॥
तेलवान दिन आया आज ।करहिं सवासनमंगलकाज७१६॥
तो मैं महिला दई जु पठाय । वहन बड़ी को लेय बुलाय ॥
सोति वचन सुन हरषित भई । हंसत हंसताहि वहू पै गई७१७॥
दूरों आवत देखी सास । उठि प्रणाम किया संभास ।
वस्त्राभरण जु देखे नार । जाना मुझ आया भरतार७१८॥
नागमुद्रिका देखत भई । मनकी सोच दूर सब गई ॥
तुमरा सुत आया घर माइ । कही बात तें सैन बुझाइ७१९॥
नैनोंपॅलवी वात सु करे । मुख नहिं बोले आनंद भरे ॥
कर पलवी समझावे नार । छुशले आया भविस कुमार७२०

१ अंगुठी २-आंख का इशारा ।

ते सब जननी आगे धरै । हाथ जोड़ कर विनती करै७००॥
पहिरे माय न लावै वार । मनमें आनंद धरै अपार ॥
पुत्र विभौ सो देखत भई । मनकी चिंत दूर सब गई७०१॥
कमलश्री एकांतै जाय । कुंकुम उवटणा अंग लगाय ॥
दासी दोय लई हंकार । ऊन्हाजल करि न्हाई नार७०२॥
कुंकुम केशर तिलक कराय । नवसर मोती मांग भराय ॥
कानों कुंडल बने जु अपार । गजमोती का पहिरै हार७०३॥

॥ सोरठा ॥

तन कर सोले सिंगार । बत्तिस आभरण पहरइ ।
नख शिख ठये हैं बनाव । ते देखत रंभा हरइ ॥ ७०४॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

शीस फूल रवि जोतिहु धरे । कटि सूत्र हीरा बहु जड़े ॥
बीसों अंगुली मौसल देय । और सबै सिंगार करेय ७०५॥
चीर पटोले पहिरे आय । कस्तूरि परिमल अंग लगाय ॥
गले कंचुकी सोहै सार । हेमकलश सोहै थणहार ७०६॥
नैन सलाई कज्जल देइ । शशिवदनी सिंगार करेइ ॥
कर सिंगार उठि ठाढ़ी भई । सखि सहेली मिलती भई७०७॥
नगरी माहिं पयाणा दिया । देखत लोग अचंभे भया ॥
कमलश्री धनवै परहरी ।रहै पितुशाल दुःख अतिभरी७०८॥
एक पूत परदेश मझार । रहा विदेश न आई सार ॥
कबहु न देखा यहु सिंगार । देवि स्वरूप दीसै वरनार७०९॥
ये वस्तर इस देश न होई । यह अचरज नहि जानै कोई ॥

१-गरम ।

चलत २ सोतन घर गई । दाई इछु सो सामिल भई ७१०॥
धनवै आवत देखी नार । कामवाण -वेधा जु कुमार ॥
पुत्र लिला मन कड़खी आया।जब लावन्यसों देखी जाय ७११॥
मन अभिलाप बहुत सो।किया। चंदन चौंकी बैठण दिया ॥
ताडे नेत्र चलत सो भई । सोती पास चलत सो गई ७१२॥
हाव भाव सरूपा किया । कणय सिंहासन बैठन दिया ॥
बैठ सरूपा लागी कहन । अचरज एक सुनोतुम वहन७१३॥
आयो है वधुदत्त कुमार । रतनदीप की आणी नार ॥
ठया विवाह रहे दिन चार । पंच शब्द बाजे झणकार ७१४॥
सैन न सोवे अन्न नहिं खांय । माय बाप दुख करके आय ॥
जोहि सखी समझावें आय । बोलत बोल रहै जु रिसाय७१५॥
ना जानै यह कारन कवन । मैले भेप रहै निज भवन ॥
तेलवान दिन आया आज ।करहि सवासनमंगलकाज७१६॥
तो मैं महिला दई जु पठाय । बहन बड़ी को लेय बुलाय ॥
सौति बचन सुन हरपित भई । हंसत हंसताहि बहू पै गई७१७॥
दूरों आवत देखी सास । उठि प्रणाम किया संभास ।
वस्त्राभरण जु देखे नार ।जाना मुझ आया भरतार७१८॥
नागमुंद्रिका देखत भई । मनकी सोच दूर सब गई ॥
तुमरा सुत आया घर माइ । कही बात तें सैन बुझाइ७१९॥
नैनोपेलवी बात सु करै । मुख नहि बोले आनंद भरै ॥
कर पलवी समझावें नार । कुशले आया भविस कुमार७२०

१ अगुठी २-आंख का इशारा ।

संकेत वार्ता

अहि फण कमल चक्र टंकार । तेग पवन योवन शिंगार ॥
अंगुली अक्षर चुकटी लगमात । सती कहै कमल सों बात७२१

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

मन आनंद किया अति घना । सफल जन्म जाना आपना ॥
देखि सरूपा लागी कहन । धन्य बहन तेरा आगमन७२२
तुमसों बोली शीस निवाय । किया प्रणाम जु मनके भाय ॥
कछु उदास कछु हर्षित भई । वहू पास सो बैठत भई ॥७२३॥
तारे वस्त्र तेल सो धरै । मिलि सवासण मगल करैं ॥
कुंकुम वटणा अंग लगाय । मुख अंचल दें हंसती जाय७२४
एक सखी यों लागी कहन । एक अचंभा सुन हो बहन ॥
यह तेल [illegible] होय । बिन भुगते क्यों ऐसी होय७२५
कोई सैन [illegible] जान । अंग उपंग दिखावे जान ॥
इह नारी [illegible] भरतार । आपस माहिं हंसैं बरनार७२६
बिलखी बदन [illegible] भई । सखियन कों समझावत थई ॥
[illegible] देश की ऐसी । यौवन [illegible] ७

॥ दोहा ॥

धर्महु धीरा जान कर । हिरदे जंपै नौंकार ॥
मनकी शंका दूर कर । पैठा राज दुवार ॥ ७३१ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

कणय सिंघासन बैठा राय । देख कुमार जुहारा राय ॥
कर आदर भीतर लेगया । दान मान कर पूछन लिया७३२

॥ दोहा ॥

जिम भविसदत्त गजपुर गयो । जननी भेटा जाय ॥
भूपालराय सनमानिया । नवमी संधि विहाय ॥७३३॥

इतिश्री भविसदत्त गजपुर आगमन जननी मिलन भोपालराय
सन्मान करन वर्णन बनवारी कृत नवम अधिकार
सपूर्णम् ॥ ९ ॥



१० दशम अधिकार

॥ दोहा ॥

चंदपहुप जिन पय नमों, बनवारी शिरनाय ॥
भविसदत्त यश विस्तरों, शारद करों पसाय ७३४

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

बोलारायनि सुनी कुमार । किस वियोग तू नगर मंझार
बात संक्षेप मुझसे कहो । मनकाचिंत्याकारज लहो ७३
भविसदत्त सेवा मन धरी । हाथ जोरिकै विनती करी ॥
धनवै सेठ बधुदत्त कुमार । वणिकपुत्र जे गये व्यापार७३६
उनहिं बुलाय पूछ आदेश । किम व्यापार किया परदेश ॥
किमकर कन्या तुम ये लही । पाणिग्रहण बिनकैसेगही७३७
रायदूत दीना पैठाय । धनवै पास पहूंचा आय ॥
सेठ चलो, ना लावो बार । साथें लेहु बधुदत्तकुमार ७३८
जेजे वणिवर गये व्यापार । रावल सगले लेहु हंकार ॥
धनवैदूत सो आखत भया । बधूदत्तका व्याह जु ठया ७३९
एकमास अज्ञा हम लई । रावल पासैं विनती भई ॥
अज्ञाले हम आये आज । ऐसा कवन उतावल काज७४०
सेठदूत संतोपा सार । बातकहो तुम हिये बिचार ॥
दूतकहै हम जानैं नाहिं । तुमही चलो बुलावें राइ ७४१
पाणीग्रहण जु बीचे कुमार । तो हम आवै सिंह दुवार ॥
दूतहु जाइ जणाई सार । सेठ तणासहु कहाविचार ७४२

१ संपूर्ण होना ।

सुनकर भविस उठा जु रिसाय । पाणिग्रहण क्यों कीया जाय ॥
पैसो आय तुम सिंहदुवार । सांचा होइ सो व्याहैनार ७४३
सुनीबात जब राय सुजान । चमका चित भूपांत समान॥
करड़ेदूत को आज्ञा भई । रोसवंत हुइ सैन जु दई७४४
वेग दूत दीया जु पठाय । धनवै पास पहूत्या आय ॥
अहो सेठ सब छोड़ो काज । राजातुमहीवुलावैआज ७४५
एक घड़ी जु विलंब न करो । मिलकर सबै पयाणा धरो ॥
दूतवचन सुन धनवै डरा । बहु सन्मान दूतकाकरा ७४६
कछुक काज दीसै जु असार । दूत वचन बोलै अविचार ॥
बधूदत्तको लिया बुलाय । पूछै बात एकांते जाय ७४७
जो प्रदेश कीया अविचार । तु मोसों सब कहो कुमार ।
रावलपैस करों जु उपाय । त्यों हम रंजै गजपुरराय ७४८
बधूदत्त तब विनती करै । कछु चिंता नहिं मनमें धरै ॥
करै काज तूं मनके भाय । पीछे पैस रावले जाय ७४९
धन्नवै सेठ बोला सु विचार । सुनोवात बधूदत्त कुमार ॥
इन पासैमें वणिवर कोय । बाढत दख रिसाणा होय ७५०
तिमहि बुलायहोसनमुखकरो । दख काढ हां आगे धरो ॥
पांसे वणिवर लिये बुलाय । सेठजुबातकही समझाय ७५१
जो परदेश में अजगत किया । मोसों गुपत न राखो भया ॥
रावलदूत दिया पैठाय । सगले वणिवर लिये बुलाय ७५२
सेठि पद हमरो गलिगया । अजुगत वचन दूत जे कहा ॥
ऐसे कदही जनम न सहे । अजुगत वचन किन्ही नहिंकहे७५३
बधूदत्त ऊठा जु रिसाय । निंर्धाटे वणिवर सभी बुलाय ॥

१-बिजली २-पांचसौ ३-चमकाना-

आवै कोई रावल जाइ। दंडाउं वणिवर देउं वंधाय ७५४
धनवैसेठ उठि ठाढा भया। नगरलोक बुलाइ सबलिया॥
पंच महाजन इकठे भये। सिंह दुवार पयाणे दिये ७५५

(महाजन प्रति धनवै सेठ उवाच)

पाप पुन्यका करो विचार। राजा आगै करो पुकार॥
धरमी जनकाकरो सन्मान। पापिकाकाटोनाकअरुकान ७५६

॥ श्लोक ॥

अत्युग्र पुनः पापानं एहेव फल माद्रसेत॥
त्रिभिः पक्षे त्रिभिः मासे त्रिभिः वर्षे त्रिभिःदिने ७५७

१५ मात्रा चौपाई ॥

भविसदत्त [1] अपरंछन होय। पीठें सिंहासन बैठो सोय॥
धनवे सेठ जुहारा राव। पूछै बात कहो सतभाव ७५८
मनमें चिंता हुई अशेप। किमकर धनलाया परदेश॥
किमकर कुमर कन्या तैं लही। पाणिग्रहण बिन कैसेगही ७५९
बधूदत्त बोला शिर नाय। विनती एक सुनो तुम राय॥
रतनदीप प्रोहण हम गये। वेचा वाखर विढवत भये ७६०
हमरी लाछि देख नहिं सकै। झूठा सांचा रावल लखै॥
सो हमपै अब कहो निदान। तो हों खंडोंउसकामान ७६१

॥ दोहा ॥

भविसदत्त परछन हुवा, मनमें खरा रिसाय॥
महा मंत्र हिरदे किया, साम्हे ठाढा आय ७६२

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

जब कुमार उठि ठाढ़ा हुवा। देखत सबका मान गलिगया॥

१-छुपगया २-पीछे-

नीचा मुखकरिचितवंत भये । बोल न निकसै शंकित थये ७६३

॥ दोहा ॥

माल जिकर तव कीजिये, सो तउ जाणइ आप ॥
साहन चोर न काहला, पापी शंकइ पाप ७६४

१५ मात्रा चौपाई ॥

विलखवदन मनमें जु डराय । ठाढे वीर सवै थहराय ॥
धनवै सेठ स्याम होगया । कारण कवन उपन्या दया ७६५
वणिवर साम्ही देखि न सकैं । नीचा मुखकरि शंकित थकैं ॥
तवरावल जु पंचारे सोय । बोल न बोलहु रे तुम कोय ७६६
क्या तुम मोइनी मोहे जाय । क्या तुम कालहु खाए आय ॥
साम्हे होय न चिंतन करो । कवन शंक तुम मनमें धरो ७६७
बोले वणिवर शीस निवाय । विनती एक करैं हम राय ॥
इन पापीनें किया अकाज । अपने कुलको लाई लाज ७६८
चलत चलत मैनागिरि गये । वोहथे ऊहां ठाढे भये ॥
छोड़ा भविस जु वणहिमझार । हांकेप्रोहण समुद मझार ७६९
समुद घाटि महँ उतरे जाय । लूटे प्रोहण तस्कर आय ॥
वित्तहीन लोग सव हुए । प्रोहण वहांसे फिरते भए ७७०
मैनागिरि तँलि लागे आय । बनमें पैठे वनफल खांय ॥
सो नारी हम देखी जाय । वधूदत्त हम लिया वुलाय ७७१
भविसदत्त अंको भरलिया । आदरकर भीतर लेगया ॥
पटरस भोजन दीने सार । वस्त्राभरण जु दीयेअपार ७७२
जीवदान इन हमको दिया । मानदान सवका इन किया ॥

१-धमकाना २-चौर ३-धन ४ किनारे अथवा नीचे ।

आवै कोई रावल जाइ । दंडाउं नगिवर देउं बंधाय ७५४
धनवेसेठ उठि ठाढा भया । नगरलोक बुलाइ सबलिया ॥
पंच महाजन इकठे भये । सिंह दुवार पयाणे दिये ७५५

(महाजन प्रति धनवै सेठ उवाच)

पाप पुन्यका करो विचार । राजा आगे करो पुकार ॥
धरमी जनकाकरो सन्मान । पापिकाकाटोनाकअरुकान ७५६

॥ श्लोक ॥

अत्युग्र पुनः पापानं एहेव फल माद्रसेत ॥
त्रिभिः पक्षे त्रिभिः मासे त्रिभिः वर्षे त्रिभिःदिने ७५७

१५ मात्रा चौपाई ॥

भविसदत्त सु अपरंछन होय । पीठं सिंहासन बैठो सोय ॥
धनवे सेठ जुहारा राव । पूछे वात कहो सतभाव ७५८
मनमें चिंता हुई अशेप । किमकर धनलाया परदेश ॥
किमकर कुमर कन्या तैं लही । पाणिग्रहण बिन कैसेगही ७५९
बधूदत्त बोला शिर नाय । विनती एक सुनो तुम राय ॥
रतनदीप प्रोहण हम गये । बेचा वाखर विढवत भये ७६०
हमरी लाछि देख नहिं सकै । झूठा सांचा रावल लखै ॥
सो हमपै अब कहो निदान । तो हौं खंडोंउसकामान ७६१

॥ दोहा ॥

भविसदत्त परछन हुवा, मनमें खरा रिसाय ॥
महा मंत्र हिरदे किया, साम्हे ठाढा आय ७६२

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

जब कुमार उठि ठाढ़ा हुवा । देखत सबका मान गलिगया ॥

१-छुपगया। २-पीछे-

नीचा मुखकरिचितवंत भये । बोल न निकसै शंकित थये ७६३

॥ दोहा ॥

माल जिकर तव कीजिये, सो तउ जाणइ आप ॥
साहन चोर न काहला, पापी शंकइ पाप ७६४

१५ मात्रा चौपाई ॥

विलखवदन मनमें जु डराय । ठाढे वीर सबै थहराय ॥
धनवै सेठ स्याम होगया । कारण कवन उपन्या दया ७६५
वणिवर साम्ही देखि न सकैं । नीचा मुखकरि शंकित थकैं ॥
तवरावल जु पंचारे सोय । बोल न बोलहु रे तुम कोय७६६
क्या तुम मोहनी मोहे जाय । क्या तुम कालहु खाए आय ॥
साम्है होय न चिंतन करो । कवन शंक तुम मनमें धरो७६७
बोले वणिवर शीस निवाय । विनती एक करैं हम राय ॥
इन पापीनें किया अकाज । अपने कुलको लाई लाज७६८
चलत चलत मैनागिरि गये । वोहथे, ऊहां ठाढे भये ॥
छोड़ा भविस जु वणहिमझार । हांकेप्रोहण समुद मझार ७६९
समुद घाटि महँ उतरे जाय । लूटे प्रोहण तस्कर आय ॥
वित्तहीन लोग सब हुए । प्रोहण वहांसे फिरते भए ७७०
मैनागिरि तँलि लागे आय । बनमें पैठे बनफल खांय ॥
सो नारी हम देखी जाय । बंधूदत्त हम लिया बुलाय७७१
भविसदत्त अंको भरलिया । आदरकर भीतर लेगया ॥
पटरस भोजन दीने सार । वस्त्राभरण जु दीयेअपार७७२
जीवदान इन हमको दिया । मानदान सबका इन किया ॥

१-धमकाना २-चोर ३-धन ४ किनारे अथवा नीचे ।

वाखर कादि वोहथे भरे। वादवान ठहि ठाढे करे ७७३
यह उपकारी हमरा आथ। हम हूए पर खोटे साथ॥
प्राणकाढ जो इनको देहिं। तोउ न ऊणा इनसें होहिं७७४
नाग मुद्रिका भूलि नार। गया लेन भविसदत्त कुमार॥
हांके प्रोहण चलते भये। भविसदत्त वन मांहीं रहे ७७५
हाहाकार सुंदरि विल्लाई। खोटी मति इस उपनी आई॥
काम अंवीदि वात जु कही। सुंदरि मनहि अचंभे रही ७७६
जलदेव्या तव आई चार। प्रोहण डोले समुद मझार॥
सगला संग एकठा हुवा। सुंदरि चरणों लागत भया७७७
राखराख तेरी शरणाई। ज्यों हम मिलहिं कुंटंवे जाई॥
देव्या गई जु अपने थान। हमआये गजपुरहि मिलान ७७८
स ̃ शिरोमणि निज भंडार। ऐसी सति ... ंसार॥

एकहि एक जूझ यहु करै । कर विनोद बालमन हरै७८४॥
तानशाल यहु बाढा जाय । गरुवा हुआ अब देखा आय ॥
राजा उठि अंतेवर गया । परियण साथ मंतु तिन ठया७८५
ऐसा बैठ करहु जो उपाय । जो हम नित देखें इस ठाय ।
देखत नैन सुहावण होय । रूपवंत गुण भरिया सोय७८६॥
सुमताधीय घर खरी पियार । रूपवत गुण लक्षण सार ॥
दीनी कन्या भविस कुमार । किया तिलक तिस सभामंझार७८७
पुरजन लोग विदा सब हुया । अपने अपने घर सो गया ॥
धनवै सेठ बधुदत्त अज्ञान । दोनों राय राख्या ये जान७८८॥
भविसदत्त का किया सन्मान। सब परियण में किया प्रधान ॥
पुनिसब लोग बुलाय सो लिया।राजा तिनको पूछत भया७८९॥
यहु तो सेठ नगर सुझ होय । ऐसा काम करै नहीं कोय ॥
जैसे काम इन पापी किये । ऐसे तुम सब देखत भये७९०॥
पंच महाजन करैं उपाय । सो इनको अब कीजे आय ॥
पंच महाजन उठे रिसाय । कर मीडै अरु शीस धुणाय७९१॥
अब तुम देखो कर्म संयोग । विलसै लाछि करै ते भोग ॥
इनको दुरमति उपजी आय । को मेटै जो आप कराय७९२॥

॥ प्राकृत गाथा ॥

जंजं विहुणा लहियं । तंतं पावइ सयलो यस्स ॥
इम ऊण जाण पुरसा । धीरा न होहि कायरा हुंती७९३॥

॥ दोहा ॥

कर्मों तनी विचित्रता । देखो नरहु सुजान ॥
खात पीवंते विलसते । उपजी दुर्मति खान ॥७९४॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

नगर लोग बुला तब लिया । राजा तिनको बूझत भया
बैठि एकांत मंत्र तुम लहो ।जो तुम रुचै सो हमसे कहो७९५
मिल्या लोग सब बैठा आय । अपना अपना मंत्र कराय
एक पुरुष उठ बोलत भया । वधूदत्त नें खोटा किया७९६
हर्डी लच्छि उन भाई तनी । अरु घरमें आनी भांमिनी
भाई छोडा वनहि मझार । ऐसा कोई न करै संसार७९७
सेठि इही तु कहिये महंत । इसका कोइ न जानै अंत
ऐसे काम हीन नहिं करै । जैसा पापी इह मन धरै ७९
धर्महीन यह उपना कोय । क्षत्री कुल ऐसा नहिं होय
भविसदत्त की सुंदरि हर्डी । खोटी दृष्टि उन मनमें धरी७९
भविसदत्त पुन्य हुआ सहाय । आदर बहु किया गजपुर राय।
सुमताधीय सो खरी पियार । सो दीनी पुन्यवंत कुमार ८०

॥ श्लोक ॥

भाग्यं फलति सर्वत्रं । नच विद्या नच पौरुषं ॥
समुद्र मथते येन । हर लक्ष्मी हरो.विषं ॥८०१॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

पंच महाजन मंत्र करि गये । राय पास जा ठाढे भये ॥
हाथ जोड के विनती करैं । शीस निवाय चरण पै धरें.८०२
सेठि पदी धनवै तुम दई । देश कुरु जांगल सुख्य जु ठई ॥
अब तुम इसका राखो मान । ज्यों यश बाढै राय सुजान ८०३
सेठहि बंधन दीना राय । गजपुर लोग क्षण न सुहाय ॥

धनवै सेठ दोष नाहिं कोय । वधूदत्त तस्कर तुम होय ८०४
तब सुनकर बोला नरनाहु । सब मिलके तुम भविस पै जाहु ॥
जो वह आवै कुमर सुजान । सो हम आय कहो परवान ८०५
मिलकर लोग भविस घर गये । नमस्कार कर बिनवत भये ॥
कुल मंडन तू जगमें भया । अभय दान सब लोगों दिया ८०६
तुव म्हारे भूपाल समान । तुम पै आये राखो मान ॥
भविसदत्त उठि ठाढा भया । बहु सन्मान लोगां का किया ८०७
आज जनम हूआ परमाण । तुम आये मो घर जु मिलाण ॥
जो मन रुचै सोई तुम करो । चित में धरम पक्ष तुम धरो ८०८

(कुमर उवाच)

॥ दोहा ॥

जोहै दुःख शरीर को । सो दुख कहो न जाय ॥
जग जीवन कांसी शबद । कांसी माहि समाय॥८०९॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

जाना कुमर धन्य यह घरी । हम द्रिष्टि तुम चर्णन परी ॥
सभी लोग धन धन उचरें । राजा राय अस्तुति करें ८१०॥
सुने वचन आनंदा हिया । जैजैकार सब लोगां किया ॥
धन्य जन्म भविसदत्त कुमार । धन्य कूख जिस उपना सार ८११॥
धन संभाल तू अपना लेय । यह अपराध तू हमें क्षमेय ॥
पंच लोग अरु भविसकुमार । पुनि बुलाये राज दुवार ८१२॥
मैं कुरुजांगल कीया प्रधान । तुम इसका अति राखो मान ॥
सभी लोग उठि ठाढे हुये । हाथ जोड के विनवत भये ८१३॥

१-चोर २ राजा ३ कहे ।

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

नगर लोग बुला तब लिया। राजा तिनको बूझत भया।
बैठि एकांत मंत्र तुम लहो। जो तुम रुचै सो हमसे कहो७९५
मिल्या लोग सब बैठा आय। अपना अपना मंत्र कराय।
एक पुरुष उठ बोलत भया। बधूदत्त नें खोटा किया७९६
हडी लच्छि उन भाई तनी। अरु घरमें आनी भांमिनी।
भाई छोडा वनहिं मझार। ऐसा कोई न करै संसार७९७
सेठि इही तु कहिये महंत। इसका कोइ न जानै अंत।
ऐसे काम हीन नहिं करै। जैसा पापी इह्न मन धरै ७९८
धर्महीन यह उपना कोय। क्षत्री कुल ऐसा नहिं होय।
भविसदत्त की सुंदरि हडी। खोटी दृष्टि उन मनमें धरी७९९
भविसदत्त पुन्य हुआ सहाय। आदर बहु किया गजपुर राय॥
सुमताधीय सो खरी पियार। सो दीनी पुन्यवंत कुमार ८००

॥ श्लोक ॥

भाग्यं फलति सर्वत्र। नच विद्या नच पौरुषं॥
समुद्र मथते येन। हर लक्ष्मी हरो विषं॥८०१॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

पंच महाजन मंत्र करि गये। राय पास जा ठाढे भये॥
हाथ जोड कै बिनती करैं। शीस निवाय चरण पै धरैं ८०२
सेठि पदी धनवै तुम दई। देश कुरु जांगल मुख्य जु ठई॥
अब तुम इसका राखो मान। ज्यों यश बाढै राय सुजान ८०३
सेठहि बंधन दीना राय। गजपुर लोग क्षण न सुहाय॥

१-स्री २-पुत्री।

११ एकादश अधिकार

॥ दोहा ॥

चंदपहुप जिन पय नमों, वनवागि शिरनाय ।
ज्युं मविसदत्त यश विस्तरै, शारद करो पशाय ८२३

१५ मात्रा चौपाई ॥

व राजा बोला जु सुजान । शीलवंत नारी परधान ॥
ह्यंवात जानैं नहिं कोय । सो कीजे निश्चय मन होय ८२४
व वणिवर मिलि बोले आय । शीलवंत यह देज्या माय ॥
ाम लिये इस पातक झडैं । दर्शन देख पाप झड़पड़ैं ८२५
नि राजा बोला सो सार । एकवात तुम करो विचार ॥
तकोई मुख जोड़ै जाय । सज्जन दुर्जन वातकहाय ८२६
ास एक बधुदत्त घर रही । निर्मलशील रहा अक नहीं ॥
ऱसा उपायअवकीजेसोय । ज्यों शीलवंतिजानैसवकोय ८२७
मरगाहनी लई बुलाय । चदरेखा लाछि दई पठाय ॥
ुदर शील परीक्षा करो । मेरे मनका संशय हरो ८२८
मर गाहनी चाली धाय । सुदरि पासै पहुंची आय ॥
लकतिवात कहे संभास । विलखवदनदेखीआवास ८२९
हे लाछि सुंदर सुन वयन । लेभिगार पखालो नयन ॥
धुदत्त समाना राय । भविसदत्त दीना निकलाय ८३०
ोगोभोग विलसो संसार । वाढ़े लछि सुखलेहे जु अपार ॥

१ छुपी हुई ।

सेठ पुत्र ये गुणहि विशाल । अरु सनमाना राय भोपाल ॥
हम इसकी मानैं बहु सेव । आदर भक्ति करैं हम देव८१४॥
पुरुष बुलाय चार तब लिया । कान लागि कर मंत्र जु किया ॥
रात समय तुम देखो जाय । गजपुर लोग क्या मंत्र कराय८१५
चार पुरुष बोले सो आय । करैं वीनती शीस निवाय ॥
नगरलोक जु अहिला राय । निज २ चिंत करैं घर जाय८१६
घर २ अंसु जलोली नार । घर २ चिंत करैं अधिकार ॥
धनवै सेठ रखाया राय । गजपुर लोगहु क्षण न सुहाय८१७
जो राजा इस छांड़े नाहि । तो हम नगर छोड़िकर जाहिं ॥
बहुत कोलाहल नगर मझार नरनारी सब करैं विचार ८१८
सरूपातणा मंत्र यह होय । वधूदत्तने किया जो सोय ॥
सुनीबात राजा नें जान । पंच बुलाय किया सनमान ८१९
तुमरे मनमें रुचे जो आय । सोई करो जु तुम्हें सुहाय ॥
बोले लोग सुनो तुम राय । भविसदत्त घर अपने जाय८२०
वधूदत्त को देहि निकार । स्यों जननी कीजे कढिहार ॥
धनवै सेठ सनमानो ताय । ज्यों परिजन आनंदै जाय ८२१

॥ दोहा ॥

भविसदत्त सन्मानिया । राय किया परधान ॥
देई सुमिता जान कर । दशमी संधि मिलान॥८२२॥

इतिश्री भविसदत्त को भोपालराय प्रधान करन सुमित्रा पुत्री का तिलक करन वर्णन वनवारी कृत दशम अधिकार सपूर्णम् ॥ १० ॥

---

१ राजा २-निकालना ।

११ एकादश अधिकार

॥ दोहा ॥

चंदप्रहुप जिन पय नमों, बनवागि शिरनाय।
ज्युं भविसदत्त यश विस्तरैं, शारद करौं पशाय ८२३

१५ मात्रा चौपाई ॥

तव राजा बोला जु सुजान। शीलवंत नारी परधान ॥
गुह्यंबात जानैं नहिं कोय। सो कीजे निश्चय मन होय ८२४
तव वणिवर मिलि बोले आय। शीलवत यह देख्या माय ॥
नाम लिये इस पातक झडें। दर्शन देख पाप झड़पड़ें ८२५
पुनि राजा बोला सो सार। एकवात तुम करो विचार ॥
मतकोई मुख जोड़े जाय। सज्जन दुर्ज्जन बातकहाय ८२६
मास एक वधुदत्त घर रही। निर्मलशील रहा अक नहीं ॥
ऐसा उपायअवकीजिसोय। ज्यों शीलवतिजानैसवकोय ८२७
चमरगाहनी लई बुलाय। चंदरेखा लछि दई पठाय ॥
सुंदर शील परीक्षा करो। मेरे मनका संशय हरो ८२८
चमर गाहनी चाली धाय। सुदरि पासै पहुंची आय ॥
मूलकातिबात कहै संभास। विलखवदनदेखीआवास ८२९
कहै लाछि सुंदर सुन वयन। लेभिंगार पखालो नयन ॥
वधूदत्त समाना राय। भविसदत्त दीना निकलाय ८३०
भोगोभोग विलसो संसार। वाढे लछि सुखलैहे जु अपार ॥

१-छुपी हुई।

मनका चिंता कारज भया। बधूदत्त निर्मल बैर लहा ८३१
यह बात जब सुंदरि सुनी। ताड़े नेत्र जु बिलखी घनी ॥
सति शिरोमणिचिंताजान। लाजहिकाज न होहिमान८३२
इतनाकाल करी मैं लाज। उलटा बचन जु सुनियेआज॥
राजा कैरे सु मेटै कोय। सांचतैं झूठ जो होय ८३३

॥ श्लोक ॥

गीते नादे पठे वादे। संग्रामे श्वसुर गृहे ॥
आहारे व्यवहारे च। अष्टौ लज्जा न कारयेत् ८३४ ॥

१५ मात्रा चौपाई ॥

कैवर लेहों भविस कुमार। कै दीक्षा में लेउं अहार ॥
लाज किये अब विनसैकाज। कहोंविरतांतरायसोंआज८३५
परिहसभरि उठि ठाढी भई। चंदरेखा सों आखत भई॥
तुमरे नगर अन्याय जु होय। सांच झूठ ना जानैकोय ८३६

दूती उवाच

बोलइ दूतीनि सुन जु गंहिल्ल। योवनरूपलच्छि तिन मिल्ल॥
सांचर विलासि मनलाहा लेय। योवननिष्फल जाननदेय ८३७

सती उवाच

तो कहुं दीयो दंई है सराप। पूर्व जनम तैं कीयो पाप ॥
धवले केश खिसे थणहार। विढवहि पाप बुढौतीवार ८३८
जे पर पुरुष करावै धनी। गति मति जाति हंडहि आपनी॥
जे परत्ती वे राचहि कंत। राखे तिन कौ नरक पडंत ८३९

१-घात २ पति ३-क्रिसमत ४-छाती ५-सचयकरना ६-बुढ़ापा ७ कौन

दूती उवाच

हौं धुर धर्मिणि सुन हे बाल। परउपकार करूं सदकाल ॥
दोई चित्त एकठे करौं । अह निशिं पीड़ा पराई मरौं ८४०

सती उवाच

कंथ विपोग देह मोहि लीन । ना यह बात हिये हम लीन ॥
अवरे नारि नगर में घनी । तिन्हें सुनाउं बात आपनी ८४१

दूती उवाच

जेती नारि नगर में रहैं। तेती मोसौं आवन कहैं ॥
दूती वधूदत्त मोहि दिखाउ । वह काहुऊपर धैरं न भाउ ८४२

सती उवाच

दूती राचहिं जे परकंत । मनकर निहचै नैन रमंत ॥
जे जो कोटि वरप तप करै। तउ सु नारि अध अवतरै८४३
सुंदरि कड़खी चली रिसाय । कहौ विरतांत रायसौं जाय ॥
चंद रेखा सु राय पै गई । शीस निवाय सु विनवत भई ८४४
यहतो सुंदरि शील प्रमान । इसका बहु तुम राखो मान ॥
इसके मन बसै भविस कुमार। अवर पुरुषसौंनाहींप्यार ८४५
सती शिरोमणि गुण भंडार । ताहिममान अवर नहिंनार ॥
जवतक सती न देहि सराप । तव सनमानकरोतुमआप ८४६
सुंदरि आवत देखी राय । पुत्रि २ करि लई है बुलाय ॥
बहु सनमान रायनें किया । कणय सिहासनवेटनदिया ८४७
तहं बैठा भविसदत्त कुमार । लोचन भर देखा भरतार ॥
आनंदि सुंदरि मनके भाय । अंतेवैरमें लई जु बुलाय ८४८

१-दिन २-रात ३-सोना ४-रणवास ।

बहु सनमान अंतेवर किया । ऊंचा आसन बैठन दिया ॥
सब अतेवर अस्तुति करैं । धन्य २ मुखसें उचरैं ८४९
धन्य कोख जिस उपनी नार । धन्य जन्म पाया भरतार॥
धनवै सेठ समान्या राय । देय वस्त्र भेजा पहराय ८५०
वधूदत्त स्वरूपा माय । दोनों देश निकासा जाय ॥
जो कुरुजंगल देश में रहो । तो अपनाजीवन मति लहो ८५१

॥ दोहा ॥

जननी सहि वधुदत्त को, घर से दियो निकार ॥
भवीसाण यश परगटो, ग्यारमी संधि विचार ॥८५२॥

इतिश्री वधूदत्त स्वरूपा देशनिकाला धनवैसेठ सनमान करन भवसाण रूपा जग प्रगटन वर्णन बनवारीकृत ग्यारहवा अधिकार सपूर्णम् ॥ ११ ॥



१२ द्वादशम् अधिकार

॥ दोहा ॥

चंदपहुप जिन पय नमों, बनवारी शिरनाय ॥
जिम सन्मानी कमलश्री, शारद करों पसाय ८५४

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

कमलश्री सो लेई बुलाय । बहु सन्मानी गजपुरराय ॥
पांचसै वाणिवर लियेहैं हंकार । दोष क्षमायाभविसकुमार ८५५
घर २ में किया मंगलचार । घर २ तोरण बांधे बार ॥
पूत बहू नें किया संभास । करि मंगल लेगई जु अवास८५६
कमलश्री एकाते गई । भवसाणरूव बुला तब लई ॥
कुंकुम उबटण अंग लगाइ । हेमसंलिल अंगोलकराइ ८५७
रतनजड़ित सो पहिरे हार । हावभाव सब कामनि सार ॥
कानों कुंडल हीरा लाल । मांगह मोती सुरगपवाल ८५८
कटी सूत्र सोहै बहु भांत । नाग मुद्रिका सोहै हाथ ॥
वीसो अंगुलि नवेसत देय । पहुपमाल उर ऊपर लेय ८५९
शशिवदनी तंवोल कराय । पुन सासू के लागी पाय ॥
कमलश्री सु उछंग भरिलई । बहुत आशीश बहूको दई८६०
दे आशीश आनंदी माय । भविसाणरूवा मंदिर जाय ॥
बैठा देखा भविस कुमार । चरणों लागिरही सो नार ८६१
नैन जलोली हिया भराय । धन्य दिवस तुम देखे पाय ॥

१-पानी २-नहाना स्नान करना ३ घुगरूदार अगूठी ।

मुझसी दुख हारी नहिं नार । दुखका भाजन हुइ संसार८६२
जलभर आओ नैन कुमार । भो सुंदरि तू हिया सहार ॥
गये दिनों अंजल जुलि देय । अवधन योवन लाहा लेय८६३
सुंदरि बोली कर अति गाहु । विनती एक सुनो तुम नांहु ॥
कवन दोप लाया हम नारि । हम पर व्याही राजकुमारि ८६४
पुरुप भरोसा कीजे नांहि । कहिहै और कपट मन मांहि ॥
मुखही अमृत बोलै सार । हिरदे कपट धरै जु अपार ८६५
अवरे कहै अवर चित्त होय । इनकी सार न जाने कोय ॥
हम बाला छोड़ा परिवार । तुमसों नाथ कियो व्योहार ८६६

॥ दोहा ॥

कंपइ रंभा पति जिव, दुखि भरि लय उश्वास ॥
निठुर दया न ऊपजै, सुने वचन भवितास ८६७

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

रहि २ नारि न आगै रोय । जो तू कहे करूं मैं सोय ॥
दृढ़ मन कर सुन मेरे वैन । तोहे सुमरजू वासर रैन ८६८

सुदरि उवाच ॥

करहू सीस कंथ तुप तनी । जबलग जीऊं तेरी धनी ॥
जिसबिनयुगइक घड़ीविहाय । तासुवियोग सहाकिमजाय८६९
छोड़े माय बाप सब लोग । तुमसों आय करो संयोग ॥
अब बस कछु हमारा नाहिं । सोई करो जो है मन माहिं ८७०
भविसदत्त तब बोला सुजान । मुझसुंदरि जिन शासन आन ॥
तेराहो बहु राखों मान । दे आदर मैं करों परधान ८७१

१-गाढा २-नाथ ।

सुमिता सेव निहारी करै। कर सेवा विनती सो धरै ॥
बहुत भांति समझाई नार। मिष्ट वचन बोलै सुकुमार ८७२
सुंदरि उठाय उछंगहु लई। कस्तूरि परिमल अंग सुदई ॥
मुख तंबोल देत सो भया। लोचन आंसू पूंछत भया ८७३
मधुर वचन कर सीची वाल। सेज आरूढ़ा कुमर विशाल ॥
भोगै भोग रहै जु आवास। रति मंदिर सो करै विलास ८७४

॥ दोहा ॥

बहुते दिन की बीछुरी, सुंदरि लही कुमार ॥
अति हर्षित मन ऊपजा, बाढी रति जु अपार ८७५

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

कमलश्री सो रहै अवास। करै सु धरम ध्यान संभास ॥
सुरत पंचमी सुखकी खान। चिंतविया उजमनसोजान ८७६
पंच जिनालय करि इकसार। अती उतंग धवल विस्तार ॥
पंच चौवीसी पंच भिगार। पंचकलश सोहैं जु अपार ८७७
पंच चदोवे तोरण पंच। आगम ध्यातम पोथी पंच ॥
पच चमर घंग पंच जान। झलरि पंच शबद सुवखान ८७८
जिन-हरि जिनहरि पूजाकरी। जिनहरि जिन परतिष्ठाकरी ॥
देश देशके श्रावक लोग। जिन वदनआये संजोग ८७९
तिनहिं समान करी ज्योंनार। वस्त्र गणित को जानै सार ॥
कर विनती समद्या सव लोग। दीनादान सुपात्राहिजोग ८८०
कमलश्री चिंता मन धरे। पुत्रखेड सो आगै करै ॥
भविसदत्तको लिया वुलाय। सब विरतांत कहा समझाय ८८१

१-जैन मंदिर २-कौन।

भेजि मोवाल आई इसथाय। मन न मानै कीजे काय ॥
कुल दीपक तू जगमें भया। बहुसनमान रायनें किया ८८२
अब वढारो आपना वंश। करै केल जिम सरवर हंस ॥
जिम भंडारी राखै भंडार। ज्यूं मैं रखा तू पुत्रमाधार ८८३
अब समध्यान जु निजघर आय। करहि राज तू मनके भाय ॥
पाछे मैं दुख पाया घना। जौन समप्या सुंदरतना ८८४
कमलश्री सो पीहर चली। मन बिसमादु हिये कलमली ॥
भवसणरूवा चिंता मन माहिं। हमभी साथ तुम्हारी जाहिं८८५
सौति दुःख हो किमकर सहों। पाइ मूलहु तुम पै रहो ॥
कमलश्री बोली जो सुजान। तू कुलमडन सुनहि सुजान८८६
जै तू मेरा कहा सुनेय। ऐसी सोच चित्त नहि देय ॥
भवसणरूवा बोली संमासु। बिनती एक सुनो तुम सासु ८८७
गई सौति दुख तुमही करो। मन बिसमाद बहुत तुम धरो ॥
हों किम राखों हिया सहार। मुझ ऊपर आवै राज कुमार८८८

॥ दोहा ॥

सौति भूंड़ी चून की। आधा मांगइ पीव ॥
सौकनतें सूली भली। तुरत निकालै जीव ॥८८९॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

रायसुता बहु खरी पियार। हों परदेसनि तुमहि मझार ॥
हों बसपड़ी तुम्हारे आय। जग साधारन है तू माय८९०

॥ दोहा ॥

कामनि दुखतो है घना। वरनत अंत न होय ॥
जेसा दुख है सौति का। ऐसा अवर न कोय ॥८९१॥

पिय परदेशै ही भला । जै घर खौति न कोय ॥
घरही होतां सरीकनी । अंत जो दुखिया होय ॥८९२॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

कमलश्री सो पीहर गई । भवसणरूवा साथ कर लई ॥
आवत देखी कुमरि साधार । महिला जाय जनाई सार८९३
मामशाल घर गई तुरंत । हाव भाव कीये विकसंत ॥
नगर लोक सब देखन गया । नर नारी को उछाह जु भया८९४
नानी लाछि महोछव किया । कुल बहू जो पयाणा दिया ॥
आरता कर मुख चूंबा जाय । धन्य कूख जिस उपनी आय८९५
हरि बल सेठ अनद्या वीर । मन उछाह किया अति धीर ॥
धन पुत्री तू तिय साधार । अपना तैं राखा व्यवहार८९६
मन अपने धीरज अति किया । तो तुझ विधना ऐसा दिया ॥
अब मन अपने मानो रली । सब मिल करें सेवा तुम तनी८९७

॥ दोहा ॥

धीरज बड़ा संसार में । कीजो चतुर सुजान ॥
रोप मरै रंस ऊपजे । ज्यों प्रगटे शसि भान ॥ ८९८
सम्मन धीरज के धरे । दोइ मण कुंजर खात ॥
स्वांन टूक के कारणे । द्वार द्वार बिललात ॥ ८९९

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

सुनीवात धनवै सु विशाल । कमलश्री जु गई पितुशाल ॥
भविसदत्त बुला तबलिया । वैसारि पूतातिन ऐसा किया ९००
लवनकाज तुम जननी किया । संगवहू ले पयाणा दिया ॥

१ क्रोध २ आनन्द ३-नाम एक कवीका ४-हाथी ५ कुत्ता ६-बैठारकर ।

विन कारणसों गई पिवशाल । ऐसा कामकिया इन वाल१०१
राय समान संग हम दई । कवन बात अब मनमें ठई ॥
लज्जावंत हुआ मनमाहीं । तातहि उत्तर दीना नाहीं १०२

॥ श्लोक ॥

असंतुष्टा द्विजानष्टा । संतोपै न महीपाति ॥
सलज्जा गणिका नष्टा । निर्लज्जा च कुलांगना॥१०३॥

१५ मात्रा चौपाई ॥

कमलश्री की सखी सुजान । कनकमाल है बुद्धि प्रवान ॥
सेठि वचन सुन हिरदा दहा । सहि न सकी तिनउत्तरदिया१०४
अहो सेठ तुम नगर प्रधान । राय भौपाल राखै सनमान ॥
निज कारण नहिं हिये धरेय । कमलश्रीको दोप जु देय १०५
कवन काम तैं रूढा किया । घरहु निकारी दुख तिसदिया ॥
घने समच्छर बीते जाय । कवहींबात न पूछी आय १०६
कवनकाज अब उससे रहा । रहो अकेले सहारो हिया ॥
धनवै बोला नैन गहभेर । भो सुंदरि तू क्षमा अब करे १०७
कणकमाल लई जो बुलाय । कमलश्री पै दई पठाय ॥
चलत २ सो आई तहां । कमलश्री है पीहर जहां १०८
शीस निवाय सो लागी पांय । विनती एक करोंहों माय ॥
भविसदत्त समान्या राय । दई जु सुमता मनके भाय १०९
अवगरवी तुम देश में भई । ऐसी वात क्यों मनमें ठई ॥
तव रिसाय कर वोलीसोय । मरमा न जानै तुममें कोय ११०
विन अपराध निकारहु दई । सौति सरूपा व्याह तिनलई ॥
राच्या कीया सो भोग विलास । मेरी उन सव छोडी आस१११

पुत्र सनेह न मनमें धरा । सोतिहि लाग सबै बीसरा ॥
कणकमाल तू गुणहि गंभीर । क्योंनहिं समझैसलकेतीर९१२
तू बुधवंत गुणहि साधार । जो आखों सो मानो सार ॥
एक नारिवह देखि न सक्या । घरह निसारिअकेला थक्या९१३
क्यों ना सरूपा लेहु बुलाय । कामभोग तुम विलसो जाय ॥
कौन काम अब हमसे रहा । मनह विसारी कालवहुगया ९१४
कणकमाल मन हंसी सुजान । कमलहि उत्तर दीनों तान ॥
धनवै सेठ देश परधान । रायभोपाल राखै तसुमान ९१५
सुंदरि नाथ तिहारा होय । किम आज्ञा तू मेटै सोय ॥
युक्त अयुक्त नाथ जो कहै । अंगिकार कर सुंदरि रहै ९१६
रायभोपाल पठवि सन्मान । क्यों आई पीहर तू मिलान ॥
ऐसी बात तू शोभ न लहै । कणकमाल कमला सों कहै ९१७
तब सुंदरि बोली जु रिसाय । कवन बात तैं जंपी आय ॥
शवल कहै प्रेम सहि होय । मर्मबात नहिं जानै कोय ९१८
विनकारण दुख मुझको दिया । भाग सुहाग जु मेरा लिया॥
इतना काल विरह दुख सहा । बहुतकाल मुझहिरदा दहा ९१९
दीया दुःख सौति के काज । सो परिहस बीसर क्यों जात ॥
बोले बोल रहैं मन माहि । मूढ न समझे क्योंकर जाहिं९२०
अब किन मानै सौतिसों रली । करै सेव सबही सों रली ॥
हम सेती नाहीं को काज । सौति से भोग भोगवो साज९२१
कणकमाल मुसकानी आय । मुखअंचलदे हंसती जाय ॥
इतना माय न कीजे रोस । पूर्व करमको दीजे दोस ९२२
कणकमाल धनवै घर गई । समझ बात सो विनवत भई ॥

धनवै सेठ उठि चाला धाय । कमलश्री घर पहुंचा जाय १२३
सासु लाछि को कीया जुहार । बैठा जाय अवास मझार ॥
सासू सेती विनवत भया । मोपर क्षमा करो तुम मंया १२४
कणकमाल गई सो धाय । सगली बात कही समझाय ॥
मुझमति खोटी उपनी आय । कमलश्री दीनी विसराय १२५
मेरा दोष क्षमो तुम आज । कमलश्री को भेजो साज ॥
पिछली बात तुम देह विसार ।ज्यों यश बाढ़े इस संसार१२५॥

॥ दोहा ॥

हम आनंद जु अति भई, तुम देखत सुकुमार ॥
अपनी नार समझाय कै, लेय जाहु घर बार १२७
सुंदरिका मुख देख कर, आनंदा मनमाहिं ॥
मधुर वचन बोलत भया, ज्यूंमच्छेर गलजाहिं१२८

१५ मात्रा चौपाई ॥

अब सुंदरि तू क्षमा करेय । मेरा कहा तू चित्त धरेय ॥
जे अयुक्त मैं पूरब किया । अब सुंदरि तु सहारो हिया१२९

॥ श्लोक ॥

उदयति यदि भानु पश्चिमेदिग्दिशायां
विकसति यदि पद्मं पर्वताग्रे शिलायां ॥
चलति यदि सुमेरु शीततांयाति वह्नि
न चलति कदाचित भावनी कर्म रेखा॥ १२९ ॥

१५ मात्रा चौपाई ॥

अशुभकरमतुमउपजाआय । मैं सुंदरि अवगुणि तुम जाय ॥

१-माता २-क्रोधमान ।

पाछै दुष्ट सरूपा लही। मोहा चित्त शुद्ध सब गई ९३०
शीलवती बड़ि भाग न सोय। तुम समान नारी नहिं कोय ॥
कंथवचनसुनाहियागहभराय। मुखअंचलदे हंसती जाय ९३१
कबही हंसै कबही जु रिसाय। हावभाव सु दिखावै जाय ॥
कणकमाल लाछी पैं गई। कमलश्री आवासैं भई ९३२
धनवै आरूढा सेज गहीर। सुंदरि मूढ बैठी धीर ॥
पुव्व लीलामन कड़खी आय। कामवाण रस वेधा जाय ९३३
पानकुसुम नहिं सुंदरि लेय। मन विसमाद न दूर करेय ॥
तब धनवै बोलो जो सुजान। अब सुंदरि तु राखौ मान९३४॥
हों तुझपीहर आया आज। चलो भवन विलसहिं निजराज ॥
बहुती हठ सुंदर जब किया। धनवै सेठ विसमादा भया९३५॥
कमलश्रीअतिकिया जब गांहु। उठिचला तब घरको नाहुं ॥
तबसुंदरि चित गह गह भई। हस २ सो विनवत भई ९३६ ॥

॥ दोहा ॥

हांसी मोरे गल पड़ी, फिर नहिं वडसी आय ॥
ढीली गांठ न छोड़िये, मतिपिय संभल जाय॥ ९३७ ॥

॥ प्राकृत गाथा ॥

जाबुद्धि रोस भरोसा साबुद्धि सायणा नाऊाइव ॥
रोसे परमल लहीयं पछार साइणे होइ ॥९३८॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

उठहि उठहि अजुगत यह नाथ। कौन पियार करै हम साथ ॥
गहिकर शीस उठाया नांह। सुंदर मनका छोड़ा गाहु ९३९

१-हठ २-पति ३ पति।

हुताहार तिय गल मंझार । उठावत पड़ा कंथ गलधार ॥
हस्त हस्त आई सो धाय । कणकमाल गहि लागी पाय ९४०

॥ प्राकृत गाथा ॥

आधे गोद तिहाई सेज । छठा अंस भूमि पडे गेज ॥
कहु कंत केते मोतिहोय । तिय तीस गिणलेहु सोय९४१

॥ श्लोक ॥

अथायुधं वणकराधं । प्रभाते मेघ अडंबरं ॥
स्त्री पुरुष विरोधानां । चारों निष्फल जायते ९४२

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

नारी पुरुष एकठे किये । लेयं उछंग सेज पै दिये ॥
भो सुंदरि नहिं कीजे रोस । अति बिसमाद ऊपजै-दोष९४३
तुम घर आया सेठ प्रधान । अब इसका तुम राखो मान ॥
लाज धाय की बोल न सकी । नीचा मुखकर सुंदरि थकी ९४४
गाढ आलिंगन दीना कंत । काम भोग दोनो बिलसंत ॥
बढा सनेह आनंद जु भया । शोक संताप दूर सब गया ९४५
रैन सवाई भवन मझार । काम भोग बिलसे वर नार ॥
उठि प्रभात जु ठाढा भया । सास लाछि सों बिनवत भया९४६
हमको आज्ञा दीजे माय । कमलश्री को भेजो जाय ॥
सुनकर बात आनंदी माय । सबही परियण लीया बुलाय९४७
कमलश्री को किया सिंगार । भवसणरूवा साजि वरनार ॥
धनैै सेठ उठा जो सुजान । पट हस्ती आरूढा आन९४८
अंबारि साज अंतेवर चला । नारि पुरुष बहु साथे मिला ॥

१-हाथी का हौदा ।

नगर उछाहा मनके भाय । पाट पटंबर खरे दिपाय ९४९
घर घर कामनि गावैं वाल । घर घर मोती वंदर वाल ॥
पंच शबद बाजे जो निसान । आनंद भेरी दीनी पयान ९५०
आय पहूंचे निज घर बार । मंगलचार किया सब नार ॥
कमलश्री तहं गई जु अवास । बिलसैं परमल भोग बिलास९५१
भवसाणरूव मानै बहु रली । रति मंदिर सोहै अति भली ॥
पुरजन लोग सु सेवा करैं । हाथ जोड़कै बिनती धरैं ९५२
निज २ मंदिर रहैं सो जाइ । काम भोग बिलसैं सुर राय ॥
गये घने दिन केल करंत । काम भोग लीला बिलसंत९५३

॥ दोहा ॥

कमलश्री अरु कुल वहू । दोनों भई परधान ॥
सब पर चारहु स्वामिनी । पुन्यहु कारण जान ॥९५४
कमलश्री सनमानिया । धनवै सेठ सुजान ॥
निज मंदिर आवत भई । द्वादश संधि प्रमान ॥९५५

इतिश्री धनवै सेठ कमलश्री आगमन प्रधान पद प्राप्ति वरणन
धनवारी कृत द्वादशम अधिकार सपूर्णम् ॥ १२ ॥



१३ त्रयोदश अधिकार

॥ दोहा ॥

चंदपहुप जिन पय नमों, बनवारी शिरनाय ॥
बधुदत्त ज्यो रिसभया, शारद करों पसाय ९५६

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

इत्थंतर जु कथंतर भया। बधूदत्त निकाल जु दिया॥
चलत २ वो गया सो तहां। पोदनपुर का राजा जहां ९५७
कछुक भेट ले आगे धरी। हाथ जोड़ के विनती करी॥
अचरज एक सुनों तुम राय। जो कुरुजंगलदेश विहाय ९५८
राय भौपाल राज तहां करे। धनवै सेठ मंत्रिपद धरे॥
भविसदत्त ता सुत वरवीर। वणज गया सागर के तीर ९५९
आनी कन्या रूप सुजान। जिस देखे लोपै शसिभान॥
कन्या कुमारीबहु अच्छैं राय। देखत सुर विहलंघन जाय ९६०
आने हीरे पदारथ लाल। सुमिता धीय रूप सुरसाल॥
वणिक जोगदीनी जु कुमार। रायभौपाल न करियाविचार ९६१
राजकुमरि सोहे घर राय। वणिक पुत्र क्यों ब्याहै आय॥
सुनी बात पोदनपुर राय। चमका चित्त सो मंत्र कराय ९६२
इथंतर गजपुर के मझार। गीतरु नाद करैं वरनार॥
एक दिवस भौपाल नरिंद। कणय सिंहासन बैठाइंद ९६३
धनवै सेठ बुलाया राय। कर आदर आसन जु दिवाय॥
एक बातहों पूछूं तोह। निज हिरदे तू देखो जोह ९६४

पीछै दुष्ट करै तैं काज। सब अपनी तैं खोई लाज॥
जेते काम अयुक्त तैं करे। क्षमावंत हम तुमपै सरे९६५
अबकी वार जै अयुक्त कराय। तो तुम सेठ नहीं तुम रांय॥
कुल मंडन यह नंदन भया। कमलश्री उर उत्पन भया ९६६
भले जोयंसी लेहु बुलाय। तोरण मंडप साजो जाय॥
कणयथंभ रोपि विचि धरो। मंगलचार कुमरका करो ९६७

॥ दोहा ॥

व्याह सुमिता जानि कैं, जोसी लिये बुलाय॥
शुभ लगन देखत भये, घड़ी महूर्त गणाय ९६८

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

अथानंतर सुनो सब कोय। अवर एक कथंतर होय॥
पोदनपुर युवराज कुमार। आया तिसका दूत दुवार९६९
प्रतीहार सो आया धाय। करै वीनती शीस निवाय॥
युवराजिया राय अति बली। पोदनपुर विलसै मनरली ९७०
चित्रांगदूत तिन भेजा राय। सिंहद्वार सो बैठा आय॥
वेग बुलाय सुभीतर लिया। कर सन्मान सुआदर किया९७१
पूछी क्षेम कुशल सब राय। समाधान पूछै समभाय॥
किहकारण आगम तुझ भया। हमकोकवन संदेशा कहा९७२
तब चितरंग बोला शिरनाय। सुनहु वीनती गजपुर राय॥
जे राजा राजै परधान। बलवैरी तिन गालामान ९७२
वैरी तोड़ किये क्षय काल। करै राज निहकटक साल॥
संग्राम भेरि जो बाजै राय। वैरी दूर पताले जाय ९७४

१-प्रधान २ ज्योतिषी ३ द्वारपाल।

कोइ न दीसै देशहि माहिं। जो खंधार दल रोकै जांहिं।
दलबल साज एकठे हुए। कुरुजंगल दिशि पयाणा दिये९७
भलेभले भूपति सुराय। छत्रधार चाले सब धाय।
हों तुझपासै भेजा नरिंद। सुनो वीनती शसि हरचंद ९७
धनवै सेठि मंत्री परधान। भविसदत्त तिस पुत्र सुजान।
कन्या दीपांतर की सोय। पुव्व मांग पोदनपुर होय ९७
आने हीरे मोती लाल। देखत ही मोहा भूपाल।
सुमताधीय सो खरी पियार। बनिक जोगदीनी वरनार ९७
ऐसा अजोग करै नहिं कोय। जैसो भोपाल नरिंद जु होय।
पोदन पुरहि बात ये सुनी। राय रिसाय उठा ततखिणी ९७
ले दोउ कन्या चलो तुरंत। करहु राज गजपुर विलसंत।
बचन चितरंग सुने तब राय। धनवै सांमहु जोवै राय ९८०
भविसइ मुख सो देखत भया। मन विसमाद बहुततिसथया॥
रोपवंत सो बोला राय। दूत चित्रांगद लियो बुलाय ॥९८१॥
बाहर नगरि उतारा देहु। जींवण तींवण सांवलं लेहु॥
बैठ कुटंब मंत्र हम लेंय। तो तुमको हम उत्तर देंय ९८२
बाहर नगर ले गये तुरंत। चित्रांगदूत उतारा विगसंत॥
रायभोपालसब लियेबुलाय। बैठिमता तिन किया जुउपाय९८३

॥ दोहा ॥

राजा मन चिंतत भया, कीजे कवन उपाय ॥
सुमता दीनी भविसको, और पुरुष नहिं भाव ९८४

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

सभा मांडि बैठा जु नरिंद। मंत्रि बुलाय लिये शुभचंद ॥
करो मंत्र जिम जगजस होय। चित्रांगहि दीजे सोय ९८५

॥ सुमता उवाच ॥

पिय सुंदरि बोली जु सुजान। बीता काज वचन परमान ॥
अब क्या मंत्र करो तुम राय। फिर पाछे क्या दीया जाय९८६
धनवै सेठ लीया जु बुलाय। करोमंत्र क्या कीया जाय ॥
बोला धनवै सुनो इम राज। मनका चिता कीजे काज९८७
ऐसी बात चिंत नहि धरो। राज निकंटक अपना करो ॥
जो दल आवै पोदनपुर राउ। तो उसका भानों भडिवाउ९८८
लोहजंघ बात जब सुनी। शीस धुना बोला ततपिणी ॥
कवनमत्र तुम कीया आज। ऐसे मंत्र जु विनशै काज ९८९
राजकन्या सोहै घर राय। दीजे कुमरी सुखके भाय ॥
करो राजतुम विलसो भोग। निहकारण क्या करो वियोग९९०
लोहजघ बात जब कही। प्रजंलाराय अगनि तन दही ॥
बोले राय भरा अति रोष। चित्रांगदूत क्या दीजे दोष ९९१
स्वामि संदेशा कहा जिन आय। दीजे उत्तर सो फिरजाय ॥
लोहजंघ नें जंपो असार। ऐसे वचनकहे जु गवांर ९९२
कोइ न विढती लीनी जाय। कै चित्राग मिलीया धाय ॥
ऐसे दुरवच बोले न कोय। इन बातहु शोभानहिकोय९९३
लोहजंघ बोला असराल। आया देखो परलैकाल ॥
मेराकहा सुनो तुम नाहिं। फिर पछितावा है मनमाहिं९९४

१ क्रोध।

चतुरंग सेना लेहु बुलाय । वेगहि करो निशाने घाय ॥
ज्यों जीतें पर चक्री जाय । सो कुरुजांगल आधा खाय१०१३॥
भविसदत्त बोला शिरनाय । विनती एक सुनो हो राय ॥
मुझ को आज्ञा दीजे राज । रण संग्राम करों शुभ काज१०१४॥
भविसदत्त नें बीड़ा लिया । जैजेकर सब मंडप किया ॥
तब राजा लाग्या सिख देन । मनधर बात सुनो तुम वैन १०१५
दई चरित्र नाहिं जाना जाय । रण संग्राम कों जीते आय ॥
दल संभार बुरी है झाल । कायर पैठि जाहिं पाताल१०१६॥
जे तुझ अणी मुडे सुकुमार । तो हम लाज न रहै संसार ॥
तो बोला भविसदत्त कुमार । जे मैं धानि लहा तुमसार१०१७॥
रण संग्राम पीठ नहिं देउं । हां को सुभट जगत यश लेउं ॥
परचक्री आन लगाऊं पाय । तो मुंह दिखाऊं तुझ को आय१०१८
मन अपने शंका नहिं करो । दल बलसाज तुम आगै धरो ॥
सुने वचन राजा भौपाल । मन आनंद हुवा तिहंकाल१०१९॥
वेग निशाने डंका दिया । चतुरंग बल जु साज कर लिया ॥
अनंतपाल देखा जब राज । रण संग्राम चढे ये साज१०२०॥
विलख वदन चित्रांग पै गया। सब विरतांत कहत जु भया ॥
बैठा क्या तू कारज करो । बेग पयाण पोदनपुर धरो१०२१॥
धनवै पुत्र खरा जु पियार । राय सुता तिस दीनी सार ॥
यह सुन मुझ को आयो रोस । हों भी मिला जु तिहारे कोस१०२२
तब चित्रांग उठि ठाढा भया । अनंतपात सो आखत भया ॥
तुमतो यहां रहो थिर राय । देखों कहा कहै हम राय१०२३॥

तुमतो रहो खंधार मझार । हों नरिंद मिलि आऊं सार ॥
गयो चित्राग जु पुरहि मझार। झट जु लिया भीतर हकार१०२४॥
दे आसन बैठाला दूत । भो नरिंद्र बोला संजूत ॥
पोदनपुर राजा जो सुजान । धर्मवत है बुद्धि परवान१०२५॥
पाती हमरी ले तुम जाहु । हम तुमही कछु रोप न आहु ॥
जो कन्या इच्छी इसवार । सो हम दीनी भविस कुमार१०२६
अब किम फिरै वचन सु मुरार । बुद्धिवंत तुम लेहु विचार ॥
चित्रांगदूत बात जब सुनी । रोषवंत बोला ततपिनी॥१०२७॥
अहो नरिंद तुम बुद्धि परवान । कन्या काज क्यों होहि अयान ॥
देकर सुमिता कीजे काज । ले भुजो निष्कंटक राज १०२८
राय भौपाल उठा जु रिसाय । इस पापी को दो निकराय ॥
इसकी जिव्हा काटो आज । सुमता नाम लिया इनसाज१०२९
नाक छेद शिर मुडन करो । मुख स्याही खर ऊपर धरो ॥
नगरी माहिं फिरावो जाय । ऐसी बात कही इन आय १०३०
तब धनवै बोला सतोप । दूतहु पै नहिं कीजे रोप ॥
दूतहु राय न मारे कोय ।इन बातह तुम अपयश होय१०३१
निरवाट दूत किया परिहार । गजपुर बाहर दिया निकार ॥
चित्रांग दूत लोहजघ राय ।विलख वदन हुइ चाले धाय१०३२
चलत २ सो पहुचे तहां । पोदन पुरका राजा जहां ॥
लोह जंघ तब करी जुहार ।पूछै राय तुम कहां लाड यार१०३३॥
राय भौपाल जु गरवा घना । हमरी बात न मानै कना ॥
तुम ऊपर जु पयाना किया । भविसदत्त साथ कर लिया१०३४॥

१, गधा ।

राय कुरुजांगल रिस है घनी । आन न मानैं तुमही तनी ॥
धनवै पूत बांधे हथियार । बोलै बोल खरे हठियार १०३५॥
दलबल साज चलो तुम आज। मन बांछित निज कीजे काज ॥
भानो भडवाउ वाणियां तना।सुखसों राज करो आपना१०३६॥

॥ दोहा ॥

पोदनपुर दल साजि कै । चले सुभट उठि धाय ॥
अनंतपाल आगै चला । सेना लई बुलाय ॥ १०३७॥

रोड़क छंद

करिवि पयाणउ अनंत महा भट्ट चलिउ ।
समुहुज्झ पड़ बालि भयुलाज्झ लियउ ॥
फटो जलहर कुंभ धार तृणि दीयं ।
ले आइ तहँ अग्नि धूम संजु गति डर्यं ॥ १०३८ ॥
मुंडा सीर नरन कटउ हाथ कपाल जिसु ।
समहु होवइ छीक पयाणो करति तिसु ॥
तृण तुप चरम कपास का दम गुडल वणं ।
अनंत चलत नगरहु दीठे ऐस वणं ॥ १०३९ ॥
प्रथम मजल चालंत तिस सेना पड़ो करइ ।
नाइक वाज्झ मालऊ वती अनुसरइ ॥
वामो काला विपहर फण भौं सोइ णइ ।
शुक वृक्ष चढि योगिनी बोलई दाहिने ॥ १०४० ॥

॥ दोहा ॥

सवन शकुन नहिं मानही । चढ़ा गरव अति वीर ॥
कज विनाशन अवसेरे । पुरुषहि हिंगमइ तीय ॥१०४१
चित्रांगदूत जिम आइया । अनंत गया जु रिसाय ॥
सेनापट भविसहु दिया । त्रयोदश संधि विहाय ॥१०४२

इतिश्री भविसदत्त सेनापट्ट मिलन लोहजंघ जाना चित्रांगदूत
आवन वा जाना वर्णन बनवारी कृत त्रयोदशम अधिकार
संपूर्णम् ॥ १३ ॥



राय कुरुजांगल रिस है घनी । आन न मानैं तुमही तनी ॥
धनवै पूत बांधे हथियार । बोलै बोल खरे हठियार १०३५॥
दलबल साज चलो तुम आज। मन वांछित निज कीजे काज ॥
मानो भडवाउ वाणियां तना।सुखसों राज करो आपना।१०३६॥

॥ दोहा ॥

पोदनपुर दल साजि कै । चले सुभट उठि धाय ॥
अनंतपाल आगै चला । सेना लई बुलाय ॥ १०३७॥

रोड़क छंद

करिवि पयाणउ अनंत महा भट्ट चलिउ ।
समुहुज्झ पड़ बालि भगुलाज्झ लियउ ॥
फटो जलहर कुंभ धार तृणि दीयं ।
ले आइ तहँ अग्नि धूम संजु गति हर्यं ॥ १०३८॥
मुंडा सीर नरन कटउ हाथ कपाल जिसु ।
समहु होवइ छीक पयाणो करति तिसु ॥
तृण तुप चरम कपास का दम गुडल वणं ।
अनंत चलत नगरहु दीट्ठे ऐस वणं ॥ १०३९॥
प्रथम मजल चालंत तिस सेना पड़ो करइ ।
नाइक बाज्झ मालऊ वती अनुसरइ ॥
वामो काला विपहर फण भौं सोइ णइ ।
शुक वृक्ष चढि योगिनी बोलई दाहिने ॥ १०४०॥

॥ दोहा ॥

सबन शकुन नहिं मानही । चढ़ा गरब अति वीर ॥
कज विनाशन अवसरे । पुरुपहि डिगमइ तीय ॥१०४१
चित्रांगदूत जिम आइया । अनंत गया जु रिसाय ॥
सेनापट भविसहु दिया । त्रयोदश संधि विहाय ॥१०४२

इतिश्री भविसदत्त सेनापट्ट मिलन छोहजघ जाना चित्रांगदूत
आवन वा जाना वर्णन बनवारी कृत त्रयोदशम अधिकार
संपूर्णम् ॥ १३ ॥



१४ चतुर्दश अधिकार

॥ दोहा ॥

चंदपहुप जिन पय नमों । बनवारी शिरनाय ॥
भविसदत्त जिम पट दिया । शारद करों पसाय॥१०४३॥

१५ मात्रा चौपाई ॥

इत्थंतर भोपाल नरिंद । कणय सिंहासन वैठा इंद ॥
सेन्या पट्ट भविस को दिया ।जैजैकार सब लोगहि किया१०४४
कच्छ देश पाती लिखी सही । दूत बुलाय तिन ऐसी कही ॥
पोदनपुरका रूस्या राय । हम पै कटकै कींनी जाय१०४५॥
जो आवै सो तिहारे मिलान । भिडो समेर परचक्री जान ॥
गया जो दूत जनाई सार । देकर पाती किया जुहार १०४६।
पाती बांच आनंदा हिया । वेग निसाने घाउ जु दिया ॥
दलवल साज सो आगे भये । रण संग्राम सो मांडत हुये१०४७॥
ठौर २ सो धुजा फरकंत । ठौर २ रथ चढे हैं तुरंत ॥
गजहस्ती हूये असवार । तुरी कुदावैं कंवर तुषार १०४८॥
रण संग्राम भिड़े सो जाय । पायक लाग्या पायक आय ॥
गयवर सों गयवर जो भिड़ैं । रथ सेती रथही सो जुड़ैं १०४९॥
कच्छ देश दौड़ा सो धाय । लोहजंघ दीना निसराय ॥
चित्रांगदूत का मान जु गला।सगली सेना हरि खुर दल्या१०५०
रणधर आगे भागे वीर । कोलाहल सेनाहु गहीर ॥

१-सैनापति २-लड़ाई करना ३ घोड़ा ४-खुशहोकर ।

अनी मुड़ी पोदनपुर राय । उलटा दल भाग्या सो जाय१०५१॥
मर्दन मान अनंतका किया। चित्रांग दूत मान गल गया ।
भागे सुभट छोड़ि रणभूमि । ठौर २ सो वे पड़े घूमि१०५२॥
चार पुरुष आ जनाई सार । जहां बैठा गजपुर सुकुमार ॥
हांक्या दल कच्छाह जुआय ।भाग्या दल पोदनपुर जाय१०५३
लोहघालि जे गये मतिमंद । ते घाले चित्रांग समुंद ॥
सुनी बात आनंदा हिया । जैजैकार कुरुजंगल किया१०५४
आनंद भेरि दिवाई राय । वेगे कीया निसाने घाय ॥
ईथंतर पोदनपुर राय । चार पुरुषही सार जनाय१०५५
लोहजंघ दल सजि लेगया । कच्छाह मार संहार सो किया ॥
सुनीबात चिता मन भई । कारण कौन ऊपना दई १०५६
परचड दलसो भाजा जाय । सो कच्छाहे दीना उठाय ॥
मंत्री बैठ करो जु उपाय । ज्यों हम जीतैं गजपुर राय१०५७
चित्रांगदूत बुलाय सु लिया । पास बैठाय मंत्र तिन किया ॥
वहुड जाहु गजपुर मंझार । रायभौपाल जनावो सार १०५८
चालादूत गया सो तहां । रायभौपाल था गजपुर जहां ॥
पोदनराय भेजा तुम पास । कहा संदेसासुनहु संभाष१०५९
सुमताधीय देहि भौपाल । और परिगहु भविस कुमार ॥
मानहु संधि न करहु विरोध । रणसंग्राम पड़े महा जोध १०६०
तब नरिंद बोला सतभाय । चित्रांगदूत सुनो तुम आय ॥
ठौर २ रण भिड़े जु कुमार। ठौर २ बांधे हथियार १०६१ ॥
कच्छाह सेना दइ जु वहाय । अवसर कवन संधिको आय ॥
बातकहत नहि आवैलाज । मांगे सवि कवन अनकाज १०६२

चलादूत पोदनपुर गया। सब विरतांत राय सौं कहा॥
युवराजिया वात जब सुनी। कोप्याजाइ अगनितनघनी१०६३
चउरंग दलवल लिया बुलाय। गजपुर साम्हा चाला धाय॥
संधिवद्ध हूए वर वीर। ठौर २ चाले रणधीर १०६४॥
पहर सनाह बांधे हथियार। धजा जु फरके रथहु कुमार॥
आनंदभेरि देत सो भया। माते गज सो साजत लया १०६५
चलत २ सो पहुंचे तहां। कच्छदेश कच्छवाहे जहां॥
तुरि कुदावै कवर विशाल। धूलहि सूर न सूझे हथियार १०६६

॥ दोहा ॥

दलचाला युवराजिया, उतरा सागर तीर॥
गजपुर ऊपर चलतहै, धाये सुभट वरवीर१०६७

१५ मात्रा चौपाई॥

अथांतर भौपाल कुमार। चार पुरुष आ जनाई सार॥
युवराजियाजोधायातुरंत। दलवल साजि आयेमयमंत१०६८
योधामिल चाले असराल। दलसंहार करै क्षयकाल॥
आगे चला लोहजंघ राय। पाछै दलआवै सोधाय१०६९॥
सुनीबात भौपाल नरिंद। भेरिसंग्राम दीनिशसि चंद॥
निज घरहिं सुभट सो गये। रथ तुरंग पलाणत भये १०७०
चतुरंगदल लीया जु बुलाय। संधिबद्ध हुआ गजपुर राय॥
भविसदत्त आनदा चित। मंगल तुरत कियाविकसत १०७१
साजे मैंगल तुरी तुपार। साजे रथ बांधे हथियार॥
चारपुरुष लीये जु बुलाय। रणसंग्रामहि दियेपठाय १०७२

---

१ बकतर (लोहे के कपड़े) २-हाथी।

भो माता हम आयस देय । कीरति फल ससारै लेय ॥
खलवैरिसों जीत हम लेहि । रणसंग्राम पयाणा देहि १०७३
भो माता हम आयस देय । परचक्री जा जीतें एय ॥
हाथजोड़कर शीसनिवात । कहैभविस जननी सा बात१०७४॥
कमलश्री बोली जु सुजान । रिद्धिवृद्धि तुम होहु प्रमान ॥
मेरी आशिकायेही सुभाय । चतुरंग बललेघर जु आय१०७५

॥ दोहा ॥

जो पुव्वह मुनिवर कहा, सो मुझ होहि प्रमाण ॥
केवल भाषा ना चले, जिन शासन की आण१०७६

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

भविसदत्त रणवासह गयो । भविमाणरूवा सो आखतभयो ॥
रणसंग्राम चले हम बाल । दृढचारित्र रहो सुकुमाल१०७७॥
नागमुद्रिका दीनी जान । चतुरंगबल सों बाहुडो आन ॥
धनवैसेठ अरु हरिबल राय ।दोनों भविस लिये जु बुलाय१०७८
हम रणभूमि चलैं हे तात । जो जीते आवैं कुशलात ॥
जो रणमे हम झूझें सार । राजविरति करियो मनधार १०७९
कछुशंक नहीं हिरदे धरो । समदो तात अशीस मनकरो ॥
ऐसी कहि आरूढा गयंद । मदनभेरि बाजी आनंद १०८०
चले सुभट अज्ञा घर लेन । निज १ घर लागी शिखदेन ॥
कोई कहै रणभिरो पचार । जिमरंजे राजा परमार १०८१
अरुहस्ती के लावो दंत । पहिरैं चूड़े मन विगसंत ॥
रणको जीत आवो भरतार । गजमोती के लावोहार १०८२

१-हाथी ।

कोई कहै कुशल घर आय । स्वामिकाज कीजो चितलाय ॥
केइ कायर बोलै धरभाव । सो कीजो नहिं लागै घाव १०८३
कायर सुंदरि बोलै कोय । सेवाराज भली नहिं होय ॥
वज्रपड़ो इस विभौ पै आय । रण संग्राम को झूझणजाय १०८४
अपनी अपनि सीख ले चले । रण संग्राम भूमि जा मिले ॥
पटहस्ती आरूढा राय । जैजैकार सामंत कराय १०८५
गजपुरराय दल देखत भया । सुभट देख आनंदा हिया ॥
कच्छाहे आय मिले जु तुरंत।दलबल साज चले विकसंत १०८६

शंकरा छन्द ।

चलिउ गजपुरराय स्वामी विहसिया मतुक वल ।
तित पंथि समहु अइनादिया नाथिमइ मंत धवल ॥
मृदंग बीणा शंख भेरी झल्लरी झणकार ।
दाहिने सुंदरि शब्द मंगल गीय करहि उचार १०८७॥
ले हाथ पूरण कलश लक्ष्मी मिलिय सन्मुख आय ।
पावक दीपक ज्योति सम सरि देखिया तिन राय ॥
संवछ सुरही अति अनूपम काढिता सुगवाल ।
पै संतुय वलहि दिट्ठ नर वे कर गह कर वाल १०८८॥
नीलटांस वामइ बोलिया सावद्ध चढिया आइ ।
दधि भरे भाजन गुजरी सन्मुख पहुँची आइ ॥
गर्जंत सुनिया केहरी शिर धरा टवर उचाइ १०८९ ॥

दुह दिट्ठ गई वर अतिशय उजल करत गल गर्जाइ ।

१ पत्थर

* इसका चौथा चरण नहीं मिला ।

आवंत फल नारंग निहारे अवर कुसुम हार ॥
सब सवण सुपनि संयोग उत्तम लब्धि पोते जाम।
जे नीति मारग पुरुष निहचल तिन्हहि सीज्झ विकाम १०९०

मौपाल राजासे कच्छहाका वीनती करना
और अनंतपाल को लाना।
॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

राय मौपालसे विनती करै। शीस निवाय चरण पै धरै ॥
अनंतपाल तुम सेवक होय। इस समान दूजा नहिं कोय१०९१
पूरब ही तुम किया परधान। अब इसका तुम राखो मान ॥
भविसदत्त बोला जो रिसाय। फुनि इनमुक्ख दिखायाआय१०९२
इस मूरख नहिं आवे लाज। हमको इनसे नाहीं काज।
जो आवै यहु देश मझार। तो शिर काटि करौंहों छार१०९३॥
बोला कछहा सुनि हो नरिंद। खिमो रोष अनंत मतिमंद ॥
अब यहु सेव तिहारी करै। हाथ जोडिकै विनती करै१०९४॥
कच्छाहे उठि चाले धाय। अनतपाल ले घाला पाय ॥
तब नरिंद बोला जु तुरंत। कहो अनंत क्या कीजे मंत१०९५
अनंतपाल बोला मतिमंद। जो मनरुचे करो शुभचंद ॥
करो संधि नहिं लावो वार। विलसो देश देहु जो कुमार१०९६॥
सुनकर भविस वचन परजला। जानों घीव बसंदर[१] ढला ॥
तुमने कहा साधु यह होय। इसका प्रपंच जानै नहिं कोय१०९७
लीह काढि पोदनपुर गया। अब यह संधि मनावत भया ॥
कायर निलज न आवे लाज। सदा बिगाडै स्वामीकाज१०९८

१ आग।

एकवार रणमें हों भिडो । सारइ सेती सार जु जुडो ॥
बैरी मार करो खे काल । ज्यों मनरंजै राय भोवाल१०९९॥
लोहजंघ उठि गया सो तहां । पोदनपुरका राजा जहां ॥
संधि न मानै वाणिक पूत । बडे बोल बोलै वहु धूत ११००
दलवल साजि तुरंगै चढे । सुभटै शीस सनाहे मंढे ॥
संधिवद्ध सजि साम्हो हुए ।कायर पुरुष मान गलि गये११०१
रेणु अकाश चढी सुरलोय । सूरहु सूर न सूझै कोय ॥
भया अंधियार रणहु मझार। आपा पर नाहिं दीसै सार ११०२
तव सुभटो काढे कर वाल । वरसे वाण मेघ असराल ॥
भिडहिं वार कर असिवर लेंय। चढे तुरंग मदान जु देंय११०३
मैंगल सों मैंगल रण भिड़ें । पायक सो पायक सु जुड़ें ॥
कच्छदेश कच्छाहे भले । झूझै वीर रण भीतर ।मिले ॥११०४
सेना झूझ पलाई सोय । रण की भूमि भयानक होय ॥
दोनों दल सो खरे परवान । दोनों करैं सिंह उडान ॥११०५
धाऐ कछ हण हणहु करंत । मारे सुभट ।तिन शीस दलंत ॥
युवराज भेजे सुभट कुमार । लंबे कान दीर्घ हथियार११०६
धाये सुभट ते रणहि मझार । मार मार कर दले जु कुमार ॥
अणी फिरी भौपालहु राय । नीसर दल वल चला पलाय११०७
गजपुर माहिं कुलाहल पड़ा । देखत लोग चौवारे चढ़ा ॥
धूलहि सूर न सूझै कोय । देखत लोग अचंभे होय॥११०८
कंपा लोग सो नगर मझार । चिता करैं पुरुष अरु नार ॥
अंतेवर कोलाहल हुया । चतुरंग वल जु मुड़ता भया ११०९

१-हारी ।

घर २ विस्मय पड़ा सो आय । भोजन हुआ न कोई खाय ॥
अँसु जलौली नारी फिरै । मन संदेह बहुत ते धरैं १११०
ना जानैं क्या होसी अंत । परचक्री दीसै बलवत ॥
ऐसी कह कह मन पछताय । तब धनवै राखे समझाय ११११
जहां बैठा जु नरिंद भोपाल । भविसदत्त आया तिंह काल ॥
पहिर सन्नाह सुभट कलमलो । संधि बद्ध हुइ आगे चलो१११२
राय भोपाल मंत्र मन भना । भविसदत्त पै मन है घना ॥
जै जीते भविसदत्त कुमार । तो यश बाढै इस संसार १११३
भविसदत्त बुलाय सु लिया । सेना पट्ट बंध तिस दिया ॥
अनंतहि मारि चरण तल देय । अर्द्ध राज कुरु जांगल लेय१११४
चित्रांग मान मर्दन जो करै । तो तू शोभा जग में धरै ॥
जिन हमपै आइ मांगा कपु । तिनकी दूरि करै तू दपु १११५
ले आज्ञा धाया सु कुमार । जाई पइठा रणहि मझार ॥
हस्थी यूथ जिम होई थाय । केहरि सिंह पड़ो इम आय१११६
कोलाहल हुवा रणहि मझार । मारत आवै भविस कुमार ॥
मनमें शंक धरै सो नाहि । पंच परम गुरु हिरदे माहिं १११७
तब जुवराजिया बोलत भया । अरे बणिक क्या गरवै गया ॥
जै समाण्या भोपाल नरिंद । मस्तक छेदि करों शतखंड १११८
वणिक कुल तैं उपना आय । क्यों रण में तू जीते जाय ॥
रणकी झाल खरी है बुरी । क्यों सहि सकसि धीर जु धरी१११९
भाविसदत्त सुनि उठा जो रिसाय। वाणिया कुल हों उपना आय॥
जो तू भिड़ रण सामाहि होय । पौरुप आज दिखाऊं तोय११२०
अरे बणिक क्या गरब कराय । बड़े बोल क्यों बोलै आय ॥

१-लोहे के कपड़े ।

छेदों शीस न लाऊं बार । रण में मारि करों हों छार ११२१
तुम्हरे कुल में भिड़े नहिं कोय । आया युद्ध में अजुगत होय ॥
सुनी बात भविसदत्त कुमार । रोषवंत जु लिये हथियार ११२२
चढा गयंद कपोल बहंत । हन हन करते धाया तुरंत ॥
दोनों मुह्ह मिल हुये जु कुमार । दोनों दंती लड़ैं इकसार ११२३
भविसदत्त सुर सुमरा पाय । मानभद्र हुवा आय सहाय ॥
उछल गयंद तैं भविस कुमार । छती अंबारी बैठा सार ११२४॥
जहां बैठा पोदनपुर राय । भविसदत्त ने बंधा गल पाय ॥
हाहाकार हुवा रणहि मझार ।सुभटहिं डार दिये हथियार ११२५॥
लडे राज सूं राजा जाय । करमीडैं अरु शीस धुनाय ॥
अर्थ दरब लीये भंडार । पिंड अंतेवर वासु पियार ११२६॥
चमर गहिणी विहवल फिरैं । बहुत संदेसा मनमें धरैं ॥
अंतेवर पिंडवा सुकमाल ।अंसु जलोली फिरै विकराल ११२७॥
छत्रधारि छतर विन भये । पौरुष गया नपुंसक थये ॥
विन तुरंग पांय सो जाहिं। लज्जावंत हुए मनमाहि ११२८॥
जहां बैठा जु नरिंद भोपाल। चरणे ले मेल्हा ततकाल ॥
राय भौपाल आनंद मनभया।बहु सन्मान भविसका किया ११२९
मुख चूंव्या[1] ले राय सुजान । अर्द्धराज दीना परवान ॥
जैजैकार सब लोगो किया । अर्द्ध सिंहासन बैठन दिया ११३०

॥ दोहा ॥

भविसदत्त जिम जीतिया । आण्या युगराजिया बंधि ॥
राय भौपाल आनंदिया । चौदमी संधि निबंध ११३१॥

इतिश्री युगराज जीतन भविसदत्त भौपाल राय आनंद करन वर्णन
वनवारीकृत चतुर्दशम अधिकार सपूर्णम् ॥ १४ ॥

१-पीला मुह ।

१५ पंचदशम् अधिकार

॥ दोहा ॥

चंदपहुप जिन पय नमों । बनवारी शिरनाय ॥
अर्द्धराज भविसह दिया । आखूं शार्द पसाय॥११३३॥

१५ मात्रा चौपाई ॥

फुनिचले गजपुर के मझार । दोनों गयंद हुए असवार ॥
पंचशवद बाज जु निशान।चढे जोति जिमि शसि अरुभान११३४
नगरी माहिं किया प्रवेश । आनंद भेरी वाजी अशेस ॥
घरघर हुआ मंगल चार । घरघर कामनि गावैं वार ११३५

॥ दोहा ॥

करमों तनी विचित्रता, मति गरवो कोइ जान ॥
वणिकपुत्र कुरु ऊपजा, राजे बांधे आन ११३६

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

आदि जिनेश्वर स्वामी जया । वाहूवली पूंत सो भैया ॥
पूरव कोडि आयु परवान । पणसै पचीस काय धनुजान ११३७
भरथह सेति युद्ध वह किया । हांकाचक्कवे हस्तकर लिया ॥
तिस संतान राय अति भये ।मंडल सेवक राय जु भये११३८॥
तिनसमान सुभट नहिं कोय । घरहिं छत्र पौरुष अति होय ॥
तिनकी सरवर कैर नहिं कोय ।विधना ऐसी रचो जु होय११३९
धनवै पूत वणिक कुल सार। नानगाल वाढा अंपियार ॥

१-हाथी २ बहुत ।

वणिज गया सागर के तीर। वधूदत्त वंच्यां वरवीर ११४०
किया सनमान भौपाल ज़ु राय। देई सुमितातिलक कराय॥
अब युवराजिये आने बांध। मारे सुभट ज़ु रण सर सांध११४२
यह्न जानि गरब मति धरो। विधना लिखी सो निश्चै करो॥
ज़ुगराज भविसदिएसुकलाय। गजपुरमांहि रहोतुमजाय ११४३
खिमाकरी भविसदत्त कुमार। फिरै ज़ुगराजे स्वै हथियार॥
भविसदत्त बुलाया राय। अर्द्ध सिंहासन बैठा जाय ११४४
चरचा अंग आनंदा हिया। जैजैकार सब लोगैं किया॥
ठया विवाह ना लाई वार। परियण कीया मंगलचार ११४५
कणंय थंभि रोपि विच धरा। पाटंवर का मंडप करा॥
पंडित वेद पढैं असराल। पंचशबद बाजैं सु विशाल ११४६
पाणीग्रहण कुमरका किया। मानदान सब परियण दिया॥
अर्द्ध राजिया थापा वीर। ढाले कलशसिर साहस धीर११४७
अर्द्ध कुरुजंगल दीना बांट। जोइ रुचै सो लीजे छांट॥
चमरछत्र दीने ज़ु भंडार। लालपदारथ मोती सार ११४८
चमर गाहनी दीनी सार। रूपवंत ते खरी पियार॥
कणय सिंहासन दीने आन। मदहस्ती दीने के कान ११४९॥
हंसतूल की सेज्या सार। हेम कचोले थाल अपार॥
पवनवेग दीने ज़ु तुरंग। जयजय करैं रणमांहि अभंग ११५०
जो मन चिंत्या सो सब दिया। भविसदत्त आवासै गया॥
कुलवहू रणवासे जाय। कमलश्री के लागी पाय ११५१
भविसणरूवा भेटी जाय। पौंहुड़ धरि लागी जो पाय॥

१-ठगा २-सेना ३-भेंट।

मानैं नाहिं सुंदर सुकुमार। मानवंत होइ बैठी नार ११५२
तब दोनों भविस मिलाई बाल। परस्पर बोली सुकमाल ॥
गये घने दिन केल करंत। कामभोग लीला विलसंत ११५३
एक दिवस दोनों वरनार। रति मंदिर बैठी अतिसार ॥
भविसणरूवा बोलिरिसाय। हे सुमिता क्या गरबकराय११५४
पुरुषै भरोसा कीजे नाहिं। कहे अवर अवरे मनमाहिं ॥
कवनदोष हम दीना राय। तुम सुंदरि आनी परनाय ११५५
पुरुष भरोसा न कीजे अयान। तुमपै अवर विवाहै आन ॥
सुनी बात सुंदरि वरनारि। मरमछेद हूवा सुकुमारि११५६॥
विलखवदन बैठी आवास। भविसदत्त आया जु विलास ॥
भो सुंदरि क्यों विलखी होया सांचीबात कहै तू सोय ११५७
तब सुमिता बोली शिरनाय। विनती एक करों जगराय ॥
कवनदोष भविसाणू दिया। तिसपैविवाह हमाराकिया११५८
हमसों विरचे नाहिं सुजान। सुदरि अवर विवाहो आन ॥
नांह भरोसाकरो मति कोय। तुम्हरे बोलहु बंधनहोय११५९
भविसदत्त बोला जो सुजान। मुझ सुंदरिजिन शासनआन॥
तुम विसमाद करोमति कोय। निहचल मनकरहु जोय११६०॥
अवर तिया परनाऊं नाहिं। तुम आनंद करो मनमाहिं ॥
ऐसी जुगत काल बहुगयो। सुखसंपति दोनों भोगयो११६१
एक दिवस भविसदत्त नरिंद। कणय सिंहासन बैठा इन्द ॥
दहिने पट बैठी भवसाण। बांवे पट सुमिताको जाण११६२
कमलश्री बैठी सो तहां। सनमुख सिंहासन थापा जहां ॥

१–पाते २ दुःख।

बोली जननीसुनहिनारिंद । तुम जगमंडनहुवा रविचंद११६३॥
बोले बोल तैं सभा मझार । ते तुम आरे किये सब पार ॥
चित्रांगदूत मारा तत्काल । लोहजंघ कीया क्षयकाल ११६४
छत्रधारी जीते सब जान । सब जुगराज़िये बांधे आन ॥
एक जु एक प्रधान नरिंद । सो तुम घर आने सववंद ११६५
ये गरुवे दीसैं बलवंत । फिरहिं नगरमें केलि करंत ॥
जेये सुभट करैं हथियोर । इनहि माननहिं कोइकुमार ११६६
सुनहि बात जननी पै जान । चमका चित्त उठा जु सुजान ॥
धनवै तात अरुहरिवलराय । सब परियनलीयेजु बुलाय ११६७
बैठि मंत्र तुम करो उपाय । इनको अब क्या कीयाजाय ॥
अरिवारुणसिंह खरा बलवंत । लोहजंघहे अगानिप्रजंत११६८
इनहि आदिदे राजे घने । ते सब बांधि आने इस रणे ॥
जो मूंके तो बैरी जाहिं । जो बांधै तो नाहिं समाहिं ११६९
तो अपयश हम है संसार । लाज रहै नहिं सभा मंझार ॥
बैठ उपाय नरिंदहु किया । मन अपने में मंत्र जु ठया ११७०
गजहस्ती आने मयमंत । जे मदमाते कपोल बहंत ॥
चहुंदिशि बैठा गजपुर जाय । ते सब राजे लिये बुलाय११७१
मनमें चिंत खरी तिन भरी । कवन मंत्र अब ठाना दई ॥
बिलख वदन हूये सब राज । निहकारण मारे हम आज११७२
जीवदान जो हमको देय । यश कीरत संसारे लेय ॥
परंतखि बोले शीस निवाय । हमको अज्ञा दीजे राय११७३॥
वणिक मारि करें खेकाल । कुरु जंगल को लेहि निसाल ॥

१-खोलना ।

तब जुगराजिया बोला धीर । अद्भुगत बात कही तुमवीर११७४
इन जीते हम रणहि मझार । जो इस रुचे सो करो कुमार ॥
तबहि सुभट बोले जु रिसाय ।कवन मंत्र तुम उपना आय११७५
विन आई मरना अब भया । काम निकृष्ट तैं कैसा किया ॥
हलोले सुभट संसा मनमाहिं।ज्यों केसरीसिंह फिरै बनमाहिं११७६
लंबे कान दीहर हथियार । ठामहि ठाम फिरै जु कुमार ॥
सगले कवर एकडे किये । आने सब मंडप में दिये ११७७॥
भविस नरेंद्र आज्ञा तब दई । ठौर जु ठौर रसोई भई ॥
दानआहार दीना तिन जोग।दान सन्मानकिया सबलोग११७८
वस्त्राभरण जु दीने सार । अंतेवर पिंडवास वरनार ॥
और सकल आनंदित भये । अपने मनमें बहु सुख लिये११७९

॥ दोहा ॥

एक एक परधान नर । मस्तक मुकुट दिपाहिं ॥
विनजै लछहु न शोभते । लज्जापात्र मराहिं ॥११८०॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

कर सनमान समोदे वीर । भविसदत्त बोला सो धीर ॥
तुमको विदा मैं दीनी आज ।जाय मिलो तुम अपने राज११८१
जब दल तुमपै मिलसी आय। रण संग्राम भिड़ो तुम आय ॥
पोदनपुर दल विनवत भया ।भो स्वामी तुम यह क्या कहा११८२
अब हम सेव तुहारी करैं । हाथ जोड़ कै विनती धरैं ॥
जीवदान तुम हमको दिया । तूतो स्वामी हमरा थया११८३॥
जो आज्ञा अब हमको होय । सो हम सेव करेंगे देव ॥
लोहजंघ बोला शिरनाय । पुन्यवंत तू चक्कवै राय११८४॥

बोले जु बोल तैं सभा मझार। ते परमाण किये सुकुमार॥
लीह उजाली शुभटों तनी। राखी लाज नरिंदह तनी११८५।
जो मन रुचै तेरें शरणाय। सो अब हमको कीजिये राय॥
अज्ञा दीनी भविस कुमार। शुभटे ले बांधे हथियार११८६॥
अंतेवर पिंडवासु जो पिला। शीस निवाय पोदनपुर चला॥
अर्थ दरव अरु कोष भंडार। ते सब दीया भविस कुमार११८७॥
राज धुरंधर कीया निरंत। बहुते राजे सेव करंत॥
ऐसी जुगति घने दिन गये। सुख संपदा नरिंद भोगये११८८॥
काल घना गया केलि करंत। तिलका सुंदर भया बसंत॥
दुहिला उपना मनके भाय। रति मंदिर पूछा जग राय११८९
तिलकपुर पाटण जाहि नरिंद। चंदपहुप वंदन सु जिनंद॥
तो अभिलापा पूरी होय। कृपा करो देखूं मन जोय ११९०
सुनी बात सो भविस नरिंद। चिंतावंत हुवा शुभ चद॥
गहन समुद किम तरना जाय। बन पर्वत किम लंघे जाय११९१
जो दोहिला सो पूरा होय। तो कीरत मानैं सब कोय॥
विना गये रहै नहिं लाज। कौन उपाय कीजे मन आज११९२
चिंतावंत बैठा जु कुमार। तबही आया पंवलि[१] दुवार॥
बिनती एक सुनो जु कुमार। ठाढा पुरुष एक सिंहद्वार ११९३
माथै मुकुट खरा जु दिपाय। मानैं सेव तुम्हारी राय॥
भविसदत्त अचंभे होय। ना जानैं यह आया कोय ११९४
कै असवेग आया जक्षेद। कै मानु भद्द आया सुरिंद॥
कै यहु सुरवर आया कोय। पुव्व जनम सनवंधी होय ११९५

१-द्वारपाल।

भविसदत्त गया पवल दुवार । उठि खेचर ने किया जुहार ॥
सुवन कचोला पाहुड किया । ले नरिंद के आगै दिया ११९६
भविसदत्त तब बोला सुजान । कौन वीर आया किस कान ॥
तू कोइ दीसै गुणह गंभीर । दिव्य जोति पसरी जु शरीर११९७
तब खेचर बोला जु सुजान । सुनहि राय तू एक बखान ॥
पुन्यवंत तुम जगत मंझार । शील धर्म को पालनहार ११९८
मनो वेग विद्याधर नाम । बसों वैताड़ जु सुख की ठाम ॥
मुनिवर वचन सुने मैं जाय । तो तुमपै हों आया राय ११९९
जो तू धनवै पुत्र सुजान । कमलै कोख उपन्या भान ॥
भविसदत्त तुझ नाम नरिंद । भवसणछत्र नारि शसि चंद १२००
मनमें चिंता होय सो काज । सो आंयस[1] मुझ दीजे आज ॥
जो सुहनानी मिलहि नाहिं । उत्तर दीजे हम घर जाहिं १२०१
सुनी बात भविसदत्त कुमार । मन आनंद हुवा जु अपार ॥
तब नरिंद लागा सो कहन । सुनो वीर तुम सांचा वयन १२०२
तब सुहनानी मिलही आय । जी का सांसा दूरि न जाय ॥
तुम विद्याधर गुणहि गंभीर । क्योंपे सुन मांगो मति धीर१२०३
तब विद्याधर बोला सार । एक वचन तुम सुनहु कुमार ॥
जो जिनशासन वच्छलहोय । मुनिवरवचन तु मानोसोय १२०४
पुव्व संबंध कारज यह जान । तो हों आया तुमहि मिलान ॥
दुहिले निमित्त हो आयाराय । मुनिवरबात कहीसमझाय१२०५
देव बिमाणे चढ़ो जु नरिंद । तिलपुर पट्टण वंदो नरिंद ॥
चंदपहुप जिन अरचो जाय । मनका चिंता कीजे राय१२०६

[1] १-आज्ञा ।

बोले जु बोल तैं सभा मझार। ते परमाण किये सुकुमार ॥
लीह उजाली शुभटों तनी। राखी लाज नरिंदह तनी११८५॥
जो मन रुचै तेरें शरणाय। सो अब हमको कीजिये राय ॥
अज्ञा दीनी भविस कुमार। शुभटे ले बांधे हथियार११८६॥
अंतेवर पिंडवासु जो पिला। शीस निवाय पोदनपुर चला ॥
अर्थ दरव अरु कोप भंडार। ते सब दीया भविस कुमार११८७॥
राज धुरंधर कीया निरंत। बहुते राजे सेव करंत ॥
ऐसी जुगति घने दिन गये। सुख संपदा नरिंद भोगये११८८॥
काल घना गया केलि करंत। तिलका सुंदर भया बसंत ॥
दुहिला उपना मनके भाय। रति मंदिर पूछा जग राय११८९
तिलकपुर पाटण जाहि नरिंद। चंदपहुप वंदन सु जिनंद ॥
तो अभिलाषा पूरी होय। कृपा करो देखूं मन जोय ११९०
सुनी बात सो भविस नरिंद। चिंतावंत हुवा शुभ चंद ॥
गहन समुद किम तरना जाय। बन पर्वत किम लंघे जाय११९१
जो दोहिला सो पूरा होय। तो कीरत मानैं सब कोय ॥
बिना गये रहै नहि लाज। कौन उपाय कीजे मन आज११९२
चिंतावंत बैठा जु कुमार। तबही आया पंवलि[1] दुवार ॥
विनती एक सुनो जु कुमार। ठाढा पुरुष एक सिंहद्वार ११९३
माथे मुकुट खरा जु दिपाय। मानै सेव तुम्हारी राय ॥
भविसदत्त अचंभे होय। ना जानैं यह आया कोय ११९४
कै असवेग आया जक्षेंद। कै मानु भद्द आया सुरिंद ॥
कै यहु सुरवर आया कोय। पुव्व जनम सनबंधी होय ११९५

१-द्वारपाल।

भविसदत्त गया पवल दुवार । उठि खेचर ने किया जुहार ॥
सुवन कचोला पाहुड किया । ले नरिंद के आगे दिया ११९६
भविसदत्त तब बोला सुजान । कौन वीर आया किस कान ॥
तू कोइ दीसै गुणह गंभीर । दिव्य जोति पसरी जु शरीर११९७
तब खेचर बोला जु सुजान । सुनहि राय तू एक बखान ॥
पुन्यवंत तुम जगत मंझार । शील धर्म को पालनहार ११९८
मनो वेग विद्याधर नाम । बसों वैताड़ जु सुख की ठाम ॥
मुनिवर वचन सुने मैं जाय । तो तुमपै हौं आया राय ११९९
जो तू धनवै पुत्र सुजान । कमले कोख उपन्या भान ॥
भविसदत्त तुझ नाम नरिंद । भवसणरूत्र नारि शसि चंद १२००
मनमें चिंता होय सो काज । सो आंयस[1] मुझ दीजे आज ॥
जो सुहनानी मिलहि नाहिं । उत्तर दीजे हम घर जाहिं १२०१
सुनी वात भविसदत्त कुमार । मन आनंद हुवा जु अपार ॥
तब नरिंद लागा सो कहन । सुनो वीर तुम सांचा बयन १२०२
तब सुहनानी मिलही आय । जी का सांसा दूरि न जाय ॥
तुम विद्याधर गुणहि गंभीर । क्योंपे सुन मांगो मति धीर१२०३
तब विद्याधर बोला सार । एक वचन तुम सुनहु कुमार ॥
जो जिनशासन वच्छलहोय । मुनिवरवचन तु मानोसोय१२०४
पुव्व संबंध कारज यह जान । तो हों आया तुमहि मिलान ॥
दुहिले निमित्त हो आयाराय । मुनिवरवात कहीसमझाय१२०५
देव बिमाणे चढ़ो जु नरिंद । तिलपुर पट्टण वंदो नरिंद ॥
चंदपहुप जिन अरचो जाय । मनका चिंता कीजे राय१२०६

---

१ आज्ञा ।

बोले जु बोल तैं सभा मझार। ते परमाण किये सुकुमार ॥
लीह उजाली शुभटों तनी। राखी लाज नरिंदह तनी११८५॥
जो मन रुचै तेरैं शरणाय। सो अब हमको कीजिये राय ॥
अज्ञा दीनी भविस कुमार। शुभटे ले बांधे हथियार११८६॥
अंतेवर पिंडवासु जो मिला। शीस निवाय पोदनपुर चला ॥
अर्थ दरब अरु कोष भंडार। ते सब दीया भविस कुमार११८७॥
राज धुरंधर कीया निरंत। बहुते राजे सेव करंत ॥
ऐसी जुगति घने दिन गये। सुख संपदा नरिंद भोगये११८८॥
काल घना गया केलि करंत। तिलका सुंदर भया बसंत ॥
दुहिला उपना मनके भाय। रति मंदिर पूछा जग राय११८९
तिलकपुर पाटण जाहि नरिंद। चंदपहुप वंदन सु जिनंद ॥
तो अभिलापा पूरी होय। कृपा करो देखूं मन जोय ११९०
सुनी बात सो भविस नरिंद। चिंतावंत हुवा शुभ चंद ॥
गहन समुद किम तरना जाय। वन पर्वत किम लंघे जाय११९१
जो दोहिला सो पूरा होय। तो कीरत मानैं सब कोय ॥
बिना गये रहै नहिं लाज। कौन उपाय कीजे मन आज११९२
चिंतावंत बैठा जु कुमार। तबही आया पंवलि[1] दुवार ॥
विनती एक सुनो जु कुमार। ठाढा पुरुष एक सिंहद्वार ११९३
माथै मुकुट खरा जु दिपाय। मानै सेव तुम्हारी राय ॥
भविसदत्त अचंभे होय। ना जानैं यह आया कोय ११९४
कै असवेग आया जक्षेद। कै मानु भद्द आया सुरिंद ॥
कै यहु सुरवर आया कोय। पुव्व जनम सनबंधी होय ११९५

१-द्वारपाल।

१६ षोड़श अधिकार

॥ दोहा ॥

चंद पहुप जिन पय नमों । बनवारी शिर नाय ॥
जिम दोहला पूरा भया । शारद करो पसाय ॥१२०८

१५ मात्रा चौपाई ॥

भविसदत्त आनंदा बीर । आनंद भेरी दीनी गहीर ॥
सब परिवर बुलाय सु लिया । सब बिरतांत कहत सो भया१२०९
कमलश्री आई सो माय । पवर बिलासणी आई धाय ॥
हरिबल आया स्यों परिवार । राय भौपाल जु आया कुमार१२१०
धनवै सेठ आवत सो भया । सज्जन लोक सहु मिलता हुया ॥
जिन चैत्याले पहुचे जाय । जिन बरपूजा करी जो रचाय१२११
(गजपुर नगर के चैत्यालयों की पूजा करी)

॥ श्लोक ॥

सद्वारि गंधाक्षत पुष्प जातै ।
नैवेद्य दीपा मल धूप धूम्रैः ॥
फलै र्विचित्रैर्घन पुण्य योगान् ।
जिनेंद्र सिद्धान्त यतीन् यजेहम् ॥ १२१२ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

अष्ट प्रकारी पूजा करी । अर्घ उतार जिन आगे धरी ॥
सफल जन्म तिसका संसार । पूजा करे जु सकल परिवार१२१३
पंच शबद बाजे जु निसान । नारी पुरुष दीसैं ग्यासि मान ॥

॥ दोहा ॥

जिमहि सुमिता परणई । भविस हुवा कुरु राय ॥
मनो वेग जु आइया । पंदरह संधि विहाय ॥१२०७

इतिश्री सुमता विवाह भविसदत्त अर्द्धराज मिलन मनोवेग
विद्याधर आगमन वर्णन बनवारी कृत पंचदशम
आधिकार संपूर्णम् ॥ १५ ॥



१६ षोड़श अधिकार

॥ दोहा ॥

चंद पहुप जिन पय नमों। वनवारी शिर नाय ॥
जिम दोहला पूरा भया। शारद करो पसाय ॥१२०८

१५ मात्रा चौपाई ॥

भविसदत्त आनंदा वीर। आनंद भेरी दीनी गहीर ॥
सब परिवर बुलाय सु लिया। सब विरतांत कहत सो भया१२०९
कमलश्री आई सो माय। पवर विलासणी आई धाय ॥
हरिबल आया स्यों परिवार। राय भौपाल जु आया कुमार१२१०
धनवै सेठ आवत सो भया। सज्जन लोक सहु मिलता हुया ॥
जिन चैत्याले पहुचे जाय। जिन वरपूजा करी जो रचाय१२११
(गजपुर नगर के चैत्यालयों की पूजा करी)

॥ श्लोक ॥

सद्वारि गंधाक्षत पुष्प जातै।
नैवेद्य दीपा मल धूप धूम्रै ॥
फलै र्विचित्रैर्धन पुण्य योगान्।
जिनेंद्र सिद्धान्त यतीन् यजेहम् ॥ १२१२ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

अष्ट प्रकारी पूजा करी। अर्घ उतार जिन आगे धरी ॥
सफल जन्म तिसका संसार। पूजा करै जु सकल परिवार१२१३
पंच शबद बाजे जु निसान। नारी पुरुष दीमैं शासि भान ॥

॥ दोहा ॥

जिमहि सुमिता परणई । भविस हुवा कुरु राय ॥
मनो वेग जु आइया । पंदरह संधि बिहाय ॥१२

इतिश्री सुमता विवाह भविसदत्त अंर्द्धराज मिलन मनोवेग
विद्याधर आगमन वर्णन बनवारी कृत पचंदशम
अधिकार संपूर्णम् ॥ १५ ॥

कुंकुम केशरि अंगै दिया। बावंन चंदन घसि कर लिया१२२१
वास कुसम आने मन भाय। देखत नैन हिये जु सुहाय ॥
उज्जल शालि अखय शसिकंत। हेम थाल सो खरे सोभंत१२२२॥
घेवर फेणि सुहाल परवान। पंच वरण आने पकवान ॥
दीपक हेम शपूरें भरे। करै जोति उज्जल अति खरे१२२३॥
अगर कपूर खिवाइ धूप। अति सुवास जु दीसे अनूप ॥
अंबै बिजोरे केले सार। पुंगीफल जे मनहु पियार१२२४॥
अष्ट प्रकारी पूजा करी। महामंत्र पढ़ि आगे धरी ॥
पंच वरण आरति शोभंत। भवि मणरूब उतारै शसिकत१२२५॥
फुनि न्हवन सजोया राय। आने कलशे जलहि भराय ॥
उज्जल नीर शशी छवि धरे। क्षीर समुद्र तुल्य मन हरे १२२६॥
प्रक्षाल जिनवर भविस नरिंद। मानो भगति करै सुर इंद ॥
उज्जल घिरत सुवास प्रवान। हेम कुंभ आनी शसिभान१२२७॥
जैजैकार कर ढालत भया। पढ़ा जु मंत्र आनंदा हिया ॥
दुग्ध कुंभ भरि आने वीर। न्हवन जिनेश्वर साहस धीर॥१२२८
फुनि दही जो लाया नरिंद। कर उछाह ढालै जिनचंद ॥
जैजैकार करै भोपाल। खेत पाल पूजे तहिं काल १२२९॥
सरव ओषधी लाई अंग। करै उछाह मिलया सब संघ ॥
हेम कलश आने जो कुमार। सहँस अठोत्तर खरे पियार१२३०॥
भरे सलिल सो ढालत भया। जैजैकार सब लोगों किया ॥
कुंकुम केशर चर्चा जिनंद। करि पूजा बैठा जु नरिंद १२३१॥

१-मलियागिर चंदन २-चावल ३-आम ४ सुपारी ५ सेत्रपाल ६-एक हजार आठ (१००८) ७ पानी।

ज्ञाति विमाणि चढ़े सो जाय । खिणइक माहिं अकाशै जाइ१२१४
सागर जल सो देखत भये । देख किलोल मान गलि गये ॥
तिलकपुर माहिं पहूचे आय । चंद पहुप चैत्याले जाय १२१५
तीन प्रदाक्षिणा दीनी राय । नमस्कार कीया मन भाय ॥
जैजै तिन गुण सागर सार । भव समुद उतारण पार १२१६॥
तुम देखत सब पाप जु गये । मन चिंते कारज ते भये ॥
मनो वेग वंद्या सो जिनंद । रचि पूजा मनधर आनंद१२१७॥
अष्ट प्रकारी पूजा लई । महामंत्र पढि आगै दई ॥
भविसदत्त स्नान जु किया । निर्मल प्राशुक जल कर लिया१२१८
चैत्याले में पहुंचे जाय । जैजै निःसहि किया मन राय ॥
नमस्कार कर ठाढा हुवा । देखा विंब आनंदा हिया१२१९॥

॥ ३१ सवैया ॥

जाके मुख दरस सो भगत के नैननिको ।
थिरताकि वानी बढ़ी चंचलता विनसी ॥
मुद्रा देख केवली की मुद्रा यादि आवै जहां ।
जाके आगे इंदकी विभूति दीसै तिनसी ॥
जाको जस जंपत प्रकाश जगै हिरदे में ।
सोई शुद्ध मती होई हुती जो मलीनसी ॥
कहत बनारसी सु महिमा प्रगट जाकी ।
सोहै जिन छवीहि जु विद्यमान जिनसी ॥ १२२०॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

हेम सलिल लीया भिंगार । कर्पूर वासा खरा पियार ॥

१-हाथ २-तृणजैसी ।

कुंकुम केशरि अंगै दिया । बावेन चंदन घसि कर लिया१२२१
वास कुसम आने मन भाय । देखत नैन हिये जु सुहाय ॥
उज्वल शालि अखय शमिकंत। हेम थाल सो खरे सोभत१२२२॥
घेवर फेणि सुहाल परवान । पंच वरण आने पकवान ॥
दीपक हेम शपूरें भरे ।करे जोति उज्वल अति खरे१२२३॥
अगर कपूर खिवाइ धूप । अति सुवास जु दीसे अनूप ॥
अंबे बिजोरे केले सार । पुगीफल जे मनहु पियार१२२४॥
अष्ट प्रकारी पूजा करी । महामंत्र पढ़ि आगे धरी ॥
पंच वरण आरति शोभंत। भवि मणरूव उतारै शसिकत१२२५॥
फुनि न्हवन संजोया राय । आने कलशे जलहि भराय ॥
उज्वल नीर शशी छवि धरै । क्षीर समुद्र तुल्य मन हरै १२२६॥
प्रक्षाल जिनवर भविस नरिंद। मानो भगति करै सुर इंद ॥
उज्वल घिरत सुवास प्रवान । हेम कुंभ आनी शसिभान१२२७॥
जैजैकार कर ढालत भया । पढा जु मंत्र आनंदा हिया ॥
दुग्ध कुंभ भरि आने वीर ।न्हवन जिनेश्वर साहस धीर॥१२२८
फुनि दही जो लाया नरिंद। कर उछाह ढालै जिनचंद ॥
जैजैकार करै भोपाल । खेत पाल पूजे तहि काल १२२९॥
सरव ओषधी लाई अंग । करै उछाह मिल्या सब संघ ॥
हेम कलश आने जो कुमार। सहँस अठोत्तर खरे पियार१२३०॥
भरे सलिल सो ढालत भया। जैजैकार सब लोगों किया ॥
कुंकुम केशर चरचा जिनंद । करि पूजा बैठा जु नरिंद १२३१॥

१-मलियागिर चंदन २ चावल ३-आम ४-सुपारी ५ क्षेत्रपाल ६-एक हजार आठ (१००८) ७ पानी ।

॥ दोहा ॥

भविसदत्त पूजा करी । मन वच कर चितलाय ॥
सुर वर गति बांधत भया । सेव न अहेली जाय॥१२३१॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

चारण मुनिवर बैठे जहां । भविसदत्त सो पहुंचा तहां ॥
नमस्कार कर बैठा जाय । धर्म बृद्धि दीनी मुनिराय१२३२॥
भविसदत्त तब विनती करै । हाथ जोड के सेवा धरै ॥
स्वामी यह संसार असार । कहो धरम ज्यों पावै पार१२३४॥
चंचल मन राख्या न रहाय । परसैं इंद्री चोरड जाय ॥
फरस विषा लोडै मन गाय । सेवै नारि विहलघल जाय१२३५॥
रसना मिष्ट सु भोजन करै । खटरस स्वाद लालसा धरै ॥
झूठ सांच बोलै बहु भाय । इंद्री विषै जु खरा कराय १२३६॥
घ्राणेद्री लोडै जु सुवास । कस्तूरि परिमल भोग विलास ॥
चक्षु रूप लोडै अनि भंत । रतन पदारथ मोती कत १२३७॥
करण गीत नाद वहु सुनै । पांचों इंद्री साणा मनै ॥
किम थिर रहै कहो मुनिराय। भव समुद्र जिम तिरणा जाय१२३८
बोला मुनिवर सुनहि नरिंद । जे मन चचल खरा गयद ॥
ज्ञान ध्यान चित लावै राय । स्यों इंद्री मन बांध्या जाय१२३९॥

॥ ३१ सवैया ॥

मौनके धरैया गृह त्याग के करैया विधि ।
रीतके सधैया परि निंदा सों अपूठे हैं ॥
विद्या के अभ्यासी गिरिकंदरा के वासी शुचि ।

१ स्वर्ग ।

अंग के अचारी हितकारी वैन छूटे हैं ॥
आगमके पाठी मनलाया महाकाठी भारी ।
कष्ट के सहन हारे रामा हू सो रुठे हैं ॥
इत्यादिक जीव सब कारज करत रीते ।
इंद्रिन के जीते बिना सरवांग झूठे हे ॥ १२४० ॥

१५ मात्रा चोपाई ॥

जो जिन पूजै मनधर राय । सो तीर्थंकर गोत बंधाय ॥
धर्मरतन उज्जल शसि कांत । इन्द्रीचोर तकै दिनरात १२४१
देव पूज गुरु सेवा सार । अरु स्वाध्याय समायक सार ॥
पंचेंद्री संजम मन धरै । छट्ठे मनकी रक्षा करै १२४२

॥ श्लोक ॥

देवपूजा गुरु पास्ति स्वाध्याय संयमस्तप ॥
दानंचैव गृहस्थीणा षट्कर्म्माणि दिने दिने १२४३
सम्यक्त के २५ पच्चीस दोष

॥ श्लोक ॥

मूढत्रय मदाचाष्टौ । तथा नायतनानिषट् ॥
अष्टौशका दयो दोषा । दृग्दोषापंच विंशाति १२४५

॥ २३ सवैया ॥

मातपिता सुतबंधु सखीजन मित्त हितू सब कामिनि पीके ।
सेवक राज मतंगज बाजे महादलसाज रथी रथ नीके ॥
दुरगति जाहिं दुखी बिललाहि परे सिर आइ अकेले जीके ।
पंथ कुपथ गुरू समझावत और सगे सब स्वारथही के १२३६

१-हाथी २-घोड़ा ।

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

धर्मनेम कुल शील प्रधान । चित उदार दीजे चहुं दान ॥
पडावसकनित कीजे राय । जन्मपदारथ अहिला न जाय १२३७
आठ मूलगुण हिये धरेय । पंच उदंवर निहचै करेय ॥
मधुमांस सुरा अति बुरा । सहै जीव दुख नरकै परा १२३८
आठ मूलगुण पालै सोय । वसुगुण सिद्धि परापति होय ॥
सात विसनपरिहेरै जो राय । लहै सुक्ख सुरलोकै जाय१२३९
पंच अणूव्रत धारण धीर । सो संसारहि पावै तीर ॥
जीवदया पालै बहुभाय । रक्षाकरै जो मन वचकाय १२४०
थावरपंच छठात्रस होय । तिनकी रक्षा कीजे सोय ॥
पृथ्वी तेज वात अपकाय । वनस्पती तुम जानो राय१२४१
विनकारण यह हाथ न लेय । अभैदान सब जीवैं देय ॥
विन जीवदया न लाभै धर्म । विन धरमै नहिं काटैकर्म१२४२
अलियवचन न बोलै जान । झूठे पाप ऊपजै खान ॥
बहु जीवाकी पीड़ा होय । भव्यजीव तुम देखो जोय१२४३
तीजे चोरी चित नहिं देय । दान अदत्ता न हाथ गहेय ॥
अदतैगरुवा दोपजु होय । मनवचकाय पालो सबकोय १२४४
आठै चौदश मूलगुण सार । अवर पंच परवी जु कुमार ॥
अवर वरतदिन लेहिपिछान । ब्रह्मचरजपालो जु सुजान१२४५
जीवाजीव चित्त नहि देय । परनारी का नेम जु लेय ॥
निजनारी है रूप शसिभान । दिवस न सेवैपुन्यपरधान१२४६
परनारी अघ उपजै घना । जासै कीरति नासै तना ॥
इहलोक अपजस बहु होय । परलोकै दुख देखै सोय १२४७

परिगह लीजे कर परमान। चिर संच्या जु पाप सबहान ॥
धन्यधान्य खेती भंडार। दोपद चौपद ग्वेरे पियार १२४८
सब छोडण असमर्थ जु होय। तौ विन सख्या देखो जोय ॥
कर संख्या नाहिं लावै वार। ज्यों उपजै संवर है कुमार १२४९
तीन गुणोंव्रत आखों तोहि। ज्यों तीनों रत्नपरापति होहि ॥
दशोंदिशा कीजे परमाण। पूरब पश्चिमदक्षिग जान १२५०
उत्तरदिशा सु विदीशा चार। ऊर्द्धपाताल लोक मझार ॥
गमनागमन जो संख्या लेय। लंघप्रमाण पावनहिं देय१२५१
देश देश का नेम जु कहै। जे पमरै चित्त न सख्या रहै ॥
अनरथदंड न कीजे जान। शस्त्र न दीजे पुन्य पिछान १२५२
जिसके दिये जीव वधहोय। सो किम दीजे पुन्यवर होय ॥
जे लाहाहै अधिकसंसार। तो नहि दीजे शस्त्र कुमार१२५३
चार शिक्षाव्रत आखों तोय। ज्यो अविचल सुखप्रापति होय॥
तीनकाल सामाइक करो। उाजै पुन्य पाप सब हरो १२५४
आठै चौदश लेय उपास। सोलह पहर करै संन्यास ॥
घर व्यापार चित्त नहि देय। एकांति बैठा जाप करेय१२५५
वरतदिवस छाडै आरम्भ। गृहस्थपदी सब छोडै डभ ॥
जैसा मुनि भयभीत संसार। वैरागै चित्त धरै कुमार १२५६
दारापेखण कुमर विशाल। सावधान आहारै काल ॥
उज्जल धोती पहिरै जान। प्रासुक पाणी करवाछान १२५७
आवै सुपात्र सो दीजे दान। चित्त उदार कीजे सनमान ॥
अंत सल्लेखना कीजे राय। चिरभव बांधापाप सबजाय १२५८
सतरा नेम विचारो चित। जातें पाप रहित हो नित।

पुन्य अनन्त बंध निरधार । स्वर्ग मोक्ष पावें भवपार १२५९

श्लोक ॥

भोजने षड्रसे पाने कुंकुमादि विलेपने ।
पुष्पतांबूल गीतेषु नृत्यादौ ब्रह्मचर्य के ॥
स्नान भूषण वस्त्रादौ वाहने शयनासने ।
सचित्तवस्तु दिशि संख्यादौ भव्य कै व्रत पालनं १२६०

॥ दोहा ॥

मुनिवर वचन भविसह सुने, बसावैराग्य सुचित्त ॥
विद्याधर सेवा करे, स्वामी कवन निमित्त १२६१
भविस तिलकपुरमें गया, चंपहु अरचाय ॥
चारणमुनि संबोधिया, षोडष संधि विहाय १२६२

इति श्रीभविसदत्ततिलकपुर गमन चंद्रा प्रभु अर्चन चारणमुनि धर्मोपदेश करन भविसदत्त वीनती करन वर्णन बनवारी कृत षोडषः अधिकार संपूर्णम् ॥ १६ ॥



१७ अधिकार

॥ दोहा ॥

चंदप्रहुप जिन पय नमों, वनवारी शिरनाय ॥
मनोवेग भव पूछिया, शारद करों पसाय १२६३

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

मनोवेग सेवा वहु करै। वहुसनेह मनमें जो धरै ॥
कवन सम्बन्ध कहो मुनिराय। मेरमनका सांसाजाय १२६४
वोला मुनिवर सुनहि नरिंद। जानों सकल पुर्व संवंध ॥
विन संवध न मानै कोय। पुर्व जनम संवधी होय १२६५
पुर्व देश देश -परधान। कंपिला नगर-बसै परवान ॥
राज करै नरनाथ सुजान। इद्र देव सुनाउति सुजान१२६६॥
धर्मवंत विलसै संसार। पाप पुन्य की जानै सार ॥
मंत्री दोय मंत्र तिस करैं। हाथ जोड कै विनती धरैं १२६७॥
विमल मति है पुन्य परवान। जिन शासन का राखे मान ॥
वामोदत द्विजवंश कुल होय। मिथ्यामति बहु वासै सोय१२६८
केसी नाम घरणि तिम तनी। सुखमों विलसै रिद्धि आपनी॥
दोय पूत तिम कुखहि भये। दुपक्क सुपक्क नाउ तिन जये१२६९
त्रीवेगा पुत्री तसु जान। अग्नि मित्र व्याही परवान ॥
सातों विसन वहु सेया करै। कलह करै नित घरां रहै १२७०
एक दिवस कपिला नरिंद। कणय सिंहासन बैठा इंद ॥

१-पहिया २ ब्राह्मण ३ स्त्री।

मुनिवर भणै सो होसी सार। वेग जाहु मति लावो वार॥
दोनो मिल चैत्याले गये।मुनिवर वंदि आनंदित भये१२९४
नमस्कार कर लागे पांय। विनती एक सुनो मुनिराय॥
सिंगलदीप का राय प्रधान। भीमसेन है नाम सुजान१२९५॥
अग्निमित्र पाहुड ले गया। आया नाहिं-काल बहु भया॥
सो कब आवे कहो मुनिराय। मनका सांसा दूर निहाय१२९६॥
तब क्षुल्लक बोला जु सुजान। सुनो वीर तुम एक कहान॥
अग्निमित्र पाहुड ले गया।वेश्या संग सो खोवत भया१२९७॥

॥ दोहा ॥

कामी क्रोधी सांनिया। फिरै जु आरति माहिं।
परका हित निज शुभाशुभ। हीय विचारइ नाहिं१२९८॥

॥ श्लोक ॥

का प्रीति श्वान मांजारी। का प्रीती स्वैरिणी पति।
का प्रीति गणिका विश्वा का प्रीति भिक्षुक केसइ१२९९॥
अति निकट विनाशायं। अति दूरेपि निष्फलं।
समभागेषु कार्येषु। राजा वन्हि गुरुस्त्रियं १३००॥

॥ दोहा ॥

जब तक विषै न छांडई। धर्म करै सब फोक।
हथजुग कहीये मालई। तऊ न समझै लोक १३०१॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

जीर्ण वस्त्र अडिइारा फिरै। पंचकणी करि पेट जु भरै॥
एक मासमे आवै सोय। मन संदेह करो मति कोय१३०२॥

१-व्यर्थ।

दोनों मिलि सो राय पे गये। शीस निवा कर विनवत भये ॥
पहिले दुपक सो बोला कुमार। ठऽराइ बात अखे जु असार१३०३॥
एक मास आगम तिस होय। आईल भे सुधीवर सोय ॥
विमलमति बोला सुविशाल। सांच बात आखो किन वाल१३०४
जो क्षुल्लक कहि बात प्रमान। सो किम गुप्त राखो अज्ञान ॥
तब राजा बोला सुकुमार। विमल मती तू आखो सार१३०५॥
विमल वचन कहो समझाय। मेरे मनका सांसा जाय ॥
विमलमती बोला सुरसार। खोया पाहुड अगनि कुमार१३०६॥
वेश्या संग लुब्ध जो भया। द्यूत[1] क्रीडाकर पाहुड गया ॥
राजा बचन सुना तिस तना। मन विसमादा उपना घना१३०७
ऐसी जुगत मास एक गया। अग्निमित्र तहं आवत भया ॥
जीरण कपड़ा निरखन सोय। देखत लोग भयावण होय१३०८॥
लाजहु रावलि जाइ न सक्या। मन संदेह घर भीतर थक्या ॥
वासवदत्त आहल्या कुमार। हारी लाज सभा मंझार१३०९॥
क्या मुह दिखाऊ रावलि जाय। पाहुड सगला दिया गवाय ॥
साला बहणेउ गये सो तहां। सिंह दुवार सभा है जहां१३१०॥
दूरहिं आवत देखो राय। विलस वदन अरु शीस धुनाय ॥
तब दुपक विनती सो करे। शीस निवाइ चरण पै धरे१३११॥
ये अपराध क्षमहु जु नरिंद। पाहुड खो आया मतिमंद ॥
सुनी बात राजाने जान। ठौर ठौर बांधे अज्ञान १३१२॥
भंडार कोष छुदि सब लियो। अग्निमित्र सकलों दियो ॥
दुपक सुपक मान अपहरे। गले हाथ दे बाहर धरे१३१३॥

1 जुआ खेलना।

सेवतही जु मधुर विषै, कडवे होंहिं निदान ॥
विषफल मीठे खातके, अन्त जु हरहिं पिरान १३२४

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

सहै दुःख परलोकहिं जाय। कोइ न होसी मित्र सहाय ॥
नरभव जनमहु पाया सार। बहुउन लाभे दूजीवार १३२५
संजम धरो सुफल करलेहु। जन्म जरामृत पाणी देहु ॥
सुनीबात दुपक जु कुमार। मन वैराग हुवा जु अपार १३२६
क्षुल्लकपास जु संजम लिया। अभैदान सब जीवहिं दिया ॥
सहे परीषह मनके भाय। घोरवीर तप चरणकराय १३२७
प्रथम स्वर्ग सुर हूवा सुजान। सोमपहुति सुनाउं बखान ॥
केशीमाय खरी जु पियार। वासवदत्तकी घरणी सार १३२८
पुत्र वियोग सहा नहिं गया। जाय चैत्याले संयम लिया ॥
अंतकाल कीया सन्यास। मरणसमाधि किया सूभास १३२९
प्रथम स्वर्ग सो केसी गई। त्रियलिंग छेदि सुरवर भई ॥
विनवी उपजे एक विमान। दो सागरसुख भोगेजान १३३०
पहिले दुपक सोमपहुचया। सो मनवेग विद्याधर भया ॥
पाछै सुकेसी चई विमान। तुझनारी गर्भ ऊरनीजान १३३१
होसी तुझ नन्दन सुकुमार। विलसै लछमी सुख भंडार ॥
मनुवेग मुनि पूछा जाय। जै मो भवंतर होती माय १३३२
सो कहां गई बताय सुजान। मेरे मनका सांसा भान ॥
सुनिवर बातकही समझाय। दुहिलेनिमित ये आयाराय१३३३
ते [illegible] । बहुत पियारहु मनमें धरै ॥
[illegible] । [illegible] हूवा जु कुमार१३३४

फुनि पूछा सुनिवरहु सुजान । एकबात पूछैं शसि भान ॥
अग्निमित्र त्रिवेगानारि । वासवदत्त सुपक जु कुमार १३३५
किन गति गये कहो सतभाय । मेरे मनका सांसा जाय ॥
कहैसुनीश्वर सुनहो भया । सुपक कुटंब शोक कर सुया १३३६
मरिकै दुर्गति पहुंचा जाय । भ्रमताकाल भम्या सो आय ॥
त्रिवेगा अंसु जलोली रहै । पिय वियोग अंग तिस दहै १३३७
एक दिवस राजा कै गई । हाथ जोड़िकै विनवत भई ॥
तू स्वामी सो हमरा होय । तुमसम धरमीहै नहिं कोय १३३८
कै भरतार मिलावो राय । कै गजदंत तुड़ावो जाय ॥
सकल भरि राख्या भरतार । हिरदे दुःखसहों जु अपार १३३९
सुनीबात मन गहगह भया । अग्निमित्र छोड़ तिन दिया ॥
आनंदसो गयेघरहु मझार । अग्नीमित्रका किया विचार १३४०
क्या मुंह दिखाऊं लोगा माहिं । करू मरण नहि देखू राइ ॥
पास त्रिवेगा बैठा कुमार । हम अपराध क्षमो तू नार १३४१
जै मैं चिर संतापी बाल । अब तुम क्षमाकरो सुकुमाल ॥
सुने बचन त्रिवेगाहिनारि । असु जलोली करहिविचारि १३४२
कवन बचन तैं जपा नांह । सुनतहि हिरदे उपनी दाह ॥
बहुतेकाल रहे परदेश । दुःसह वियोग सहे जु अमेस १३४३
जो आया तो सकल भरा । जो छूटा तो मरण अनुसरा ॥
हमभी मरै तिहारे संग । तुमवियोग किम सहसीअग १३४४
दोनों मरण संजोया जान । नारि पुरुष चित्या परमान ॥
सर तीर काठ इकट्ठा किया । नारि पुरुषदाहि चित्तैंमुया १३४५

१-पति ।

मोर मोरणी उपने जाय। वन मंझारह केल करा
फुनि मरि दोनों तापसी भये। वहुतभोगसो भोगतभये १३
चिर संसार मम्या सो जाय। अगमितु मणिभदु उपन्या आय
जिनपंकति लिखी जोसुजान।जिन वीमाणचढायाआन१३
नारित्रिवेगा भमी संसार। त्रिभव लिया रोहणी अवतार
चयविमाण आवै वहुराय। पुत्रि सुतारा तुम घरथाय १२
सुनी बात हूया आनंद। धनस्वामी जिन शासन चंद
सुनीबात भाजा संदेह। सब विरतांत कहा मुनि एह १३
नमस्कार कर आया राय। तिलाकपुर माहि पैठाजाय १३
रति मंदिर देखे निज भवन। चिरमविसाणरूवा जे रमन
फुनि विमाण आरूढे आय। क्षणक माहिं आकासे जाय१२
लहां मंडप ते देखत भये। वधुदत्त छोडी जहां गये
फुनि देखी गुफा गहर गंभीर। तिसका कोई न पावै तीर१३
फुनि ते गये तिलंय के मझार। अर्थ दरब काढे भंडार
लेजे मन भाये ते लिये। मध्य विमाण एकठे किये१३५
चढि विमाण चाले जब राय। गजपुर माहिं पहुता आय
कीया उच्छाह नगर मंझार। घर २ कामिनि मंगलाचार१३
मानभद्र की पूजा करी। करि पूजा विनती अवधरी
मनोवेग आनंदा हिया। विदा होय घर अपने गया१३५
सब परियण अपने घर गये। घर २ माहि बधावे भये
रंग रली सुख भोगै शरीर। मन वांछित फल पावैं वीर१३५

१-मेख २-तिलकपुर।

॥ दोहा ॥

विद्याधर आज्ञा लई । निज पुर पहुंचा जाय ।
भविसदत्त घर आपने । सुखसों केल कराय॥१३५

१५ मात्रा चौपाई ॥

राजा लक्षमी भोगैं भोग । विधना दिया जु यह संजोग
चार पुत्र भविसण उर भये । सुपहु कणयहु सुरपहु जये१३
चंद्रकीर्ति चौथा सुत जान । तार सुतारा धुवा परवान
एकै पुत्र सुमित्ताहि भया । धरणीधर नामा तिस जया१३५
धीय वसुंधरा खरी सुजान । रूपवती प्रगटी शसिभान
ऐसी जुगत काल बहुगया । गजपुरमाहिं विलास जु किया१३
एक दिवस सो भविस नरिंद । कणय सिंहासन बैठा इंद
बनमालि आय जनाई सार ।स्वामी एक सुनो ना विचार१३६
अवधि ज्ञान मुनि आया राय ।विमल बुद्धि तिसभाव दिपा
सुनि बात भविसदत्त कुमार । झति सिंहासन उतरा सार१३
तीन प्रदक्षिणा दई सुजान । परोक्ष नमन कीया जु ममान
आनंद भेरि दीनि नरनाह । सार जनाई गजपुर माह१३६
पटहस्ती हूवा असवार । साथ मिले जोधा जु कुमार
भविसणरूवा सुमित्रा नारि । चढी गयंद चली सो कुमारि१३
धनवै कमलश्री संह चला । हरिवल सौं परवारैं मिला
नृप भौपाल चलाहै सुजान । सो अंतेवर गया मिलान१३९५
पांचों पूत भये असवार । पट्टण लोग चले तजिवार
तारा सुतारा वसुंधरा चली । बहुत सखी तिन साथै मिली१३

१-साथ ।

पंच शबद ते बाजत भये। बेग निसाने डंक जु दये ॥
भविसदत्त जु चढिया गयंद। बहुत आनंद किया सो नरिंद१३६७
नगर लोक सहु साथैं चला। नारि पुरुष बहुते सो मिला ॥
चला अंतेवर केलि करंत। रुण झणकार नेवर बाजंत १३६८॥
चलत २ सो पहुंचे तहां। महामुनीश्वर बैठा जहां ॥
वंद्या मुनिवर मन धरि भाव। नमस्कार कर बैठा राव१३६९॥
पूज आरंभी अष्ट प्रकार। चरच्या स्वामी भविस कुमार ॥
करि प्रणाम सु बैठा नरिंद। धर्म बुद्धि दीनी सो मुनिंद१३७०
कर्म संकेत जो टूटे भेव। संसार कील सों पावे छेउ ॥
सुनी बात भविसदत्त कुमार। चमका चित्त फिरा ततकार१३७१
विनती एक करो मुनि इंद। मन संदेह भया निशिचंद ॥
देश कोष भंडार बहुत्त। पुत्र मित्र बंधव संयुक्त१३७२॥
कवन कलेस रहा मुनिराय। मोसों बात कहो समझाय ॥
मयणागिर पर्वत विस्तार। भाई छोडा बनह मझार१३७३॥
तबहि कलेस गया जु मुनिंद। सेवा करहिं बहुत से नरिंद ॥
ऋद्धि वृद्धि बहु मंगलचार। करैं राज विलसैं संसार १३७४॥
कुरु जंगल मे आण सुझ फिरै। हाथ जोड सब सेवा करैं ॥
अरि बैरी मैं दीये बहाय। कवन कलेश रहा मुनिराय१३७५॥

॥ दोहा ॥

बहु मंडली सेवा करैं, जुगराजिये बहाय ॥
कुरु जंगल में राज करूं, कवण किलस मुनिराय १३७६

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

बोला मुनिवर सुनहि नरिंद। आदिनाथ स्वामी जिन चंद ॥

कोटि पूरब तिस वोरे भई । विलसी आवविहडसवगई १३७
ागदशम अब रहा कुमार । विषै जीव नहिं पावै पार
शलखपूर्व उत्कृष्टिहिआय । एकजु लाख बालपनजाय १३७
जे लाख पढंहि अंग । तीजे तरुणियो लोयण संग
ति जुवानमानै बहुरली । सेवेनारि निजअंतर मिली १३७
ाम भुजंगम डसै शरीर । विषै समुद नहिं पावै तीर
ाहा टोटा जानै नाहिं । काम पिशाच वसै मनमाहिं १३८
ारुणी लोचन डसा जु कुमार । इम विषै कूप पडा संसार
वेहुडे गोवनचले पलाय । जवजरा वाघंणी पहुंचैआय १३८

॥ दोहा ॥

केश कनौती ऊजले, कहि सम्मन कहि भाय ॥
मौत सदेशा कहनको, कान, विलंबै, आय १३८२.

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

नैनो आय झकोले नीर । वहै नाशिका गहर गंभीर
दंत बत्तीसी चलै पलाय । लालामुखसो वहै जु आय१३८
शिर कंपे जिम बन थरहरे । निज नारि नहि आदर करै
अहो नरिंद संसार असार । धन जोबन दीसै जु असार१३८

॥ श्लोक ॥

अनित्यान शरीराणि विभवनाहीं सास्वती ॥
नित्यं मृतस्यहंत कर्तव्यं धर्म्म सग्रह १३८५

१५ मात्रा चौपाई ॥

स्वारथ के दीसैं सब कोय । विन स्वारथ नहि कोई होय ।

१ बुढापा २ शेरनी ३ राल ।

मनुप जनम पाया संसार। बहुड़ न लाभै दूजी वार १३८६
सो कीजे अहला नहिं जाहिं। फिर पछतावा रहै मनमाहिं॥
सुनै वचन भविसदत्त नरिंद। मन वैराग भया शसिचंद१३८७

॥ सोरठा ॥

ज्यूं जल बूंडे¹ कोय, तज वाहन² पाहन³ गहै ॥
त्यों नर मूरख होय, धर्म छांड़ि सेवत विषै १०८७

॥ दोहा ॥

भविसदत्त मुनि पूछिया; वैराग्या सो चित्त॥
दीक्षा भाव मनमें धरा, ठारमी संधि पवित्त १३८९

इतिश्री भविसदत्त गजपुरनगर आगमन पुनः मुनि पूछन दीक्षाभाव करन वर्णन धनवारी कृत अठारहवां अधिकार संपूर्णम् ॥ १८ ॥



१-डूबना २-नाव ३-पत्थर।

१९ अधिकार

॥ दोहा ॥

चंद पहुप जिन पय नमों । वनवारी शिर नाय ॥
पूर्व भवंतर पूछिया । शारद करों पसाय ॥१३९०॥

१५ मात्रा चौपाई ॥

मुनिवर वचन सुने जु कुमार । मन भै भीत हुवा संसार ॥
पूर्व भवंतर पूछे राय । करै वीनती शीस निवाय १३९१
ओसि जनमहूं होता कवन । कहु स्वामी तारण त्रिभवन ॥
कवनपुन्य मैं कीया मुनिंद । जिम समान्या राय नरिंद१३९२
सुमित्ता धीय दई जु विवाह । कुरुजांगल दीया नरनाह ॥
मयणागिरि पर्वततट भम्या । कारणकवन दीपंतरगम्या१३९३
असनवेग हूवा जो सहाय । भविसणरूवा दीनी विवाह ॥
मानभद्र पंकति लिखिगया । बहु उपकार उन मेरा किया१३९४
सब बिरतंत कहो मुनिराय । मेरे मनका सांसा जाय ॥
बोला मुनिवरअवधि ज्ञान । भविसदत्त तुमसुनो सुजान १३९५
क्षेत्र ऐरावत बसै सु विशाल । अरिपुरनगरी सुरग पवाल ॥
अमरवेग राज तहां करै । मांत्रिविजोयर मंतउ धरै १३९६
कमलरेख भार्या तिसतनी । सुखसों विलसै रिधे आपनी ॥
कृतसेना नाऊ तिसधिया । तिलमितिपाणीगहणजुकिया१३९७
चोर जार बहु औगुण भरा । नगर लोग अब जानैं खरा ॥

१-पिछला २ स्त्री ३-सम्पदा-

सात विसनं वहु सेया करै । अडहाराहुव नगरमें फिरै १३९८

॥ श्लोक ॥

दूतं च मांसंच सुरा च वेश्या । पापार्द्धि चौरि परदार सेवा ॥
एतानिसप्तानि व्यसनानि नित्यं घोरानिघोरेनरकापतंति १३९९

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

वस्त्राभरण पहिरै नाहि सोय । देखत लोग भयावण होय ॥
निज नारि देखै जु रिसांय । मनमें झुरै खरी पछताय १४००
अर्थ दरव भंडार असार । विन भरतारै ये सब छार ॥
कोसि तापसी तपस्या करै । पांचों अग्नि साधिमन हरै १४०१
कृतसेना तिस सेवा जाय । दिवस वितावै पूजै आय ॥
धनदत्त वणिक नगरमें रहै । धणै लाछि तिसगेहंणिकहै १४०२
सुत धनमित्र खरा जु सुजान । रूपवंत दीसै शसि भान ॥
कोसी कीनित सेवा करै । हाथजोडिकै विनती धरै १४०३
कीरत सेना देखा कुमार । रूपवंत गुण लक्षण सार ॥
रूपरिद्धि गुण देखै सोय । देखत नैन सुहावनं होय १४०४
रोमांची सुंदर बाल कुमार । अवलोकैं तिस वारंवार ॥
चित अभिलाष कामकी हुई । मयर्ण विकार करत सो भई १४०५

॥ दोहा ॥

रूपगुण अरु दरवको, प्रीति करै सब कोय ॥
सूर प्रीति तब जानिये, इनतैं न्यारी होय १४०६

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

विन विचित्त गचौले मयन । विनवी हरष मिलावै नयन ॥

१-क्रोध २-धूल ३-स्त्री ४-कामदेव !

मबाण रसबींधी नारि। मयणदाह चितमें जु कुमारि १४०७
कुमार देखि मन चलै। गुगह गंभीर हिया कलमलै ॥
व्यापार चित्त नहिं देइ। ऊंचे ऊंचे स्वांस भरेय १४०८
न सोवैं अन्न नहिं खाय। हिरदे में धनमित्र बसाय ॥
ी विना मीनेंजिम चलै। सुंदरिहियाअतिही कलमलै१४०९
विकार सुंजे सो घना। गलै अंग लावै तिसतना ॥
भुजंग डसी सो वाल। विरह लहर आवै तत्काल१४१०

॥ दोहा ॥

जैसी चेतन तुम करी, ऐसी करै न कोय ॥
विषय सुखन के कारणे, बैठे सर्वस्व खोय १४११
चेतन मरकट मूढ जूं, बांध्यो परस्यों मोह ॥
विषय गहन छूटे नहीं, शिव अब कैसे होय १४१२
सुख स्वाधीन जु परिहरो, विषयन पर अनुराग ॥
कमल सरोवर छांडिके, घटजल पीवै काग १४१३

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

ांच कांच है मोडे अग। कंठलागि विलसै सो संग ॥
में चित करै असराल। कलमल सुंदर हिय सुकमाल१४१४
ी पै जा बैठो वाल। आगम धनमित्त चिंतह काल ॥
त कुमार आवत सो भया। सुदर देखि उछाह जु किया१४१५
ा कुमार सो घरहि मझार। काम वाण रस बींधी नार ॥
रै गोहण चली सो धाइ। गुणमाला पै पहुंची आइ१४१६॥
ी जानि कीया सनमान। आदर भगति करी बहु जान ॥

१-मछली २-सांप ३-पदर।

दोनों सखी सुख मानै जान। धर्म वहण कहिये परवान१३१७॥
अति सनेह मानै ते घना। पूर्व संबंध भोगै आपना॥
सेज्या रूढ धनमित्र कुमार। गुणमाला ढिग बैठी सार१४१८॥
कृत सेना बैठी सुकमाल। मयंणदाह ऊपनी झाल॥
लोचन चलत रहैं तिस नाहिं। क्षण बाहर क्षण भीतर जाहिं१४१९
क्षणक हंसे क्षण झूरै नारि। क्षणमें भुजा सु देय पसारि॥
गुणमालाहै गुणकी खान। देखी सुंदरि मन पहिचान१४२०
गुणमाला हँस बोली नार। वहण बात हों पूछूं सार॥
सखि संदेह उपना मन मोहि। पूछूं सांच जु आखे मोहि१४२१
विलख वदन तू दीसै घनी। मनकी चिंत कहो आपनी॥
मरम छेद कीया भरतार। कै अवगुनि है सेज कुमार१४२२॥
कै सासु बोले बोल रिसाय। मन दुखवचन सो बैठे आय॥
क्षीण शरीर दीसै तुम तना। शिथिल चरित्र दीसै तुझ तना१४२३
छुटे केश मुख वपु कुमलाय। और कंचुवा ढीला सुहाय॥
चहुंदिश नैन धावै असराल। क्षणइक थाय रहै नहिंबाल१४२४
भुजा पसारि जंभाई लेय। अंग मरोड़ै नैन भरेय॥
तुझ शरीर ये लक्षण होहिं। विरह दाह विन ये नाहिं होहिं१४२५॥

॥ दोहा ॥

सुंदरि भीनी काम रस। अवॅलोई गुणमाल।
अति गाढु पूछत भई। सांच बात कहि बाल॥१४२६॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

कृत सेना करें लिया गुणमाल। कर ऊपर धर पूछे बाल॥

१-कामदेव २-शरीर ३ आगी ४ देखी ५ हाथ।

चहुंदिशि सुंदर जोवंत भई।जाणि एकांत सो आखत सही१४२७
वहंणी चरित वसै मन मोहि। गुहंनात नहिं राखों तोहिं ॥
मो मन मोहा तुझ भरतार। देख सरूप हिया जु विचार१४२८॥
कुमरे पास जीव सो रमे। सूना कॅलेवर घरमें भमें ॥
सुनी बात गुणमाल सुजान। बोली सुंदर मन पहिचान१४२९
एक वहन तू मेरी होय। दूजे भरता अवलोकी सोय ॥
तेरा पिता सेठ पद धरे। नगर लोग सब सेवा करें१४३०॥
वणिवर मेरा एकांगी होय। विन करतार सहाइ न कोय ॥
मनका चिंता करो परवान। ले विलसै तू कुमर सुजान १४३१
जाय एकांत तू सेज्या धरै। मनका चिंता कारज करै ॥
मैं दीना विलसे भरतार। भोगे भोग सुख लहो अपार१४३२
कीरत सेना बात जब सुनी। चमकी चित्त फिरी ततखिनी ॥
धिक धिक्कार वचन तुझ होय। कवन बात तें आखी सोय१४३३
तेरा मन में लूंथी वाल। कहा कहै वहणी सुकमाल ॥
जै गुण मालहुं ऐसा करों। यह्व तनदाह अगनि किन मरो१४३४
नैन बिलोकै सब संसार। मन अनुराग ऊपजे सार ॥
शील रतन हों खंडों आय। केतिक जगमें जीऊं जाय १४३५
कवन सुक्ख कवन यह काज। निरमल कुलको लाऊं लाज ॥
ऐसी बात जो मनमें धरै। झंपा पात कराहि किन मरै १४३६
धर्म सहोदर इस संसार। साम्हि सनेह हुवा जु कुमार ॥
सुंदर वचन सुने गुण माल। मन संदेह गया तत्काल १४३७
कीरत सेना तात घर गई। समय पायकर विनवत भई ॥

१-देखने लगी २-वहन ३ छुपीहुई ४ शरीर।

और लोग अवंगन्या करैं। बिनावि सेव नित अगली करैं ॥
सम्यक दर्शन चित्त सुजान। दया निमित्त ते राखैं मान१४६१

॥ दोहा ॥

भविसदत्त जिम पूछिया। पूर्व जनम परवाण ॥
अति सैन्यानी भाषिया। उन्नीसमी संधि मिलान १४६२

इतिश्री भव पूछन भविसदत्त सुनै वर्णन बनवारीकृत उन्नीसमा
आधिकार संपूर्णम् ॥ १९ ॥



१-नफरत।

२० अधिकार

॥ दोहा ॥

चंदपहुप जिन पय नमो । बनवारी शिरनाय ॥
भविसदत्त व्रत आदरा । शारद करो पसाय १४६३

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

एक दिवस धनमित्त कुमार । नंदमित्र सों बोला सार ॥
एकबात मैं आखों तोहि । सांचबात तू जंपे मोहि १४६४
निशिसमै कौतुक अति होय । हम मंदिर आवै सब कोय ॥
तुमनहिंआवहु कारण कवन । सांचीबात कहोहम सयन१४६५
नंदमित्र बोला जो सुजान । सुनो मित्र तुम एक बखान ॥
निशि समैं तुम भोजन नार । मिलै कुटंब करहि ज्योनार१४६६
निशि समैं तुम मंदिर जाहि । तुम बुलावो मैं जीमूं नाहिं ॥
विलखवदनतुमहोयसुजान।हमनहिआउंनिमित्तगसिमान१४६७
मुझै आण निशिजीमणराय । जनमि न भानो जो सिरुजाय ॥
गुरुके बचनित हिरदेधरों । व्रतका भूल भंग नहि करों १४६८
पुत्र कलित्र विभव सबजाय । व्रतनहीं खंडू धर्म सहाय ॥
तुमरे सग जो जीमूं नाहिं । विलख वदन तूहो मनमाहिं१४६९
अरुतू जीमता देखि न सकूं । विलख वदन हो मनमें थकूं ॥
बोलातव धनमित्र कुमार । कवनदोष निशि जीमणवार१४७०
सर्वलोग निशि जीमण करें । सुख संपति घर अपने धरें ॥

२-जिमनवार ।

जै तू एक न जीमै वीर । कवनसुख तुझ होहि शरीर १४७१
निशि जीमण का दोप जु होय । सो तुम सारो आखै मोहि ॥
नंदमित्र तब बोला कुमार । निशि जीमण का सुनों विचार१४७२
निशि जीमणका पाप अति होय । नरक जाय दुःख भुंजै सोय
देखै दुःख फिरै संसार । जम्मण मरण करै विवहार ॥१४७३॥

॥ दोहा ॥

राति समै जीमण करै । दुर्गति उपजै जाय ॥
ताडन भेदन अति सहै । कोइ न होय सहाय १४७४

१५ मात्रा चौपाई ॥

कीड़ा पतंग झिंगर गिडार । माखी कान खजूरा सार ॥
कान सलाई कड़ी भुजंग । निशि के समै फिरैं जु अभंग१४७५
ते उड़ि पड़ैं अहारे माहिं । दृष्टि न पसरै दीखे नाहिं ॥
मन अपने तू देख विचार । शुद्ध अहार किम होय कुमार१४७६
पंखी हीन बसैं वन माहिं । निशि भोजन ते मानैं नाहिं ॥
इम जानी निशि छाड आहार । जिम संसार समुद्रह पार१४७७

॥ रात्रि भोजन प्रतिमा ॥

उत्तम रात्रि भोजन न पानी लेइ ॥ अथवा जइ पाणी तांबूल मुख सुध किंचित् लेइ तो मध्यम व्रत ॥ उठि सुहोइ सो रात्रि प्रतिज्ञा पंच पर्व अथवा व्रत के दिन अहो रात्रि और दिन का शील व्रत पाले ॥ एवं रात्रि भोजन प्रतिमा ॥

१-पक्षी ।

॥ श्लोक ॥

उलूक काक मार्जार । गृद्ध संवर शूकरः ॥
अहि वृश्चिक गोधाश्च । जायंते रात्रि भोजनात्१४७८

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

सुनी बात कंपा जु कुमार । निशि समय का छांडा आहार ॥
कृत सेना गुणमाला विशाल । निशि भोजन छांडा तत्काल १४७९
सब परिवार तब छोडत भया । निशि आहार का नेम जु लिया॥
बारह व्रत श्रावक के धरे । पैंतीस अक्षर मन में करे ॥१४८०॥
जिन शासन वच्छल सो कुमार । देव पूज नित करै आहार ॥
पात्रह दान जोग सो देय । सन्मान दान भगति जो करेय१४८१
सेवा तापसि छोडे नाहिं । दया निमित्त ते भगति कराहिं ॥
बिजोयर मंत्री पुरजन लोग । कोसी निंदा करैं सब कोय१४८२
तपसी मनै उपजी जु कषाय । तप का फल तिन बांधा आय ॥
तपस्या फल होऊ सो आय । बिजोयर मंत्री को दुख दाय१४८३
काल अंति मरण सो किया । असन वेग सो दानो हुवा ॥
तिलकपुर पाटण उपना आय । भामासुर परचंड दिपाय१४८४
मंत्री बिजोयर चढा खंधार । स्वामी काज किया हथियार ॥
लगा बाण उर भेदा जाय । मंत्री बिजोयर गया पलाय१४८५
सुनी बात धनमित्र कुमार । मुवा बिजोयर गया खंधार ॥
हाहाकार हिया यर हरै । असु जलौली स्वांस जु भरै॥१४८६॥
एकांगी वणिवर होता पुरी । दिवस बलाऊं किमइ करो ॥
सेठ पदी मुझ दीनी राय । नगर लोक सब सेव कराय१४८७

१-मीति २-स्पार देश ।

फिरै आन पुर अरण मंझार। सेवा मानैं राज कुमार।
हा कहां गया पुन्य परधान। धर्मवंत जिन राख्या मान१४८
ऐसी कहकर मन पछिताय। पुरजन लोक समोध्या आय।
तब धनमित्त उठि बैठा भया। लोकाचार राय का किया१४८
तात शोक कृत सेना करै। मनहि बियोग बहुत सो धरै।
निज अंगै कंदै सुकमाल। कलमलै हिय सुंदर सु बिशाल१४९
चिंतै गुण सुमिरै ज़ु कुमार। मूवा तात हुई निरधार।
भरता दुख मैं जाना नाहिं। पिता राज बहु केलि कराहिं१४९
मेरा कहा तात ने किया। धनमित्त मान सेठ पद दिया।
अब कौन भाव हम राखैं नारि। हुई अनाथ संसार मझारि१४९
ऐसी कहि कर मन पछिताय। तब धनमित्त राखै समझाय॥
भो वहनी तू हिया सहार। मरणा होसी सब संसार॥१४९३॥
ज्ञान विचार तू देखो जोय। सदा न जीवन किसही होय॥
तब सुंदरि मन पोढा किया। घर व्यापार चित्त सो दिया१४९४
मंत्री विजोयर उपना कहां। नगर तिलकपुर पाटण जहां॥
नाम जसोधर राजा हुवा। तिलकपुर पाटण भोगत भया१४९५
अरिपुर लोग शोक अति धरैं। अंतकाल मरण सो करैं॥
उपजे तिलकापुर मंझधार। भोगैं पुरुष भोग अरु नार १४९६
कृत सेना धनमित्र विशाल। शुद्ध चारित्र गमैं सो काल॥
नंदमित्र सु खरा सुजान। धर्म ध्यान नित करै बखान १४९७
आपन पंच महाव्रत लिया। अभय दान सब जीवां दिया॥
किया तपश्चर मनके भाय। पंडित मरण किया सतभाय१४९८
सोलह स्वर्ग इंद्र सो हुवा। मानभद्र मित्र सब जया॥

देख बिभूति सुरग की जाय । मन अचरज हूवा सुरराय१४९९.
कवन पुन्य मैं ऐसा किया । स्वर्गलोक का सुरवर जया ॥
अवधि ज्ञान बिचारा चित्त । वणिक पुत्र होता नंद मित्त१५००.
कर तप चरण मरण मैं किया । तो मैं सुरवर उपनत भया ॥
मन वंछित सुख भुंजे जाय । पाई वाइस सागर आंय १५०१
धन्य जनम धन कुल साधार । धन जिन शासन चरणा चार ॥
धन वैराग जैवंता होई । तिसतैं सुर पद पाया सोई १५०२

॥ दोहा ॥

अच्युत स्वर्ग क्रीडा करै । सुर रमणी संयोग ॥
दिव्य विवानै संचेश । मन वंछित सुख भोग १५०३

॥ प्राकृत गाथा ॥

जोणरु सिद्धह झाइयउ । अरि जिय तंझा एह ।
मोख महापुर नीयडो । भवदुह पाणिउ देह ॥१५०४॥
झाइ सरोवर अमीय जलु । मुनिवर कराहि साणाणु ।
अट्ठ कम्म मल धोवहि । नियडउ पहुणिर वाण॥१५०५॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

इथंतर धनमित्र सुजान । जिन शासन का राखै मान ॥
देवपूज नित भोजन करै । मन उछाह बहुतही धरै १५०६॥
धणय लाछि जननी सुविशाल । धनदत्त पिता नारि गुणमाल ॥
कीरत सेना पुन्य परधान । सति शिरोमणिहै शसिभान१५०७॥
जिन शासन वाछल गुणलेय । पात्रह आये दान जु देय ॥
एक दिवस धनलाछी माय । मुनिवर देख सु मन हुलसाय१५०८

१-आयु २ माति ।

मलिन गात मुनिवर सुज्ञान। निर्मल चारित हन्या सो काम॥
तिनहि देख अवंगन्या करै। हँसै अयाणि निंदा करै १५०९॥
समाधि गुप्त मुनि देखी वाल। अवगनैं मुनिवर चरित विशाल॥
तिनहु संबोधी सुंदरि जाय। मनका सांसा दूर कराय१५१०॥
श्रुतपंचमी व्रत दीना सार। सत सठ उपवास कीजे वार॥
फुनि उजमण संजोया जान। उजया वरत पुन्य परधान१५११॥
कृतसेना उनमोद जु किया। उपना भाव चित्त तिन दिया॥
धणय लाछि धनमित्त विशाल। काल अंत मूये जु विशाल१५१२
गजपुर मांहिं लिया अवतार। पुन्य जोग हुये साधार॥
जो होता धनदत्त सुजान। धनवै सेठ हुवा परधान १५१३॥
धणयलाछि जे पूरब माय। सो अब कमलश्री वीहाय॥
अरु तू विजुली झडप्या जाइ। अरहंत मंतु तुझ हिरदै आइ१५१४
ध्यावत अक्षर कीया काल। सो तू भविस हुवा सुकमाल॥
धनवै घर नंदन सो जान। कमलहु कोख ऊपना मान१५१५॥

॥ दोहा ॥

जो अभ्यासै जन्म भर। सो किम बीसरि जाय।
खाते पीते सोवते। ते राखै मनमाह॥ १५१६॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

कंतह्न गुण सुमरे गुणमाल। हाहाकार करै सो वाल॥
कोमल अंग कंदे आपना। अब क्या जीतब कंथ तुम बिना१५१७
हा कहां गया नाथहि सुजान। हम बाला क्यों राखै मान॥
कवन पाप मैं पूरब किया। मुझ अनाथ करि नाथ जु गया१५१८

१ निन्दा करना।

सुझसी दुखियारी नहिं नार। दुख - भाजन हूई संसार ॥
सुनी वात कृत सेना वाल। मूवा धनमित्त हुवा खेकाल१५१९।
सुनी वात विहलंघणि हुई। पड़ी भूमि निःश्वासैं भई ॥
ऊठत वैठत गई सो तहां। गुणमाला कंतहु झूरै जहां१५२०॥
वहणी दूरहु देखी धाय। हाहाकार कर लागी पाय ॥
हा कहां गया धनमित्त कुमार। हमसी अनाथनका आधार१५२१
कृतसेना बोली हिया सहार। हों दुखियारी इस संसार ॥
तुझ वहणी सुख देखाति आय। देखत हिया खरा जु रिसाय१५२२
हों दुखयारी जनम की वहन। दीना नांह दुख विधना दहन ॥
तुझ मुख देखि सहारत हिया। अव दुख विधना दोनों दिया१५२३
कर-कंकण जु उतारे हार। उतारे नेवर रुण झुणकार ॥
नैनों कज्जल धोया जाय। सुहाग सिंगार दिया जु वहाय१५२४
श्वेत जु बस्तर पहिरत भई। दोनों मिलि चैत्याले गई ॥
गुणमाला संजम व्रत धार। अपना जनम किया सवसार१५२५॥
अंतकाल सन्यासै मुई। सो गुणमाला सुमता भई ॥
अव आगै हों करों बखान। सुनो राय मन धरी सुजान१५२६
कृत सेना वृत लीया कुमार। श्रुतपंचमी कीया सार ॥
पुव्वअभिलाखतुझअंगेकिया। शुद्धशीलचारित्रमनभया१५२७
कालांतर सो वाला मुई। तिलकपुर पाटण उपनई ॥
भवसाणरूवा प्रगटी संसार। परणावि वलभा तुझ कुमार१५२८
तिल मित कृत सेना भरतार। सोइ हुवा वधुदत्त कुमार ॥
पूर्व विरोध उदे दुख दिया। धन तियं ले तुझ छोडत भया१५२९

१-पति २-स्त्री।

जो नंदामित्र परीतम होय । सो अच्यु स्वर्ग हुवा सुरलोय ॥
जिन सुर पंकति लिखी सुजान । जिन विमाण चढाया आन१५३०
कोसी तपसी तप कर मुवा । असन वेग सो दानो हुवा ॥
पाणिग्रहण कन्या का किया । तिलकपुर पट्टण सोभै दिया१५३१
सुने भवंतर भविस कुमार । मन भयभीत हुवा संसार ॥
कंपा अंग थरहरा जु हिया । मुनिवर वचन वैराग जु किया१५३२

॥ प्राकृत गाथा ॥

परमानंद सरोवरहं । जे मुणिवर करहि पवेसु ॥
अमिय महा रसुते पिवहि । गुरु सामिहि उपदेसु १५३३
परमप्पउ जो झावहि । सो सच्चु विवहार ॥
समि कुबोधह वाहिरउ । कण विणु गहि पयाल१५३४

॥ दोहा ॥

मुनिवर बच भविसहु सुने । सकल भवंतर सार ॥
संसारे भयभीत व्है । वीसम संधि विचार ॥ १५३५ ॥

इतिश्री भाविसदत्त मुनीश्वर से भव पूछन सकल भव सुनन
संसार से विरक्त भाव करन वर्णन बनवारी कृत बीसमा
अधिकार संपूर्णम् ॥ २० ॥



२१ अधिकार

॥ दोहा ॥

चंदपहुप जिन पय नमों । बनवारी शिरनाय ॥
राजविभूति भविसह तजी । शारद करों पसाय १५३६

१५ मात्रा चौपाई ॥

भविसदत्त बोला जु कुमार । स्वामी यह संसार असार ।
भवसमुद्र अन्त नहिं कोय । ज्ञानदृष्टि जो देखै जोय १५३७
आवै जाय बहुत दुख सहै । जम्मन मरण तनै दुख लहै ॥
किनहिपुत्रकिनहीघरवास । किसकास्वामीकिसकादास१५३८
दिवसचारका मेला होय । छोड़ै जीव जाय परलोय ॥
जोवनजराग्रसैजब आय । अंगोपांग शिथिल व्है जाय१५३९

॥ श्लोक ॥

एक वृक्ष समारूढाः । नाना पक्षी विहंगमा ॥
प्रभाते दिशि दिशि जाता । तत्रकाले प्रवेदना १५४०

॥ सोरठा ॥

काको सुत को मीत । कोई न काहू को सगो ॥
ज्यों तरुवर के पात । कहीं कहीं उड़ जायंगे १५४१

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

विषयनि सों तृपती नहिं होय । भोग जो भोगै इंद्रसुर लोय ॥
नंदमित्र संजम सो लिया । देवलोकमें रिध को भया १५४२
अब हम संजम धरसीं भार । करतप चरण तिरैं संसार ॥

आज विभूति तजौंहों राज । मुक्तिपुरीका भुंजों राज१५४३

॥ प्राकृत गाथा ॥

माइ बाप कुल जाति विणु । णाउं तसु रोष ण रागु ॥
सभि कुदीठीहि जाणियइ । सदगुरु करइ सहाउ १५४४
महि साधाहि रमणी रमहिं । जे चक्कवहि वहोहि ।
णाण वलेण जितेवि मुणि । सिव पुरिनिय होहि ॥१५४५॥
सदगुरू तूंठे पाइये । मुक्ति तिया घर वासु ॥
सो गुरु नित नित ध्याइयइ । जवलगु हिये उसासु १५४५
गुरु जिनवर गुरु सिद्ध सिउ । गुरु रयण तिय सार ॥
जो दरि सावइ अप्प परु । आणंदा भव जल पावहि पारु१५४७
सपर गंधरस वाहिरउ । रूव विहूणउ सोइ ॥
जीव शरीरह भिणकरि । सदगुरु जाणइ कोइ १५४८

॥ दोहा ॥

नरक पडते उद्धरो, स्वामी होहु सहाय
दिक्षा प्रसाद हमपे करो, जिम जीउ शिवा ले
परसों संग कहा कियो, परतें आश्रव
संवर परको परिहरै, विरला बूझै कोय
पर संयोगे वंध है, पर वियोग तें
चेतन परहि मिलै तुमै, लागत है सब ५
अपनोई अपनो भलो, अपनों पर नाहिं
कोयल काग जु पोखिये, काग न

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

पुव्व होतो धनमित्त वणिवाल । विजलीमार किया खे कालू ॥
अब जो ऐसा मरणभि होय । तोजन्मनरभौ अहिला सोय१५५३
कमलश्री बैठी जो सुजान । जीव दयावर पुन्य परधान ॥
मुनिवर बचनसुने घरनार । चित्त वैराग न हुई अपार१५५४
जान्या यह्व संसार असार । हंडत जीव न पावे पार ॥
चित संवेग धरा वैराग । राजभोग का कीया त्याग १५५५
भवसणरूवा बैठी विलास । सुने भवंतर मुनिवर पास ॥
भविस नरिंद मुख देखत भई । वैरागी देख विहलघणगई१५५६
धनजोवन जाना जु असार । धुवा धवलहरि पुत्त परवार ॥
लीजे संजम कीजे जोग । विषे संग नहिं कीजे भोग १५५७

॥ दोहा ॥

जैसी चेतन तुम करी, ऐसी करै न कोय ॥
विषे सुखन के कारने, बैठे सर्वस्व खोय १५५८

१५ मात्रा चौपाई ॥

तो सुंदर मन चिंता जान । जे संजम अवलेइ सुजान ।
तो हम भी संजम आदरें । कर्म काटि संसारे तिरें १५५९
भविसदत्त उठि ठाढा हुवा । नमस्कार कर घर तब गया ॥
कणयसिंहासन बैठा जाय । चौरंगदलबल लिया बुलाय १५६०
आया धनवै सेठ सुजान । हरि बलराय आया परधान ॥
नानी लाछी खरी पियार । सो परिवार आई बरनार १५६१
सब परिवार एकठा हुवा । लाय सन्मान रायनें किया
दारा पेषण करै सु नरिंद । बिमल बुद्धि आयासो मुनिन्द१५६२

आज विभूति तजौंहौं राज। मुक्तिपुरीका भुंजौं राज१५४३

॥ प्राकृत गाथा ॥

माइ बाप कुल जाति विणु। णाउं तसु रोप ण रागु ॥
सभि कुदीट्ठीहि जाणियइ। सदगुरु करइ सहाउ १५४४
महि साधाहि रमणी रमहि। जे चक्कवाहि वहोहि।
णाण वलेण जितेवि मुणि। सिव पुरिनिय होहि ॥१५४५॥
सदगुरु तूंठे पाइये। मुक्ति तिया घर वासु ॥
सो गुरु नित नित ध्याइयइ। जवलगु हिये उसासु १५४५
गुरु जिनवर गुरु सिद्ध सिउ। गुरु रयण तिय सार ॥
जो दरि सावइ अप्प परु। आणंदा भव जल पावहि पारु१५४७
सपर गंधरस वाहिरउ। रूव विहूणउ सोइ ॥
जीव शरीरह भिणकरि। सदगुरु जाणइ कोइ १५४८

॥ दोहा ॥

नरक पडेते उद्धरो, स्वामी होहु सहाय ॥
दिक्षा प्रसाद हमपै करो, जिम जीउ शिवा ले जाय१५४९
परसों संग कहा कियो, परतें आश्रव होय ॥
संवर परको परिहरै, विरला बूझै कोय १५५०
पर संयोगे वंध है, पर वियोग तैं मोक्ष ॥
चेतन परहि मिलै तुमै, लागत है सब दोष १५५१
अपनोई अपनो भलो, अपनों पर नहिं कोय ॥
कोयल काग जु पोखिये, काग न कोयल होय १५५२

१ इसमें ।

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

पुव्व होतो धनमित्त वणिवाल । विजलीमार किया खे काल ॥
अब जो ऐसा मरणभि होय । तोजन्मनरभौ अहिला सोय१५५३
कमलश्री बैठी जो सुजान । जीव दयावर पुन्य परधान ॥
मुनिवर वचनसुने वरनार । चित्त वैराग न हुई अपार१५५४
जान्या यह संसार असार । हंढत जीव न पावे पार ॥
चित संवेग धरा वैराग । राजभोग का कीया त्याग १५५५
भवसणरूवा बैठी विलास । सुने भवंतर मुनिवर पास ॥
भविस नरिंद सुख देखत भई । वैरागी देख विहलधणगई१५५६
धनजोवन जाना जु असार । धुवा धवलहरि पुत्त परवार ॥
लीजे संजम कीजे जोग । विषे संग नहिं कीजे भोग १५५७

॥ दोहा ॥

जैसी चेतन तुम करी, ऐसी करै न कोय ॥
विषे सुखन के कारने, बैठे सर्वस्व खोय १५५८

१५ मात्रा चौपाई ॥

तो सुंदर मन चिंता जान । जै संजम अवलेइ सुजान ।
तो हम भी संजम आदरें । कर्म काटि संसारे तिरें १५५९
भविसदत्त उठि ठाढा हुवा । नमस्कार कर घर तब गया ॥
कणयसिंहासन बैठा जाय । चौरंगदलबल लिया बुलाय १५६०
आया धनवे सेठ सुजान । हरि बलराय आया परधान ॥
नानी लाछी खरी पियार । सो परिवार आई वरनार १५६१
सब परिवार एकठा हुवा । लाय सन्मान रायनें किया
द्वारा पेषण करे जु नरिंद । विमलबुद्धि आयासो मुनिन्द१५६

(अतिथि संविभागव्रत)

आहार वेला मध्यान समय प्रासुक जल लेकर उज्जल वस्त्र पहनकर शुद्ध आहार देय जो मुनि को अंतराय न हो ॥ सात घड़ी मध्यान समय द्वारा पेषण करै और भावना भावे और आवते मुनिको पड़िगा है और दान देय ॥ १५६३ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

मुनि पड़िगाह लिया जु बुलाय । दिया आहारसो मनवचकाय॥
पड़े पांय कणय पहुवीर । धरणिंद कुमार है साहसधीर १५६४
विनवे देहु मम दिक्षा दान । जीवन जनम करै परवान ॥
पाछे नरेंद्र रसोई गया । सो परिवार तिन भोजन किया १५६५
फुनि सो आया सभा मझार । जननी सेती किया जुहार ॥
मुनिवर वचन माय तैं सुने । पूर्व भवंतर जो उन भने १५६६
अरिपुर नगर होत वणिवाल । हों झडपा विजली से काल ॥
कोसितापसी क्रोध धर मुवा । असनवेग सोदानोहुवा १५६७
मंत्री बिजोयर खरा सुजान । रायजसोधर हुवा परमान ॥
तिलकपुरपाटणराज तिनकिया । असनवेग मारीसोगया१५६८
कृतसेना सुंदर सुविशाल । भवसणरूवा हुई सुकमाल ॥
गुणमाला मूई सो जान । भई सुमित्रा पुन्य प्रधान १५६९
[illegible]त्त पिता जो पूरव थया । धनवै सेठ तात हम भया ॥
[illegible]य लाच्छि जो होती माय । सो तुम कमलश्री जो विवाह१५७०
[illegible] वणिकहु होता माय । मारा विजुली गया पलाय ॥
तुझउर जननी उपजा आय । भविसदत्त नाम-सुझथाय १५७१

कीजेमाय अत्र पंडित मरण। जिनवर शरण लीजिये अवंन ॥
कमलश्री घर वोली ज्ञान। जो तुम बच्छे सो हमहि प्रमान१४७२

॥ दोहा ॥

सुपहु कुमर जुग राजिया। मनविचार किया राय ॥
भवसणरूव सुखसों अछे। पुत्रराज चिरथाय १३७३

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

भवसणरूव बात जब सुनी। सुंदर मनमें विलखी घनी ॥
तुम प्रसाद निश्चल सुख किया। कछु प्रसाद न मनमें रहा१५७४
गांव देश पट्टण सु विशाल। वसे देश कुरु जंगल झाल ॥
चित्त उदार है देश जु देय। सुझ मूदी विन कोई न लेय१५७५
अभैदान जिस दियो मैं राय। तिसको कोई न भय जु कराय ॥
मैं जु भई जगमें परधान। किनहि न मेटी मेरी आन१५७६॥
अव स्वामी पावज्या लेइ। मुक्तिश्री को पयाणा देइ ॥
पाछे तुहारे राज हम करैं। तो हम शोभ न जगमें धरैं१५७७॥
स्वामी संग प्रवेंज्या लेऊं। जन्म जरामृत पाणी देऊं ॥
करै राज धरनिंद कुमार। सुमता विलसो सुक्ख अपार१५७८
सुनि सुमिता वोली सो नार। हों गुणमाल अरिपुर मंझार ॥
दौ भव रही तिहारे पास। अब मुझको क्यों करो निरास१५७९
स्वामि परलोक विचारा काज। धरणिद पुत्त भुंजावै राज ॥
किमकर राखों हियाहुं सहार। विनस्वामी किहकारण नार१५८०
भविसदत्त बोला जु कुमार। हम प्रावृज्या है आधार ॥
संजम भार जो धरहि न सकैं। सो कुरुजंगल देशहि थकैं१५८१॥

१ अब २-पुत्र ३ दीक्षा ४-दीक्षा।

(अतिथि संविभागव्रत)

आहार बेला मध्यान समय प्रासुक जल लेकर उज्जल वस्त्र पहनकर शुद्ध आहार देय जो मुनि को अंतराय न हो ॥ सात घड़ी मध्यान समय द्वारा पेषण करै और भावना भावे और आवते मुनिको पड़िगा है और दान देय ॥ १५६३ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

मुनि पड़िगाह लिया जु बुलाय । दिया आहारसो मनवचकाय॥
पड़े पांय कणय पहुवीर। धरणिंद कुमार है साहसधीर १५६४
विनवे देहु मम दिक्षा दान । जीवन जनम करैं परवान ॥
पछे नरेंद्र रसोई गया । सो परिवार तिन भोजन किया १५६५
फुनि सो आया सभा मझार । जननी सेती किया जुहार ॥
मुनिवर वचन माय तैं सुने । पूर्व भवंतर जो उन भने १५६६
अरिपुर नगर होत वणिवाल। हों झडपा बिजली से काल ॥
कोसितापसी क्रोध धर मुवा । असनवेग सोदानोहुवा १५६७
मंत्री बिजोयर खरा सुजान । रायजसोधर हुवा परमान ॥
तिलकपुरपाटणराज तिनकिया । असनवेग मारीसोगया१५६८
कृतसेना सुंदर सुविशाल । भवसणरूवा हुई सुकमाल ॥
गुणमाला मूई सो जान । भई सुमित्रा पुन्य प्रधान १५६९
।८ग पिता जो पूरव थया । धनवे सेठ तात हम भया॥
लाच्छि जो होती माय । सो तुम कमलश्री जो विवाह१५७०
ि वणिकहु होता माय । मारा विजुली गया पलाय ॥
तुझउर जननी उपजा आय । भविसदत्त नाम सुझथाय १५७१

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

धरि संजम ले तिरै संसार । पुत्रजोग सौंप्या सब भार ॥
सुनी बात सुपट्ट जो विशाल । अंसु जलौली भया तत्काल१५९२
अवसाणकाल पवज्या लेइ । भार कुटंब सुत अपने देइ ॥
जे राजे तपचरणे गये । कुमरे राज देत सो भये१५९३॥
मुदा हिया नाहिं आवै स्वांस । विहलंघण बैठा जु उदास ॥
प्रतिउत्तर वो देत सो भया । अंगीकार राज नाहिं किया१५९४
भवसणरूवा बोली नार । स्वामी सुनो जु एक विचार ॥
राज जोग धरनिंद कुमार । सुमता कूखै उपना सार१५९५॥
राय भोपाल कुल दोहिता होय । आण न उसकी मेटै कोय ॥
तब धरनिंद बोला सतभाय । अनुगत बात कही तैं माय१५९६
जेठा भाई सुपट्ट कुमार । तात समान मुझ इत संसार ॥
इस होते जु राज हम करैं । अपजस का पड़हा किम धरैं१५९७
तब बोला सुपट्ट जो कुमार । सुनो बीर तुम एक विचार ॥
पिता राज मुझ दीना जान । मैं स्वीकार किया परमान १५९८
मैं धरनेंद जोग तुम दिया । करो राज आनंदे हिया ॥
मंतु तिहारा धरै कुमार । राज धुरंधर करो अपार ॥१५९९॥
पट्ट बंध धरनेंद्र को किया । नमस्कार सामंतो किया ॥
ढाले कलश उज्जल शसि चंद । कणय सिंहासन बैठा धनेंद१६००
भविस नरिंद खोले भंडार । हीरा पदारथ मोती लाल ॥
जैसा जैसा देखा लोग । दयारूप दीना तिन जोग ॥१६०१॥
कुंकुम चंदन अंग लगाइ । हेम सलिल अंकोलं कराइ ॥

१-टीका २-स्नान ।

सुनी वात सुमित्रा नारि । करे रुण झुण हिये मझा
अंसु जलौली हिया घवराय । कवन दुःख मुझ उपना आय१
तव नरिंद्र निवारी नार । पंच कुमार लिये हंका
तीनो पुत्री लई बुलाय । सहित जमाई बैठी आय१५
रायभौपाल जु आया कुमार । मिलि अंतेवर सों परिवा
धनवै सेठ अरु हरिवल राय । स्यों परिवार जु लीया बुलाय१
सुपहु कुमार बैठाल्या राय । सब विरतांत कहा समझाय
मैं चिंता परलोकहु काज । तुम बिलसो कुरुजंगल राज१५
मात सुमित्रा सेवा करो । धर्म ध्यान सो राज उद्धरो
तब बोला सुपहु जो कुमार । शीस धुनी धुन बोला सार १५
जिस सेवहि बहु मंडली राय । नरसुर खग सेवा जु कराय
परचंड दल सेवैं खंधार । मानैं आज्ञा राज कुमार१५८
सो नर वह प्रावज्या लेय । जन्म जरामृत को पानी देय
तिस पाछें जो राज हम करैं । किमकर शोभा जगमें धरैं१५
भविसदत्त बोला जु कुमार । भो सुपहु तू सुनहि विचार
पुत्र जन्म कीजे उच्छाह । हरपै हिया ऊपजे लाह१५८

॥ दोहा ॥

बड़े करे तुम थापियो । करत नीच के काम ।
परघर फिरत जु लघुभये । बहुत धराये नाम॥१५९०
अपनेही घर सब बड़े । परघर महिमा नाहिं ।
शिवके अरु भवके रहे । फेर कितो यहि माहिं॥१५९१

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

रे संजम ले तिरै संसार । पुत्रजोग सौंप्या सब भार ॥
ी बात सुपहू जो विशाल। अंसु जलौली भया तत्काल१५९२
वसाणकाल पवज्या लेइ । भार कुटंब सुत अपने देइ ॥
राजे तपचरणे गये । कुमरै राज देत सो भये१५९३॥
दा हिया नाहिं आवै स्वांस । विहलंघण बैठा जु उदास ॥
तिउत्तर वो देत सो भया । अंगीकार राज नहिं किया१५९४
वसणरूवा बोली नार । स्वामी सुनो जु एक विचार ॥
ज जोग धरनिंद कुमार । सुमता कूखे उपना सार१५९५॥
य भौपाल कुल दोहिता होय । आण न उसकी मेटै कोय ॥
ब धरनिंद बोला सतभाय । अजुगत बात कही तैं माय१५९६
जेठा भाई सुपहू कुमार । तात समान मुझ इत संसार ॥
हस होते जु राज हम करैं । अपजस का पड़हा किम धरैं१५९७
तब बोला सुपहू जो कुमार । सुनो वीर तुम एक विचार ॥
पिता राज मुझ दीना जान । मैं स्वीकार किया परमान १५९८
मैं धरनेंद जोग तुम दिया । करो राज आनंदे हिया ॥
मंतु तिहारा धेरै कुमार । राज धुरंधर करो अपार ॥१५९९॥
पट्ट[1] बंध धरनेंद्र को किया । नमस्कार सामंतो किया ॥
ढाले कलश उज्जल शसि चंद । कणय सिंहासन बैठा धर्नेंद१६००
भविस नरिंद खोले भंडार । हीरा पदारथ मोती लाल ॥
जैसा जैसा देखा लोग । दयारूप दीना तिन जोग ॥१६०१॥
कुंकुम चंदन अंग लगाइ । हेम सलिल अंकोल[2] कराइ ॥

---

१ टीका २-स्नान ।

माखियन चूंटि के मिठाइ जैसे भिनकी ।
एते पर होउना उदासि जगवासि नर
जगमें असाता कछु साता नाहिं छिनकी १६१९

॥ दोहा ॥

जिम भविस मुनि पूछिया, जाना सकल असार ॥
पंचमहाव्रत धारिया, इकसमी संधि बिचार १६२०

इतिश्री भविसदत्त नरिंद्र मुनि पूछन सकल असार जानन पंचमहाव्रत धारण वर्णन बनवारीकृत इक्कीसमा अधिकार संपूर्णम् ॥ २१ ॥



२२ अधिकार

॥ दोहा ॥

चंद पहुप जिन पय नमों । बनवारी शिर नाय ॥
देवलोक जिम संचरे । शारद करो पसाय ॥१६२१॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

भविसराय तप शरणे गये । गजपुरलोग विसमादे भये ॥
घर २ कामनि चिंता करें । अंसु जलोली नैनो भरें १६२२
हय तुरंग होते असवार । बीर सामंत हुते सब लार ॥
चमर गाहनी ढालें चमर । खर्ग नरिंद्र सेवें बहु अमर १६२३
धूलहि सूर न सूझे आय । अबसो नरिंद अकेलो जाय ॥
देखो यहु संसार असार । कठिन विरत धारी जु कुमार १६२४
रतनमई मंदिर आवास । कणय पिलंग सु परमल वास ॥
हंसतूल की सेज्या सार । मृगनैनी सेवें वर नार १६२५
अब किम इकला बनमें रहे । सोवे भूमि परीषा सहे ॥
गजपुर लोग रुण झुण अपार । रैन सवाई नींद न सार१६२६
चिंता करत होय परभात । ठौर २ सब आखें बात ॥
जिन जीता पोदनपुर राय । अनंतपाल भान्या भडिवाय१६२७
चित्रांगदूत का मान जु गला । अरि वैरी खै काले दला ॥
मनोवेग चढाया विमान । कांता दोहला किया परमाण१६२८
सुमरि २ गुण रुदन कराहिं । अंसु जलोली स्वांस भराहिं ॥

१-हाथी २ घोडा ३-विद्याधर ४-राजा ५ देवता ६-स्त्री ।

माखियन चूंटि के मिठाइ जैसे भिनकी ।
एते पर होउना उदासि जगवासि नर
जगमें असाता कहु साता नाहिं छिनकी १६१९

॥ दोहा ॥

जिम भविस मुनि पूछिया, जाना सकल असार ॥
पंचमहाव्रत धारिया, इकसमी संधि बिचार १६२०

इतिश्री भविसदश नरिंद्र मुनि पूछन सकल असार जानन पंचमहाव्रत धारण वर्णन बनवारीकृत इकीसवा अधिकार संपूर्णम् ॥ २१ ॥

२२ अधिकार

॥ दोहा ॥

द पहुप जिन पय नमों । वनवारी शिर नाय ॥
लोक जिम संचरे । शारद करो पसाय ॥१६२१॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

य तप शरणे गये । गजपुरलोग विसमादे भये ॥
कामनि चिंता करें । असु जलौली नैनो भरें १६२२
ुरंगे होते असवार । वीर सामंत हुते सब लार ॥
गाहनी ढालें चमर । खगं नरिंद्र सेवें बहु अमर १६२३
हे सुर न सूझे आय । अबसो नरिंद अकेलो जाय ॥
ा यहु संसार असार । कठिन विरत धारी जु कुमार १६२४
नमई मंदिर आवास । कणय पिलंग सु परमल वास ॥
तूल की सेज्या सार । मृगनैनी सेवें वर नार १६२५
व किम इकला बनमें रहे । सोवै भूमि परीषा सहे ॥
जपुर लोग रुण झुण अपार । रैन सवाई नींद न सार१६२६
चिंता करत होय परभात । ठौर २ सब आखें वात ॥
जिन जीता पोदनपुर राय । अनंतपाल मान्या भडिवाय१६२७
चित्रांगदूत का मान जु गला । अरि वैरी लै काले दला ॥
मनोवेग चढाया विमान । कांतां दोहला किया परमाण१६२८
सुमरि २ गुण रुदन करांहि । अंसु जलौली स्वांस भरांहि ॥

१-हाथी २ घोडा ३-विद्याधर ४-राजा ५ देवता ६ ...

सुमता गुण सुमरै भरतार । कंदै निंदै आप कुमार १६
नाह २ विनवै वरनार । भर जोवन छांडी निरधा
भवसणरूव छोड़ मुझ गई । हों अकेली दुखिया भई १६
कमलश्री सासु जो सुजान । छांड गई मुझ पुन्य प्रधान
धिगधिगकारमुझजीवनभया।विनप्रीतमहमदुखवहुसहा १६
धनवै सेठ सो मंदिर जाय । बिन पतनी विसमादा थाय
सूनि सेज तिन देखी जाय । गहभर हीया कछु न सुहाय१६
हिरदे दाह ऊपना घना । निंदै आया कंदै तना
हीन पुन्य तप करविन सक्या । निज मंदिरएकेलाथक्या१६
धन बिरती तिन होई सुजान । तपले किया जनम परमान
हरिदत्त बिसूरे झुरवै लाछि । कमलश्री हा गई वनवासि१३
राय भौपाल खरा बिललाय । अंसु जलौली नैन भराय
भविसनरिंद गया तपचरण । हमपापी जु रहे निजभवन१६
सुपह्व घरणि अरु सुत परिवार । तारा सुतारा सुता कुमार
मात पिता गुणसुमिरैं जान । गये तपचरण पुन्य परधान१६
सुपह्व समाधा परियण आय । गजपुर लोग समोध्या जाय
छोड़ी चिंता रहैई सार । सब कोइ लाग्या घर व्यापार१६

॥ दोहा ॥

भविस मुनिंद तपऊ धरा, किया जनम परमान ॥
घोर वीर तप आचरा । होसी सुर है मिलान१६२८,

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

कमलश्री तप किया संभास । अंतकाल मूई सन्यास

(सलेखना व्रत)

अन्तकाले सन्यासं करोति ॥ दर्शन ज्ञान चरित्र तप चत्वारी आराधनं चारों आहार त्यागगं करोति ॥ सर्वजीव से मैत्री भाव करोती ॥ शुभ परिणाम राखे ॥ इति अंत सल्लेषण॥१६४०

॥ प्राकृत गाथा ॥

जाप जप बहुतउ तवइं । तो विण कम्मुहणेइ ।
इक समऊ अप्पउ मुणेइ । चउ गइ पाणिउ देइ॥१६४१॥
सो अप्पामुणि जीवतुहु । अह करि परहारु ।
सहज समाधि जाणि यह । जे जिण सासन सारु॥१६४२॥
अप्पा संजमु शील गुण । अप्पउ दंशणु णाणु ।
बउ तउ संजमु देव गुरु । अप्पा पहु निरवाणु॥१६४३॥
आदि अनादि भमंत यह । दुक्खुजि पत्तु महंतु
इव जिय संवरु जइ करहि । पावहि मोक्खु महंतु ।१६४४॥
इय संसार भमंतुजीय । जम्मुणु मरणु विहोइ ।
कम्मह बंधो जीव तुहं । रहै निचितो सोइ ॥१६४५॥
अहो जिय पौरिषु जइ करहि । नासइ कम्मु पलाइ ।
चारिउं गति तुं छोड़ि करि । मुकति रमणि करि लाइ१६४६॥

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

भवसणल्या दुद्धर तप किया । अभैदान सव जीवन दिया ॥
कर तप चरण मुई सो वाल । दशमें स्वर्ग ऊपनी साल१६४७॥
विनेउ ऊपजे एक विमान । बिनवि महारिद्ध कहू सुजान ॥

१ दोनो ।

सोलह आभरण साज कुमार । सुरग सुक्ख भोगवै अपार१६४८॥
पुव्व भवंतर सुमिरत भये । बात परस्पर कहते भये ॥
हों कमलश्री धणवै घर सार । तुम भवसाणरूवा सुतनार१६४९॥
भविसदत्त तप किया सुजान । पंडित मरण किया परमाण ॥
दशमे स्वर्ग पहूंचा जाय । कणय केतु सुर नाम बिहाय१६५०॥
तीनों बैठि किया जु बिचार । पुव्व भवंतर सुमिरे सार ॥
भविसदत्त तू होता नरिंद । गजपुर राज करै शुभचंद१६५१॥
हूं कमलश्री तुझ माता तनी । ये भवसाणरूवा भामिनी ॥
विमलबुद्धिमुनिवर जु सुजान । दीनीदीक्षा हम परमान१६५२
कर तप चरण सो कर्म खपाय । तब हम स्वर्ग ऊपने आय ॥
कणंयतेज यौवन सोभया । तुम तपचरणकियाअतिघना१६५३
तुम व्यापार लाभ अति हुवा । तियपद छोड़ि पुरुष सुर हुवा ॥
एक विमाणे ऊपने आय । हम तुम पाछे मिले सुभाय १६५४
सुपह्न कुमार राज तहं करै । सुमिता नारि सुक्ख आचरै ॥
तिनको आज समोधैं जाय । सुरविभव जु दिखावैं आय१६५५
तिनिविं सुर वै चढ़े बिमान । सुर रमणी लाई जु मिलान ॥
गजपुरमाहीं आवत भये । पुरजन देख अचंभे थये १६५६
जो तप चरण करै संसार । सुख सुर रमणी भुंजै नार ॥
कमलश्री यहु भविस कुमार । यहु भवसाणरूवा है नार १६५७
मिलि परियण सब पूजा करी । करि पूजा सेवा उरधरी ।
तिनवी सुर बैठे सो जाय । सब परिवार लिया बोलाय१६५८
बैठा धनवै सेठ सुजान । हरिबल राजा आय मिलान ॥

राय भौपाल सु बैठा आय । तिनवी अखी बात समझाय १६५
कोइ न मानैं तिनका कहा । दीरघ जग तिस पोतें रहा
झुनि गये तिलाकपुरी मझार । चंद्रपहुप पूजा जैकार १६

॥ प्राकृत गाथा ॥

अरिहंतो असमत्थो । तारण लोइ दीरघ संसारी ॥
मग्गेदित्तो कुशलो । ते तिरंते जमगे लगो १६६१

॥ दोहा ॥

पुत्तकलत्त धनराज रिधि, जीव पाय बहुवार ॥
सांचो सुगुरु न भेटियो, किम पावै भवपार १६६२
पुन्यहि शिव सुख पाइये, लाभै भोग बिलास ॥
पुन्य विहूणे जीव तू, भव भव भयो निरास१६६३
दर्शन ज्ञान चरित्र मे, बस्तु बसै घट माहिं ॥
मूर्ख मरम नहिं जानही । बाहर खोजन जाहिं १६
पुहपन विषै सुवास जो, तिलन विषै ज्यूं तेल ॥
त्यों तुम घटमें रहत हो, जिन जानों यह खेल १६
दर्शन ज्ञान चरित्र के, ग्रहिये बस्तु प्रमान ॥
पीरो भारो चीकनों, ज्यों कंचन पहिचान १६६६
दर्शन बस्तु जु देखिये, और जान ये ज्ञान ॥
चरन सुरह निज तिहुं विषय, तिहूं मिलै निर्वान १६

॥ १५ मात्रा चौपाई ॥

रति मंदिर देखत सो भये । पुव्व भवांतर बिलस जो गये
असनवेगपूजा सुरसार । सो पट्टण जिन दीनी नार १६

१ पुष्प २-सुवर्ण ।

मानभद्र भेटा सुर आय । पंकति लिखि जिन मंदिर आय ॥
मनुवेग सु अंकभर लिया । कांता दुहिला पूरा किया १६६९
देवलोक फुनि गये कुमार । भोग भोगवैं सुक्ख अपार ॥
सागरबंध सो काल बिहाय । सुर रमणी सों गया पगाय १६७०
फुनि गये गजपुर मंझार । पूछी बात सुपहु जो कुमार ॥
तिनका नाम न जानै कोय । सुनकर सुर जो अचंभेहोय १६७१
जाना यहु संसार असार । देखो कर्म तना बिवहार ॥
हमहुराज गजपुर में किया । अभैदान सब लोगां दिया १६७२
कोइ न जानै नाम हम तना । नहिं संतान कोई आपना ॥
धिक धिक्कार किया संसार । सुरग लोकतैं गये कुमार १६७३
सोलह सागर आयु प्रमान । ते सब भुगती पुन्य प्रधान ।
कंठ माल देखी कुमिलाय । सांसा चित्त ऊपना आय १६७४
हा सुर रमणी छंडसि नार । हा पुन जासी गर्भ मझार ॥
कमलश्री यहु चूलै चया । गंधर्व चकवै नंदन भया १६७५
नाम वसुंधर भया कुमार । रूपवन्त गुण लक्षण सार ॥
कणयकेतु अरु चूल सुजान । दोनों सुरगै चये वीमान १६७६
वसुंधरा घर नंदन भये । वद्दण श्री वद्दन तिस जये ॥
बहुतक दिन गये राज करंत । धनजोवनेविभवे बिलसंत १६७७
राय वसुंधर तपको गया । विनावि पुत्र को राज सु दिया ॥
श्रीधर मुनिपै दीक्षा धरी । उत्तम क्षमा संसारैं करी १६७८
घोरवीर तप किया सुजान । पंचम केवलि पाया ज्ञान ॥
मुकतिश्रीका बल्लभ हुवा । सुक्ख स्वासता तिसको जया १६७९
दोनो पूत राज बहु करैं । मनमें शंक संसारे धरैं ॥

एक दिवस वन क्रीडा गये। दोनों वीर वनमाहीं रहे १६८०
देखा मृगला क्रीड करंत। बहु परिवार जु संग भमंत॥
पारधिवाण सु मूक्या जाय। छेदा मिरग खरा बिललाय१६८१
दोनों वीर तिस देखत भये। भयभीता संसार थये॥
मृग मिरगी सों क्रीडा करैं। बहु उछाह मन अपने धरैं १६८२
लागा बाण बिहलंधण गया। सो हिरणा सुख चिंतत मुया॥
देखो यहु संसार असार। धन जोवन अरु पुत्त परिवार१६८३
अंतकाल जब पहुंचे आय। कोइ न होवै जीव सहाय॥
स्वारथ बंधी यहु परिवार। बिना स्वार्थ नहिं कोई सार १६८४
गुरु समीप हम दीक्षा लेंय। जनम जरामृत पाणी देंय॥
दोनों वीर गये मुनि पास। ले दीक्षा कीया संन्यास १६८५
पंच महाव्रत दुद्धर लिये। घोर वीर तप चरणै गये॥
पंचम केवल पाया ज्ञान। स्वामता सुक्ख लहा परमान१६८६

॥ सोरठा ॥

पुर्व उदय संबंध। बिषै भोगवै समकिती॥
करै न न्यूतन बंध। महिमा ज्ञान वैराग की १६८७

॥ दोहा ॥

थिति पूरण कर जो करम, खिरैं बंध पदभान॥
हंसै अंस उज्जल करै, मोक्ष तत्व सो जान १६८८

१५ मात्रा चौपाई॥

सुरत पंचमी सुखकी खान। मनवचकाय जो करै बिधान॥

१-हरण २ सदीव ३-जीव ४ प्रदेश।

दुःख विना सुख संपति होय । मनवांछित सुख पावै सोय१६८९
कल्प वृक्ष कहिये संसार । कामधेनु कहिये जु अपार ॥
चिंतामणि रतन है सोय । अनंघ रिद्धि कहिये इस लोय१६९०
पहिले धणय लाछि विधि लई । दूजे कमलश्री सो जई ॥
त्रिभव चूल देव सो भया । तियलिंग छेद उत्तम सुरजया१६९१
चौथे राज वसंधरु भया । कर तप चरण शिवाले गया ॥
धनमित्त व्रत कीये सोसार । दूजे भव भया भविस कुमार१६९२
तीजे कणय तेज सुर भया । चय विमाण नंद वट्टण थया ॥
धर संजम जु उपाया ज्ञान । स्वासता सुक्ख लहा परमान१६९३
कृत सेना व्रत कीया जान । हुइ भवसणरूवा परधान ॥
त्रिभव रैणचूल सुर भया । चय विमाण श्रीवट्टण थया१६९४॥
मुनि पास लिया संजम भार । काटे कर्म किये सब छार ॥
उपना ज्ञान तिमिर सब गया । मुकतिश्री का वल्लभ भया१६९५
जो नर नारी करैं विधाम । मन वांछित सुख पावै ज्ञान ॥
सत अठ उपवास करेजे काय । पहिले सुख भुंजे सुर लोय१६९६॥
फुनि नरेंद्र हो भुंजे राज । ले संजम करै आतम काज ॥
कर तप चरण उपावै ज्ञान । लोकालोक लहै परमान१६९७॥
पाछे मोक्ष पहुंचे जाय । मुक्तिश्री का वल्लभ थाय ॥
बनवारि भाषै धरि ज्ञान । जिन चैत्याले खतौली सुथान१६९८
माखनपुर जु बसै सुखवास । ठई चौपइ मनधरि उल्लास ॥
मनमें ऐसी चितवन भई । तो यहु सुगम चौपाई ठई१६९९॥
भाई भ्रग्रहमल सु पियार । जेहूं भूल्या लेहु सुधार ॥

१-स्थिर ।

मैं ओछी बुद्धि कीया जान । बुद्ध अपनी का ले परमान१७००
हांसि करो मति पंडित लोग । जे अपशब्द समारण जोग ॥
संवत सोलासै हो गये । छ्यासठ अधिक जु ऊपर भये१७०१॥
शुभ फागुण नौमी तिथि जान । स्वाति नक्षत्र भृगू[1] शुभ मान ॥
माखनपुर बसई सुखवास । ठई चौपाई मन उल्हास१७०२॥
जो नर पढैं पढावें जान । मन धर भाव सुनैं जो ज्ञान ॥
उपजे पुन्य पाप सब जाय । रिद्धि वृद्धि बहु मंगल ठाय१७०३॥
जो नर नारी सुनैं चित्त लाय । मन बांछित सुख उपजै आय ॥
स्वर्ग मुकति पहुंचे तत्काल । व्रत संयम सीझैं सब काज१७०४

॥ दोहा ॥

ज्यों भविसदत्त संयम लिया । उपजा सुरहु मिलान ॥
फिर पद लहा निर्वाण का । बाइस संधि प्रधान॥१७०५॥

इतिश्री भविसदत्त संयम ग्रहण दशम स्वर्ग तृतीय जीव जावन पुन भव लेन निर्वाण गमन वर्णन बनवारी कृत बाईसवां अधिकार सपूर्णम् ॥२२॥

इतिश्री भविसदत्त चरित्रे धनपा पंडितेन संस्कृते निर्मिते तदुत्तरे बनवारी कृता भाषा (छंद बद्ध) सम्पूर्तिमगात ॥



---

१ शुक्रवार ।